२૫ષામ ૨૨૨૯- ૫૪૭શ વ્૨યપ્હ્શ્

' વ્દિહ' ૧૯૨ મ શ્ંક ૧૫ દસિમ્વ૧ ૨૦૧૫ (વ્૧્ષ ૮ માસ ૯૬ શ્ંક ૧૯૨)

ए શ્ંકમે શ્છ઼િ-

૧સંપાદકીય સંદેશ

૨ ગદ્ય

૨.૧ ૬ૅ૦ વ્દ્યિાનાથ હ્ા- ૐગ્ા વીમાનીક મ્યાવ્ઠ પ્૧ાદ઼િશ્ય ૨ૂ઼ઽ઼ ગાછ (૩પ્ન્યાસ) - ળગદીશ પ્૧સાદ મ્ાલ્ઞ્૬ઊ

૨.૨ ળગદીશ પ્૧સાદ મ્ાલ્ઞ્૬ઊક દૂટા ઊઘુ કથા- નનિયિ દેવીક શ્ાનાયના પ્યસૈન ગાછ ૨ મૈથિળીક કછ઼િ સમકાળીન ૩પન્યાસક વ્વિધિ સ્વ્૧૫- ૧ઠન હ્ા

૨.૩ કામનિી કામાયની- ઊઘુકથા-માગમંતી ૨ઊઊન કુમા૧ કામત- કછ઼િ વ્હ્નિ શ્ા ઊઘુ કથા

૨.૪ ૧ાળદેવ્ મ્ાલ્ઞ્૬ઊ- ળઊ ઑવ્૧ (૩પન્યાસ) ૨.૫ ૩મેશ મ્ાલ્ઞ્૬ઊ- એકટા વ્હ્નિ કથા- ૨.૬ મુ઼૬નક મુ૧ ૩.૭ શ્ાશીષ શ્નચ્ન્હા૧- વ્૧મ્હ્પશિાચ (વ્યંગ્ય)

૩ પદ્ય

૩.૧ શ્ાશીષ શ્નચ્ન્હા૧- ૨ ટા ગળઊ

૩.૨ ૬ૅ૦ **શશધિ૧ કુમા૧ "વ્દિહ"**- ૬ કી મેઊ ! ?! ?! છઽિ ગીત - ૧ છઽિ ગીત - ૨ ઊપ્કક ળનિગીક છન્દ ઊપ્કક ળનિગીક છન્દ

૩.૩ શ્સ૧શ્ ના૨ન- પ૧દેશી મનક મ્ાવ્ના ૨.શ્ોમપ્૧કાશ હ્ા- ગળઊ

૩.૪ ૧વ્ૉ જૂ઼ષ્ાાલ પાઽક

૩.૫ પઊઊવ્ી મ્ાલ્ઞ્૬ઊ- શ્પન નળૌનકિ દુનયિાઁ





विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

१-पत्र

'विशेषांक'क (१९१म अंक) आयोजनक लेल समस्त विदेह परिवारकें धन्यवाद।

भाइ जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिकेँ उल्लेख केलन्हि से ठीक लागल ठीक लागल, तकर प्रमाण अछि जे हम त्रुटि सभकेँ दूर करबाक निश्चय केलहुँ। आशीष अनचिन्हार जी व्याकरण-सामग्री उपलब्ध करौलन्हि। १० -१२ दिन समय लगौलहुँ। दोष-मुक्त हमर लक्ष्य अछि। 'संशोधित गाछ-गंगा' उपलब्ध करा रहल छी। हम चाहब जे 'मनु' जी देखथि, आर कियो देखथि। हमरा कहथि। हमरा ठीक लागत। कतहु कोनो त्रुटि रहि गेल हेतै त हम स्वेर सुधार करब।

डा.अजीत मिश्रजी जाहि दोष दिसि ध्यान दिऐलन्हि अछि से लगैत अछि जे नेट पर जे प्रति (तीनू अंगनामे) उपलब्ध छै ताहिमे छै। मूल पोथीमे ओ दोष नै छै।

भाइ केदार कानन 'गीत गंगा' पर चर्चा करैत जे अपेक्षा केलन्हि अछि से किछु दूर धरि 'गाछ गंगा' मे आएल अछि।

भाइ अरविन्द ठाकुरक आलेख विस्तृत आ विद्वतापूर्ण छनि। हम देखि रहल छी आ ओहिपर विचार क' रहल छी।

दीर्घ कविता 'चानक ओइ पार'पर आशीष अनचिन्हारजीक आलोचनामे नवीनता अछि।

प्रो.गंगा नन्द झाक संस्मरण आ 'गीत गंगा'पर आदरणीय श्री छत्रानंद सिंह झा आ डा.अमर नाथ ठाकुरक समीक्षा आलोचनामे बेसी आत्मीयताक अनुभव भेल।

'गीत गंगा'पर कामिनीजी आ परमानन्द प्रभाकरजीक समीक्षा-आलोचना आ 'गाछ गंगा'पर बाल मुकुंद पाठकजीक आलेखसँ आनंदित भेलहुँ। डा.शशिधर कुमरक आलेखमे उत्साह आ मैथिलीमे लेखनक प्रति प्रतिबद्धता झलकैत अछि, से प्रशंसनीय अछि। सभ रचनाकार सहित समस्त 'विदेह'परिवारकेँ एहि आयोजनक लेल धन्यवाद ज्ञापित करैत हमरा हर्ष भ' रहल अछि।

- जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (सखारी पेटारी- लघु कथा संग्रह)
२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (नै धारैए- बाल उपन्यास)
२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (अनचिन्हार आखर- गजल संग्रह)
२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (पाखलो- तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार – श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "देवीजी" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "बेटीक अपमान आ छीनरदेवी" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "निश्तुकी" (कविता संग्रह) लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "मोहनदास" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश) क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

विदेह_१५_०६_२००८पढ़ू विदेह_१५_०६_२००८_तिरहुतापढ़ू १२पढ़ू

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

विदेह_०१_११_२००८पढ़ू विदेह_०१_११_२००८_तिरहुतापढ़ू २१पढ़ू

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

विदेह_०१_१०_२०१० विदेह_०१_१०_२०१०_तिरहुता ६७

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

विदेह_१५_११_२०१० विदेह_१५_११_२०१०_तिरहुता ७०

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

विदेह_१५_१२_२०१० विदेह_१५_१२_२०१०_तिरहुता ७२

६) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

विदेह_०१_०८_२०१२ विदेह_०१_०८_२०१२_तिरहुता १११

७) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

विदेह_१५_०३_२०१३ विदेह_१५_०३_२०१३_तिरहुता १२६

८) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

विदेह_१५_११_२०१३ विदेह_१५_११_२०१३_तिरहुता १४२

९) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

विदेह_०१_०१_२०१५

१०) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

विदेह_०१_११_२०१५

११) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

વ઼િદેહ_૦૧_૧૨_૨૦૧૫

વ઼િદેહ ઈ-પત્રિકાક બીછલ નચણાક સંગ- મૈથિલીક સન્વશ્રેષ્ઠ નચણાક એકટા સમાનાન્તન સંકલન

વ઼િદેહ:સદેહ:૨ (મૈથિલી પ્નબન્ધ-નિબન્ધ-સમાલોચના ૨૦૦૯-૧૦)

વ઼િદેહ:સદેહ:૩ (મૈથિલી પદ્ય ૨૦૦૯-૧૦)

વ઼િદેહ:સદેહ:૪ (મૈથિલી કથા ૨૦૦૯-૧૦)

વ઼િદેહ મૈથિલી વ઼િહનિ કિથા [વ઼િદેહ સદેહ ૫]

વ઼િદેહ મૈથિલી લઘુકથા [વ઼િદેહ સદેહ ૬]

વ઼િદેહ મૈથિલી પદ્ય [વ઼િદેહ સદેહ ૭]

વ઼િદેહ મૈથિલી નાટ્ય ઉત્સવ [વ઼િદેહ સદેહ ૮]

વ઼િદેહ મૈથિલી શિશુ ઉત્સવ [વ઼િદેહ સદેહ ૯]

વ઼િદેહ મૈથિલી પ્નબન્ધ-નિબન્ધ-સમાલોચના [વ઼િદેહ સદેહ ૧૦]

માતિહલિ બીોકસ યાન વે દૌનલોદેદ ફ્નોમ:
હાતપસ:સાતિસગોોગલેયોમ઼ાવ઼િદેહાયોમ઼વ઼િદેહા-પોતહ઼િ

માતિહલિ બીોકસ યાન વે પુનયહાસેદ ફ્નોમ:
હાતપ઼ાીીમાઝોન઼નિ
ઢોન તહે ફ્નિસત તમિ માતિહલિ વીોકસ યાન વે નાદ ોન કનિદલે -નાદેનસ઼ મુય માતિહલિ બીોકસ નિ ખનિદલે ફોનમાત (યુનોતેસય વ઼િદેહા) ફ્નોમ ીમાઝોન કનિદલે સતોનેસ, તહેસે વીોકસ ીને દેલિવ઼ેનેદ ીનલદીદિ ીનિલેસસલય:-
હાતપ઼ાીીમાઝોન઼યોમ઼

શ્નપન મંતવ્ય ગગાળેનદ્નાવ઼િદેહાયોમ પન પઠાઉ।

ગજેન્દ્ન ઠાકુન

ગગાળેનદ્નાવ઼િદેહાયોમ

<u>२.१६य</u>

<u>२.११ ડૉ० વદ્િયાનાથ ઙા- ઙેંગૂ વીમાનીક મયાવહ પ્રાદ્િશ્ય ૨.૬૬ ગાછ (ઉપન્યાસ) - જગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલ</u>

<u>૨.૨૧ જગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલક દૂટા લઘુ કથા- નનિયા દેવીક આશયણ પસૈત ગાછ ૨ મૈથિલીક કછિ સમકાલીન ઉપન્યાસક વિવિધ સ્વરૂપ- રાજ ઙા</u>

<u>૨.૩૧ કામનિી કામાયની- લઘુકથા-ભાગમંતી ૨.૦૦૯ કુમાર કામત- કછિ વહિનિ આ લઘુ કથા</u>

<u>૨.૪૧ રાજદેવ મણ્ડલ- જલ ભૌંર (ઉપન્યાસ) ૨.૩ઉમેશ મણ્ડલ- એકટા વહિન કથા- મુણ્ઙક મુર ૩ આશીષ અનચિન્હાર- વ્યાઙ્ગપશિચ (વ્યંગ્ય)</u>

૧ ડૉ० વદ્િયાનાથ ઙા- ઙેંગૂ વીમાનીક મયાવહ પ્રાદ્િશ્ય ૨.૬૬ ગાછ (ઉપન્યાસ) - જગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલ

૧

ઙેંગૂ વીમાનીક મયાવહ પ્રાદ્ૃશ્ય
ડૉ० વદ્િયાનાથ ઙા
પ્રયાણાચાર્ય, એમ०આર०એમ० કૉલેજ, દરમંગા

ભારત મે ઙેંગૂ વીમાની એહિ વેર વર્ષ ૨૦૧૫ મે એક મયાવહ રૂપ લ' લેલક અછિ। દલ્િલી મે અવનિાષ રાઉત નામક એક સ્કૂલી વચ્ચાક એહિ રોગ સઁ આક્રાન્ત ભ' પાઁચ-પાઁચ અસ્પતાલ મે ભર્તી હેતુ વૌઅયવાક વ્ૃતાન્ત અખવાર સભ મે છપલ। સમય પર ભર્તી નહિ ભ' સકલાક કારણે અન્તત: ઓકર મ્ૃત્યુ ભ' ગેલ। વેટાક અન્તમિ સંસ્કાર ભેલાક વાદ ઓકર માય-વાપ વહુમંજલિા ભવન સઁ કૂદિ ક' અપન પ્રાણ્ત્યાગ ક' દેલનિ કિએક ત' પુત્રક મ્ૃત્યુ અસહ્ય ભ' ગેલનિ। આમજન કેં સ્વાસ્થ્ય સુવિધા ઉપલવ્ધ નહિ ભેલાક ઈ એક વાનગી અછિ। સમ્પ્રતિ હજારો હજાર લોક દલ્િલી સહિત સમ્પૂર્ણ દેષ મે એહિ રોગ સઁ આક્રાન્ત ભ' અસ્પતાલ સભ મે પડલ છથિ।

પ્રાય: પન્દ્રહ વર્ષ પૂર્વ ઈ રોગ પહિલ વેર દેષ મેં સાંઘાતકિ રૂપ મે પસરલ છલ। એડસિ એજપ્િટાઇ (અેદેસ ોગયપતી) નામક એક મચ્છરક માધ્યમે પસરયવલા ઈ એક વષિાણુજન્ય રોગ અછિ જિકર વૈજ્ઞાનકિ નામ
ક્ષ્ઙેંગીવાયરસ (ઢલવવિરિુસ) અછિ જન્તુ જગત્ મે સામાન્યત: પાઓલ જાયવલા દ્વસિંસ્તરીય નાભકિીય અમ્લયુવલ સતરાનદેદ યૌશયરાવીનુયલયિ અયદિ) કેર વદલા એહિ વષિાણુ મે એકસ્તરીય નાભકિીય અમ્લ (ષનિગલ સતરાનદેદ ઢ઼વીનુયલયિ અયદિ) હોઇછ। ઈ રોગ વષિાણુ અપન યારિ સ્વરૂપ મે અવસ્થતિ હોઇછ। એહવિર એકર ટાઇપ ૨વ એોક સાંઘાતકિ

भेल अछि। प्रायः १५ सितम्बर सँ १५ अक्टूबर केर मध्य एकर उत्पात बढ़ि जाइछ। बरिसाकालक ठीक बाद यत्र-तत्र जमकल पानि एहि विषाणुक वाहक मच्छर के आश्रय प्रदान करय ओकर जनन केन्द्र बनि जाइछ। अर्थात् तापक्रम ओ सापेक्ष आर्द्रता मच्छरक जनन हेतु अनुकूल परिस्थिति प्रदान करैछ।

एक अनुमानक अनुसार सम्पूर्ण विश्व मे प्रायः ४० करोड़ लोक पर एकर आक्रमण होइछ। उष्ण ओ उपोष्ण कटिबन्धीय प्रायः १०० देशक २५ अरब लोक एहि सँ प्रभावित होइत छथि। विश्व भरि मे प्रति वर्ष प्रायः ५ लाख लोक मे एहि रोगक लक्षण प्रकट होइछ आ प्रायः २५ हजार लोक एहि सँ कालकवलित होइत छथि।

ई मानल जाइछ जे डेंगू मूल रूपे अफ्रीका करे स्वाहिली भाषाक शब्द अछि। केन्या ओ तन्जानिया मे एकर उच्चारण ''डिंगी पेपो'' केर रूप मे कयल जाइछ। एहि रोगक आक्रमणक इतिहास १७८० ई० मे एशिया, अफ्रीका ओ उत्तरी अमेरिका सँ उपलब्ध अछि। डेंगू सँ २००४ ई० मे इन्डोनेशिया मे ८०० लोक मुइलाह जतय प्रायः ८०, ००० लोक एहि सँ प्रभावित भेल छलाह। एहि सँ पूर्व २००२ ई० मे ब्राजील मे सेहो प्रायः १० लाख लोक एहि सँ प्रभावित भेल छलाह। २००६ ई० मे फिलीपिन्स मे १४ हजार लोक प्रभावित भेल छलाह। एहि वर्ष पाकिस्तान मे सेहो प्रायः ५ हजार लोक प्रभावित भेलाह। सिंगापुर, आस्ट्रेलिया ओ चीन सेहो डेंगू सँ प्रभावित रहल अछि।
पर्यावरण विशेषज्ञ लोकनि मानैत अछि जे डेंगूक ई महामारी कतहु ने कतहु जलवायु परिवर्त्तन सँ सेहो जुड़ल अछि। वैश्विक तापवृद्धिक कारण मच्छरक प्रजनन हेतु वातावरण अधिक अनुकूल भेल जा रहल अछि। पानि मे देल मच्छरक अंडा सुक्खा गेला पर समुद्री मालक संग देश-विदेश पहुँचि जाइछ जतय कतेको मास बाद पानिक सम्पर्क मे अयला पर मच्छर के जन्म दैछ। एहि तरहेँ विश्वक कतेको भाग मे पहुँचि उत्पात मचबैछ। एहि बेर दिल्लीक आस-पास पहिने थोड़ेक-थोड़ेक अन्तराल पर वर्षा होइत रहल आ तकर बाद प्रचण्ड गर्मी पड़ल। मच्छर कटलाक पाँच-छह दिनक भीतर लक्षण प्रकट होमय लगैछ। ज्वर सात सँ दस दिन धरि रहैछ। तीव्र ज्वर १०३ डिग्री फारेनहाइट धरि पहुँचि जाइछ। माथ ओ आँखिक दर्द बढ़बाक संग मांसपेशी मे असह्य दर्द होइछ, उल्टी सेहो होइछ। मसूड़, नाक ओ कान सँ रक्त स्राव होमय लगैछ ओ चकत्ता सेहो निकलैछ।

अपन मिथिला क्षेत्र मे सेहो राज्यक बाहर सँ आबि कतेको रोगी दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय अस्पताल मे भर्ती भय चिकित्सा करबा रहल छथि। एकर जाँच हेतु आवश्यक एलाइजा टेस्ट केर सुविधा उपलब्ध नहि होयबाक खबरि बरोबरि समाचार पत्र सभ मे छपि रहल अछि।

एहि रोग सँ शोणित मे पाओल जायवला प्लेटलेट्स (थ्रोम्बोसाइट्स) केर संख्या मे कमी आबि जाइछ। प्लेटलेट्स वस्तुतः रक्त के जमबा (ब्लड क्लॉटिंग) मे मददि करय रक्तस्राव के रोकैछ। मनुष्यक रक्त मे सामान्यतः प्लेटलेट्सक संख्या प्रति माइक्रोलीटर डेढ़ लाख सँ साढ़े चारि लाख धरि होइछ। ई संख्या कम भेला पर आन्तरिक रक्तस्राव होइछ जे अधिक भ' गेला पर अन्ततः रोगीक मृत्युक कारण बनैछ। प्लेटलेट्सक संख्या डेढ़ लाख सँ कम भेला पर रोग सँ आक्रान्त व्यक्ति केँ प्रति दू दिन पर गिनती करयबाक चाही। एक लाख धरि भय गेला पर प्रतिदिन ओ साँझ

हजार सँ कम प्लेटलेट होइत पर दिन मे दू बेर जाँच करयबाक चाही आ पचास हजार सँ कम भेल पर अस्पताल मे भर्ती भय चिकित्सा करयबाक चाही।

इण्डियन मेडिकल एसोसियेसन केर कहब अछि जे स्थूलकाय लोकक संग उच्च रक्तचाप, मधुमेह आ हृदय रोग सँ ग्रसित होमयवला लोक के अधिक सावधान रहबाक चाहियनि। डेंगूक कारणे रोगीक रक्तचाप कम भय जाइछ। मोट लोक मे रक्तनलिका (कापिलिरय) फाटि जयबाक संभावना बेसी होइछ।

आपात् स्थिति मे डेंगूक रोगी के अस्पताल मे भर्ती करबा सँ मना करयवला अस्पताल आ नर्सिंग होम क विरूद्ध कार्रवाई करबाक निर्देश राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा पूर्वहि केन्द्र आ सरकार के देल गेल अछि। एम्हर राजधानी दिल्ली मे डेंगूक प्रसार सँ चिन्तित भय भारतक नियन्त्रक आ महालेखा परीक्षक (कैग) मच्छर वाहित बीमारी सँ लड़बाक दिल्ली सरकार आ स्थानीय प्रशासनक तैयारीक ऑडिट करबाक आदेश देलनि अछि।

डेंगू रोग सँ त्राण पयबाक लेल आवश्यक उपाय सम्बन्धी विज्ञापन सरकारी स्तर पर प्रकाशित कयल जा रहल अछि। एहि रोग सँ मरयवला लोकक संख्या मात्र ०३ प्रतिशत होइछ। ९९.७ प्रतिशत रोगीक लेल ई आवश्यक नहि जे ओ अस्पताल मे भर्तीये होथि। चिकित्सकक सलाह केर अनुपालन कय डेंगूक रोगी शीघ्र ठीक भय सकैत छथि। एहि रोग मे ई आवश्यक अछि जे शरीर मे जलक मात्रा मे कमी नहि होअय। एहि हेतु ओ.आर.एस घोल, नारियल पानि, फलक जूस आदि पर्याप्त मात्रा मे लेल जयबाक चाही। ज्वरक नियन्त्रण हेतु माथक संग शरीरक आन भाग पर ठंढा पानिक पट्टी देल रहबाक चाही। दिनुका समय मे मच्छरक कटबा सँ बचबाक हेतु सम्पूर्ण शरीर केँ झाँपयवला कपड़ा पहिरबाक चाही। घर आ अस्पताल मे मच्छरदानीक उपयोग नितान्त आवश्यक अछि। घर मे कूलर रखनिहार लोक ओकरा खाली कय रगड़ि आ सेर सुखा कय ओहि मे पानि भरथि। पानिक बर्तन आ टंकी आदि केँ नीक जकाँ झाँपि कय राखथि आ आन अनुपयोगी डिब्बा, टायर, नारियलक खपरोइया आदि के नष्ट करथि किएक त' ओहि सभ मे जमल पानि मे डेंगूक मच्छर उत्पन्न होइछ।

रोगग्रस्त व्यक्ति रोगक निदान हेतु प्राकृतिक उपचार सेहो करबैत छथि। अनारनेबाक पातक रस गिलोय (गुरीच) क पात आ लतीक रस, घृतकुमारीक रस, अनारक रस, बकरीक दूध आदि के गुणकारी पाओल गेल अछि। ई सभ औषधि गामघर मे आसानी सँ उपलब्ध होमयवला अछि। परन्तु विषयज्ञ लोकनि कहब अछि जे एहि वैकल्पिक चिकित्सा के मानकीकृत कयल जयबाक आवश्यकता अछि जे एहि दिशा मे व्यापक शोध सँ सम्भव अछि।

अखबार सभ मे ई खबरि छपल अछि जे कोना दिल्ली मे एहि बेर बकरीक दूध दू हजार रूपया लीटर आ अनारनेबा (पपीता) क पात पाँच सय टाका प्रति पातक दर सँ बिकायल।

ડેંગૂ આ ડેંગૂ સદ઼ૃષ આન મચ્છન વાહતિ નોગ સઁ વચવાક હેતુ આવષ્યક અછિ જે ઘનક ભીતન મે જતય કતહુ પાનિ જમકય તાહિ સઁ પનહેજ કની। 'સ્વચ્છ ભાનત અભિયાન' ક અન્તન્ગત એહૂ કાજ કે પ્નાથમિકતા દેલ જયવાક ચાહી। નાજચાની દૃષ્ટિએ સહતિ દેષક અધિકાંષ ભાગ મે એહિ હેતુ નાસાયનિક માનકનાષી ; (છહેમિચિલ રનસેચતિચિદે) ક ધૂમ્નાચ્છાદન (ઢોગગિનિગ) કયલ જાઇછ। પનન્તુ ઈહો ધ્યાન નાખ્ય પડ઼ત જે કછુ અન્તનાલ ક વાદ મચ્છન એકના પ્નતિ નોધી (ઢેસિસ્તાનત) સેહો ભય જાઇછ। આના કેન્દ્ન સનકાન દ્વાના એહિ દિષા મે જાની દિષા નિર્દેષક પાલન સુનિષ્ચિત કનવાક દૃષ્ટિએ શ્ઁગગિક ક્નમ મે નકિએચ વલ ધુઆઁક મચ્છન પન પ્નભાવિતા આ મનુક્ખ સહતિ આન જીવ પન એહિ મે પ્નયુક્ત હોમયવલ રન્સેક્ટીસાઇડ કેન ઘાતક પ્નભાવ કે સેહો ધ્યાન મે નાખલ જાઇછ।

આને નોગ જકાઁ ડેંગૂક કાનગન નિદાન તકવા મે વિષ્વ ભનિ મે વૈજ્ઞાનિક અહર્નિષ લાગલ છથિ। યદ્યપિ આજુક તિથિ મે એકન કોનો સટીક ટીકા (વાચચિને) વાજાન મે નહિ આવિ સિકલ અછિ પનન્તુ વૈજ્ઞાનિક લોકનિ દ્વાના એહિ દિષા મે વિકસિત ટીકાક પનીક્ષણ વિભિન્ન ચનણ મે કયલ જા નહલ અછિ। ''હડ્ડી તોડ઼ય વલા નોગ (ભનોક વોને ધિસિએ)'' ક નામે જાનલ જાય વલા ડેંગૂ કે શહનીકનણ સઁ જુટલ નોગ (ધિસિએ ઓડ઼ નવાનિજાતિને) સેહો કહલ જા નહલ અછિ। વૈજ્ઞાનિક લોકનિક માનવ અછિ જે જૌ ઉચિત નિદાન નહિ તાકલ ગેલ ત સ્થિતિ આનો ભયાવહ હોઇત જાયત કિએક ત ૨૦૩૦ ઈ૦ ધનિ વિષ્વક ૭૦ પ્નતિશત ભાગક શહનીકૃત ભય જયવાક અનુમાન લગાઓલ ગેલ અછિ।

એહિ વેન ચીન મે સેહો ડેંગૂક ભયાવહ આક્નમણ ભેલ અછિ જતય ગુઆંગડોંગ (ઘુાનગદોનગ) નાજ્ય મે ૪૭, ૦૦૦ લોક એહિ નોગ સઁ ગ્નસ્ત ભેલાહ અછિ। ઓતય ડેંગૂક વાહક મચ્છન કે વોલ્વાચિયા (ઑલવાચહિા) નામક એક જીવાણુ (ભાચતેનુમિ) સઁ સંક્નમિત કનૌલા સઁ વનલ નપુંસક નન મચ્છન કે પ્નકૃતિ મે છોડ઼લ ગેલ અછિ। એહિ અભિયાન સઁ ઈ આષા કયલ જાઇછ જે મચ્છનક સંખ્યા નિયન્ત્નિત કયલ જા સકત।

અસ્ટ્નેલિયા, એશિયા આ લૈટિન અમેનિકા મે નહનિહાન વિષ્વક પ્નાયઃ ચાલીસ પ્નતિષત જનસંખ્યા ડેંગૂ નોગ સઁ પ્નભાવિત અછિ। પનન્તુ પછિલા ૨૦૧૨ ઈ૦ મે અમેનિકાક ફ્લોનિડા મે માદેનિા નામક સ્થાન પન દૂ હજાન લોક એહિ સઁ ગ્નસ્ત ભેલાહ। ઈ માનલ જા નહલ અછિ જે અમેનિકા આ યૂનોપક સમૃદ્ધ લોક મે પસનલાક વાદ વિકસિત દેષ સભ એહિ નોગાક નિદાન તકવા દિસિ અગ્નસન હોયત। વિષ્વ સ્વાસ્થ્ય સંગઠન (ઑહ્ઑ) એક નિયન્ત્નણક દિષા મે તીન વન્ષ પૂર્વ પ્નયાસ પ્નાનંભ કયલક આ ૨૦૨૦ ઈ૦ ધનિ એહિ સઁ આક્નાન્ત હોમય વલા લોક કેન સંખ્યા મે કમ સઁ કમ ૨૫ પ્નતિષત આ મુઇનિહાનક સંખ્યામે ૫૦ પ્નતિશત કમી અનવાક લક્ષ્ય નિર્ધાનિત કયલક અછિ।ઑહ્ઑ કેન તનિસ્કૃત ઉષ્ણ કટિવન્ધીય નોગ નિયન્ત્નણ વિભાગ (ધેપાનતમેનત ઓડ઼ છોનતનોલ ઓડ઼ ઞેગલેચતેદ થનોપિચિલ ધિસિએસ) ડેંગૂ નોગ ક સમસ્યાક સમાધાન તકવા મે અન્તન્નાષ્ટ્નીય સ્તન પન ક્નિયાશીલ અછિ।

સનોફી પાશ્ચન (ષાનોઙિ સ્ટાસ્તેન) નામક દવાઇ કમ્પની દ્વાના વનાઓલ ડેંગૂ ટીકા (વાચચિને) પન તેસન ચનણ (ફ્હાસે થહને) કેન પનીક્ષણ સમ્પન્ન ભય ગેલ અછિ આ ઈ કમ્પની એશિયા આ લૈટિન અમેનિકી દેશ સભ મે નિવન્ધન હેતુ આવેદન કયલક અછિ ઈ આષા કયલ જાઇછ જે એહિ વન્ષક અન્ત ધનિ એહિ ટીકાક પહિલ ખેપ વાજાન મે આવિ જાયત।

प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १९२ म अंक १५ दिसम्बर २०१५ (वर्ष ८ मास ९६ अंक १९२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

વાયૉટેક્નૉલૉજીક એહિ યુગ મે આનુવંશિક અભિયાંત્રિકી પદ્ધતિ સઁ મચ્છર મે ઘાતક જીન ક સમાવેશ કય વયસ્ક હોયવા સઁ પૂર્વહિ મરિ જાયવાક સ્થિતિ ઉત્પન્ન કરવ સંભવ ભેલ અછિ। એહિ ઠામ તકનીકી કે ઢ઼રઘડ઼ (ઢેલોસોડ ઈનસેયતસ યારરયનિગ। યોમનિાલત ઊનહાલ) ટેકનૉલૉજી કહલ ગેલ અછિ। ઈંગલૈણ્ડક ઑક્સફોર્ડ સ્થિત વાયૉટેક્નૉલૉજી કમ્પની ઓક્ઝિટેક સંગ ભારત ઘરેલુ (ઘાણગાવિસહાન મહકિુલાલ ઈનવેસતમેનત ।નદ થરાદનિગ। ડ઼તદ) એક એહન સાંઘાતિક મચ્છર તૈયાર કયલક અછિ। કમ્બોડિયા એવં લાઓસ મે ડેંગૂપર નિયન્ત્રણ કરવાક હેતુ લાર્વા કે ખાયવલા માછક પ્રયોગ કયલ જા રહલ અછિ। સિંગાપુર મે સેહો એક વૈક્સીન વનાઓલ જા રહલ અછિ।

મચ્છર કે દૂર ભગાયવાક હેતુ એક નવોન્મેષી ઉપાય કેર રૂપમે હાથ પર ઘડ઼ી જકાઁ વાન્હયવલા વકિર્ષક ઔરસિત વાનદ ક રૂપમે કયલ ગેલ અછિ। એહિ રિસ્ટિવેન્ડ મે સટિ્રોનેલા ક તેલ રહૈછ જે વાન્હયવલા વ્યક્તિ કેં કોનો હાનિ નહિ પહુંચયવૈછ। ઈ એક કાર્ટ્રજિ મે રહૈછ-જકરા દેવારા ભરલ જા સકૈછ। યારિ માસ ધરિ અસર કરયવલા એહિ વૈણ્ડ ક દામ સમ્પ્રતિ દૂ સય ટકાક આસપાસ અછિ। સ્ટકિર ઓ વઁાડી સ્પ્રે કેર રૂપ મે સેહો ઈ સભ ઉપલવ્ધ અછિ। કીટનાશી સઁ સમ્પૃક્તઈમપ્રેગનાતેદ ભેદ સેહો ઉપલવ્ધ અછિ।

વૈજ્ઞાનિક લોકનિ કહવ અછિ જે પહિલે ડેંગૂ વિષાણુક સંક્રમણ ઓતેક મારૂક નહિ હોઈછ જખન કિ દોસર વેરકા સંક્રમણ પ્રાણઘાતક ભય જાઈછ। અનુસન્ધાનકર્તા લોકનિ કહૈત છથિ જે સંક્રમણક પ્રત્યુત્તર મે મનુષ્યક શરીર મે પ્રતિરક્ષી ઉત્પન્ન હોઈછ ઊકરિ એહિ કારણેઁ કછુિ આન વિષાણુ સેહો યુપચાપ કોષિકા મે પ્રવેશ કય જાઈછ જાહિ સઁ હમર પ્રતિરોધક પ્રણાલી અનભજિ્ઞ વનલ રહૈછ। અવસર ભેટલા પર વાદ મે ઈ વિષાણુ સક્રયિ ભય ઉઠૈછ। એહિ તરહ વિષાણુક પ્રતિ શરીર મે પ્રતિરક્ષી નહિ વનિ પવૈછ આ રોગ પ્રાણઘાતક વનિ જાઈછ।

ડેંગૂ સદૃશ રોગક નયિન્ત્રણ હેતુ હમરા લોકનિ સમક્ષ સિંગાપુરક ઉદાહરણ અછિ જે અપન વહુઆયામી નીતિક અન્તર્ગત નવિારક નગિરાની ઓ નયિન્ત્રણ સાર્વજનકિ સ્તર પર જાગરૂકતા ઓ સામુદાયકિ સહયોગ ક સંગ શોધ કેં સમ્મલિતિ કડ કડ પ્રાપ્ત કયલક ગેલ। ઓતુક્કા નેશનલ ઈનવાયરનમેન્ટ એજેન્સીક નર્દિેશન મે વર્ષ ૨૦૦૧ સઁ સિંગાપુર સરકાર સ' કન્સટ્રક્શન સાઈટ હેતુ એક નયિન્ત્રી પદાધકિારી કેર નયિુક્તિ અનવિાર્ય કય દેલક અછિ જે કીટ-મચ્છર સભકેં નયિન્ત્રતિ કરય।

૨

ડૂઇ ગાછ

(ઉપન્યાસ)

જગદીશ પ્રસાદ મણ્ડલ

१

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

547X VIDEHA

મૌકાકૈં ΘΙΜΜે વઢૈΘ નામક઼ૃષ્ણ અપન ળિનિગીકૈં અપના ઢંગે નિર્માણવ શુરૂ કેલૈન। એક તઁ ઓહિના છોટ-મ઼ાએ વહિનિક વીચ એહેન વ઼ચિાન અપ્પનો તઁ ગામ-પરિવારમે એછે ળે મતે-પિતા નઙ અપનો મ઼ાએ-વહિનિ આ સમાળોકા મ઼ાએ-વોહિનિક વીચ વેવ઼સ્થતિ નૂપમે સમ્વન્ય એછે ળે વેસીમે નઙ તઁ કમોમે ળનૂન યΘ િનહΘ અછા તૈસંગ વ઼ચિવા માઙક ળિનિગી પરિવારક ળિનિગીકૈં સાત્વ઼કિતા દસિ વઢવૈત નહલૈન। મ઼ૂપ્પે સહ્વ આ કોનો સંકΘપ-વ઼નતે સહ્વ, દુનૂ સહ્વે મ઼ેΘ મુદા દુનૂમે અન્તનો તઁ એછે। એક સહ્વ મ઼ેΘ મ઼રΘપન આ દોસન મ઼ેΘ ળરΘપન, ળઙસઁ ઈહો તઁ હેવે કરત ળે મ઼રΘકૈં પાયક હ્એત આ ળરΘકૈં ઘાતક! ઘાતક ઈ હ્એત ળે હાડ઼-માંસક સંગ હ્ડ઼ડ઼યિો સુપ્પાએત!

આજે-આન મનુષ્ય ળકાઁ નામક઼ૃષ્ણક ળિનિગીકૈં કહયિૌન આકા દુનિયિાઁકૈં, વીચમે આવ઼િ ઠાઢ મ઼ેઽ ગેΘ નહૈથ। વ઼ચિારક ઘારમે અપના વુચયિે નામક઼ૃષ્ણ અપનાકૈં ળુડ઼શીતΘક માΘ-ળાΘ ળકાઁ છોન પકૈડ઼ હેΘીΘન। દુનિયિાઁ તઁ દુનિયિાઁ છી, વહુરંગી। કેતૌ વાઉ મ઼રΘ અછિ તઁ કેતૌ સોના, કેતૌ પાથન મ઼રΘ અછિ તઁ કેતૌ વોન-હ્ાન, કેતૌ પાનિ મ઼રΘ અછિ તઁ કેતૌ માટ઼ િમાટયિો તઁ માઙટે છી, કોનો ઉસ્સન અછિ તઁ કોનો કેશૌન કેસૈન ઉપળવૈક શક્તિ રખ્ખને અછિ।

અથાહ દુનિયિાઁક થાહ પકડ઼વ અસમ્ભવ નઙ તઁ કઠિન તઁ એછે। દસો દિશામે દુનિયિાઁ વઁટારત વઁટાએΘ અછિ, તહૂમે તેતે કોમ્મ-કામ્મ વર઼ ગેΘ અછિ, ળઁ કછુ ઙેગ કેમ્હ્નો ઉઠવૌ ચાહ્વ તઁ કોનો કોમ્મમે કોમ્માઓ ળાએવ આ કોમ્મયિેΘ પછાતિ કેમહ્ન મુહેઁ યΘ િળાએવ, સે ઠેકાન કનવ અથાહ નઙ તઁ આગમ તઁ એછે। ળહિના આગમો પાનિમે હેΘનિહિન સમ નંગક હોઙ છૈથ, કયિો એહ્નો હોઙ છૈથ ળે આગમ વૂહ઼ મિારે માટકિ ઊપન એરે પાનિ અછિ ળિઙમે ઙુવ઼ ળિાએવ। પાનિમે ઙૂમને હ્વાક પ્રવેશ નૂકૈ છૈ તઁએ વનુિ હ્વે અપનો હ્વે ળકાઁ ઉડ઼ ળિાએવ! મુદા તઁએ ક એહેન હેΘનિહિન નઙ છૈથ ળે સમુદ્ર સન પાનિમે હેΘ છૈથ ળઙમે માટકિ ઠેકાને ને છૈ।

દુનિયિાઁક વીચમે ઠાઢ઼ નામક઼ૃષ્ણ અપ્પન દુનિયિાઁ દસિ નળૌન દેલૈન। અપન દુનિયિાઁ તઁ વ઼એહ ને મ઼ેΘ ળઙમે નહૈક અછિ। એકનો ને દસો દિશા છૈ આ સૈયો કોમ્મો-કામ્મ છૈ। અપન ળિનિગીકૈં થાહ પવિત નામક઼ૃષ્ણક મનમે તોષ-સંતોષ ળગΘન। ળગΘન ઈ ળે મનુષ્પો તઁ મનુષ્પે છી ળે કારખાનાક આગકિ ચમિનિયિાઁ Θગ ળિનિગી વતિવૈએ આ સાઙવેનયિક કાઙ-Θીચેન ગાછો તના તહિ વીચમે ને હમહૂઁ કેતૌ છી।

અપના ળિનિગીક આડ઼-ચુનકૈં નામક઼ૃષ્ણ વટિયિા ΘΘન। વટિયિેવતે મ઼ક પ્પુળΘન- સમ કછુ અપને કનએ પડ઼ત। અહીમે ચરમ-કરમ સમ નુકાએΘ અછિ। ળઁ દેહ-હાથ નઙ ચΘાએવ, ઉપાર્ળન નઙ કરવ તઁ પરિવારક ખેવા-ખર્ચા કેતએસઁ આૈત, ચયિા-પુતાકૈં પઢાએવ-Θપ્પિાએવ કેના। અપના ળિનિગી-Θ ΘΙકકૈં અપને ઉપૈત કનએ પડૈ છૈ, હમનો કનૈક અછિ।

દોહ્ની સંકΘપક સંગ નામક઼ૃષ્ણ શક્ષિકક ળિનિગી શુરૂ કેલૈન। પહિ સંકΘપ કેલૈન ળે અપનો પ્રોફેસન વનૈક અછિ આ પરિવારમે છોટ-મ઼ાએ-વહિનિક નમિરળના ઓતે તઁ કરવે અછિ ળેતે પિતાળીક સમૈમે મ઼ેΘન। તઙસઁ ળેતે આગુઆ કરવ વ઼એહ ને અપન સ઼ળન હ્એત।

ઓના આર્થકિ દ઼ષ્ટયિે દુનૂ-વાપૂતક ળિનિગીમે અકાસ-પતાΘક અન્તર આવ઼ ગેΘ છેΘન। પિતાક ળિનિગી મહોΘકા ળમીન્દારક નહૈન ળખ્ખન ક િનામક઼ૃષ્ણક ળિનિગી ઓઙસઁ વઢૈΘ એક સાધારણ શક્ષિકક મ઼ેઽ ગેΘન। સંકΘપકૈં ખ્ખુડ઼તિ કનૈત માને છોટ-છોટ ટુકડ઼ી વના નામક઼ૃષ્ણ અપન મન અસથિર કેલૈન ળે પિતાળી ળેતે પઢેΘન, તેતે છોટ-મ઼ાઙક પ્રતિ અપનો દાયત્વિ વનૈએ, ઓના તઙસઁ કમ-વેસીમે પઢનિહિરોક વ઼ચિાન તઁ એવતે છૈ। ળઁ નઙ પઢઽ ચાહ્ત તઁ પરિવારક વીચ, સમાળક વીચ, કએિ ને અપન પ્રાયશ્ચતિ કના Θવ। ળઁ પઢનિહિન નહ્ત તઁ અપન ઓકાત િમ઼ના સહ્યોગ કરવ દાયત્વિક

સંગ કન્૧વ્રયો ñ વનીતિ શ્રછી ઐઠામ શ્રાવ ન ામક ૃષ્ામક વ્રયિા૧ ઠમૈક ગેઉેન। કછુિ સમએ ઠમકઊ પછાત ન ામક ૃષ્ામક નળૈ૧ શ્રપનાપ૧ પડેઉેન। પ૧વ્રિા૧ક ખ્ય૧યમે સમ્રિષ્ઠ મોળને-વસ્ત્ર શ્રા શ્રવાસેટા ન૨ શ્રછી ઉપ્પિવ-પઢવ શ્રા વે૧-કુવે૧મે દ્વાયો-દાનૂક ળૂ૧ત ñ પડતિ શ્રછી શ્રોના વ્રદ્યિાઉ્યક સંગ ટ્યૂશન ક૧વ, ત૨સઁ કછુિ શ્રામદની વઢત મુદા ઘટો ñ ઉગવે ક૧ત ને ળે શ્રપન પઢૈક સમએ વે૧વાદ મઽ ળાએત। ળખ્ખન સમૈએ ને વઁચત તખ્ખન શ્રાગૂ વઢ કિેના સકવ। વાઉ-વોયક ખેઉ પઢવ-ઉપ્પિન ન૨ ને છી, શ્રો ળનિગીક સાયના છી ળેકના સાયને વનિ। ળનિગીકેં શ્રાગૂ મુહેં વઢાએવ કઠનિ શ્રછી। શ્રોના સાયનો કેતે ન્ગાક હો૨એ। મુદા સે સભ ન૨, ળેતે સાયક ળૂ૧ત ૧હએ શ્રા સાયૈક સાયન ૧હએ, વસ તેતવે।

ન ામક ૃષ્ામકેં ળેના મક્ ખુળઉેન। મક્ ખુળતિ નળૈ૧ માન-૨માન શ્રા સમ્માનપ૧ ગેઉેન। શ્રોહો ñ વીળ-નૂપમે શ્રઁકુ૧, ગાછ વન ળનિગીકેં ગછાડૈત શ્રુનગી યન પિહુઁચ ળા૨એ। શ્રોતે ળા કઽ ને ગાછોક શ્રૂઉ શ્રુઉા-શ્રુઉા શ્રકાસ દસિ તકૈત તેગેગન, સપ્તઋષ્ગિણેએ શ્રા તહનિા ને માનો-૨માન ૨ળ્ળત વન ૨િળો૧યિા નાત ળિકાઁ મગવ્રતીક શ્રાનાયનાક મુહૂર્ત વનૈ઼।

ન ામક ૃષ્ામક મન શ્રપના દસિ ઘુમઉેન। ઘુમતિ ઉપકઉેન ળે ળૈઠામ ળનિગીમે શ્રાવ શ્રઁટેક ગેઉ છી તૈઠામ ૨ળ્ળત-૨માન કી મેઉ શ્રા તેકના કેના વઁચા કઽ ૧ખ્ખ સિકૈ છી઼?

સૌનક મેઘ ળકાઁ મન ગુમ્હ૧ઉેન। ગુમ્હ૧ઉેન ૬ ળે ળ૨ કાળક મા૧ માથપ૧ શ્રાએઉ શ્રછ શ્રોકનો ળઁ નીક ળકાઁ માને ૨માનદાની પૂર્વક નમિ૧ળના ક૧વ, તખ્ખન ત઼ૈ। ળખ્ખન ક તિહીસઁ ને ૨માનો-૨ળ્ળત યઉત। ળ૨ વચ્ચાકેં પઢવૈક મા૧ કન્હાપ૧ શ્રાએઉ શ્રછી, તહૂમે ઉશ્ર૧ પ્૧ા૨મની સ્કૂઉ શ્રાક મિડિ઼િ સ્કૂઉમે નૈ છી, હા૨ સ્કૂઉમે છી, ઐઠામસઁ નકિઉેા પછાત કિયિો શ્રાગૂશ્રો પઢેઉ કૌઉેળ ળાએત શ્રા કેતે પઢા૨ છોડ઼ શ્રપન ળનિગી વનવૈક કનિયિામે ઉાગત। એહેન વ૧તીપ૧ ળઁ શ્રપના ળનિગીમે ળીવ્રન્તતા ન૨ ૧હત તખ્ખન કેતૌ-ને-કેતૌ કછુિ-ને-કછુિ કમી શ્રૌત। મુદા શ્રો ળીવ્રન્તતા શ્રૌત કેના?

ન ામક ૃષ્ામ શ્રપન શ્રામદની શ્રા શ્રપના કાળકેં સમૈમે વાન્હ ચઉવ મનમે નોપ ઉિઉેન। સમએ નસિયતિ શ્રછી, શ્રામદની નસિયતિ શ્રછ ળઁ એકના કાળક નસિયતિ। ન૨ દેવ તખ્ખન પછઉૈક સમ્મવ્રના વનયિેં ળા૨એ। શ્રામદનીક ખ્ય્ય શ્રપન ળનિગીક સંગ પ૧વ્રિા૧ક ળનિગી ચઉાએવ શ્રછી। શ્રપન ળનિગીક ખ્ય્ય ળે શ્રછ શ્રો૨મે મોળન પ્૧મુખ્ખ શ્રછી। ળઁ હમ વળા૧ દસિ ળા૨ છી ñ નસિયતિ નૂપે શ્રચકિ ખ્ય્ય હએત, મુદા ળઁ શ્રોકના શ્રપન દનિચર્યામે ઉઽ શ્રાનવ ñ શ્રદહોસઁ વેસીક વઁચત હએત। ન ામક ૃષ્ામક મન માન ગેઉેન।

શ્રાગૂ પઢેપ૧ નળૈ૧ ગેઉેન। મા૨યો-વહનિ પ૧વ્રિા૧મે ૧હ મિટ્૧કિ તક ñ ઘ૧ેપ૧ સઁ પઢ સિકૈએ। શ્રપન ળે હસ્સાિક ળમીન શ્રછી, શ્રોકનો ઉપળવૈક પ૧યિાસ ક૧વ, ન૨ ળઁ ત૨ સભસઁ ખ્ય્ય ન૨ પુડ઼ત ñ થોડ઼-થાડ઼ વેચયિો ઉેવ। મુદા ળઁ ખ્ય્યક દુશ્રાને શ્રપને શ્રાક પ૧વ્રિાનેક વાઉ-વોયકેં ળનિગી વાયકિ કેને ૧હવ તખ્ખન ñ ળનિગી કોમ્માહ વન ળાએત।

વી઼એમે ન ામક ૃષ્ામ નાશ્રો ઉપ્પિા, છહ માસક પછાત કૌઉેળ છોડ઼ને ૧હૈથ, કતિાવ સભ કીન નિને ૧હૈથ। સોહે વૈચમે શ્રા૧મ મ૧ વી઼એ કઽ ઉેઉેન। વી઼એ કેઉ પછાત વ્રિદ્યિાઉ્યમે સ્તનો વઢઉેન શ્રા દ૧મહોક વઢોત્તની મેઉેન। તૈસંગ નીક ૧ળિ઼ટ પઢૈક મન સેહો ળગા દેને ૧હૈન। પ્૧ા૨વ્રેટ વ્રિદ્યાર્થીકેં યુનવિર્સિટીસઁ પ૧ીક્ષા-ઉ પ૧મીશન ઉશ્રિ પડ઼ે છૈ। મનમે શ્રા૧ાયિ ઉિઉેન ળે ળખ્ખને શ્રવ્રસ૧ મેટત તખ્ખને એમ઼એ઼ કઽ ઉેવ। મુદા શ્રો૨ઉ શ્રખ્ખનેસઁ ક૧ખ્ખડ઼ઽ પડ઼ત।

◌

શવ્દ સંખ્યા : ૧૭૮૭, તથિઃ ૨૫ શ્રક્ટૂવ૧ ૨૦૧૫

૨

વચિાર નૂપમે નામક ૃષ્ણક મનમે નોપા ગેલ નહૈન ળે એમ્એ કનવા મુદા ઘડ઼ી-મનિટ દનિ-માસ ગુળૈન ગેલ, અપ્પનો યની નામક ૃષ્ણક મનમે કાળ નૂપમે નર નોપાએલ છેલૈન। ઓના વદ્યાિલયમે સેહો સાહત્યિસઁ ળુડ઼લ નહલ મુદા ઓ પૂનવપીઠકિા બેલ। ળેકન કાનણ નહૈ ળે સબ દનિ સાહત્યિ વષિય દસિ નહલ। ઓના સાહત્યિોમે ગણતિ નર અછ સેહો વાત નર, ગણતિ ળઁ ઓહૂમે અછ મુદા ઓ નમહન અછ, ળઁએ છોટ ળનિગીમે ઢોલઢોલ બઽ ળાઇએ ળનિગીક લેલ ળઁ ળનૂનત અછ અનથશાસ્ત્નક સંગ ઓકન સ્ટૈટકિ્સકેઁ વુહ્વ, ળઝમે હળાનો કોસ દૂન હટલ નામક ૃષ્ણ, ળઁએ સમએ વીતએ લગૈન મુદા નનિ્ણએપન પહુઁચયિ ને પાવ નહલ છલ। કેતૌ વાળવ નીક નર, એકન અનેકો કાનણ અછ મુદા સે નર, નામક ૃષ્ણક મનમે ઉઠૈન ળે અસમ્ભવ કાળકેઁ સમ્ભવ વનવૈક પ્નક્નયિા છી, ળઁએ કાળક વસિ્વાસૂ દૂ દસિ વઢ઼ત। એક દસિ કાળક લેલ ળનિગી બેલ આ દોસન ળનિગી-લે કાળ બેલ। મુદા પુનુષ્કેઁ ળઁ અપન પુનુષત્વોમે વસિ્વાસ કનવાકે યાહી। મુદા નળૈનમે ળેના નયા ગેલૈન- 'કંગનક લેલ આનસી કી આ પઢ઼નહિાન લેલ આનસી કી।'

નામક ૃષ્ણક મનમે ળેના ળેઙુઆ નમી ળગૈન। ળેઙુઆ નમીક માને બેલ, ળમીનમે ઠણ્ઢપન આએવ। મુદા સે નૈ નમી ળઁ ળમીનમે સબ દનિ નહતિ અછ, બઉઁ કહયિો ળલ-પ્લાવતિ બઽ ળાએ, કહયિો કાણ્ઠ સુપ્પએ લગાએ। મુદા સ ૃળન શક્તમિ કમી-વેસી નહૈ છૈ। ળઝમે ળેઙુઆ નમી ળે સમુદ્ન-યાનસઁ લઽ કઽ ળમીન યનમિ વેસયિા ળાઇએ માને સમુદ્નોમે માછ આણ્ડા છોડ઼ૈએ આ ળમીનોમે નૌદમે ળપા વોઆ આનો સક્કત બઽ હાલ પવતિ યનતીકેઁ આડ઼ કલેશ ઉઠૈને દુનયિાઁક વોય અપન પહ્યાન વનવૈત અપના વંશો આ અપનો નામકનણ કનૈએ। ળઁ સે નર કનૈત ળઁ સબ યાન યાને છી આ સબ માન માને છી ળકાઁ ને બઽ ળાએત।

ળેઙુએ હાલ ળકાઁ નામક ૃષ્ણક મનમે અપન ળનિગીક ગણતિ ળગૈન- સાહત્યિો ગણતિસઁ આ અનથશાસ્ત્નો ગણતિસઁ અડ઼કૈત વૂહ્ પડ઼લૈન। ળેના કાનમે કછુ બેને કુકુને લગૈએ, આઁખ્મિ મડ઼મિોડ઼એ લગૈએ, પીપની અડ઼કએ લગૈએ ળહનિ। નામક ૃષ્ણોક મન અડ઼અડ઼ેલૈન। અડ઼અડ઼ાઇતો દુનૂ હાથે દુનૂ આઁખ્મિોડ઼ કાગળ-કલમ ઉઠા ળનિગીક કેલકુલેશન કનએ લગલ।

એક દસિ સોહ્ વાટ દેખૈથ ળે આઠ સએ નમ્વનક આઠ વષિય એમ્એક કોન્સમે અછ ળઝમે છહ સએક પનીછા ઉતીનણ બાઇએ ગેલ છી। માત્ન દૂ સએક નમ્વન દૂ વષિયક હ્મેલ અછ। મનમે યપયપી એલૈન ળે વઢ઼-વઢ઼ ઠમૈક ળાઇના ઠમૈક એ દુઆને ળાના ળે અપન વુહ્લ વાત માને 'હાથી પયિાસલ, ઘોડ઼ા પયિાસલ, દલ-દલ પાના, થલથલ વાણા પથપલ માના।'

નામક ૃષ્ણક આગૂમે નકશાએલ મન ઊકવાતી નેને નસ્તાપન ઠાઢ઼ બઽ દીવાલ પાવૈનક ઊક ળકાઁ પનીછા ઘડ઼ી; પનીછા ઘડ઼ી; પઢ઼ૈત નહૈન। ળઝસઁ નામક ૃષ્ણ ઠમૈક ગેલ।

અહી દીકા-ળીડ઼ીમે નામક ૃષ્ણક સાલ બના સિમએ નનિ્ણએ કનૈસઁ પહનિ યલ ગેલૈન। વદ્યાિલયમે હેડ માસ્ટન એમ્એ નહથનિ, મુદા કુન્સયિો ળઁ કુન્સી છી, ને યાકે કહયિો વચિાનૈક વાત સોયલૈન આ ને કહયિો ઉપકૈનો કઽ હેડમાસ્ટન સાહેવ

ળીવનક સમ્વન્યમે પુછ્છકૈન। ઓના વેક્ નાગિન ગ્રામ આ પદ પ્નાષ્ઠિક ગ્રામ દુન્ દુ મેલ। નયિમાનુસાન દુનક પાળન હેવા યાહી મુદા ઓકન નઁ સમય-સ્થાન નિ્યાનાનિ અછ્છિ પૈન ળે સે।

સોયે નામક્ ષ્ણમ હેડમાસ્ટન સાહેવસઁ એમ્ એ કનૈક ગપ નઝ યળૈણેન। પાછૂ ઉનૈટ નકૈથ નઁ સભ શક્ષિક નવ કપિુનાન મુદા નહૈથ નઁ સભ આઈ-વી એ પાસે। ળૈઠામ આઈ એ; વીએ પાસ નૈઠામ એમ્ એ નઁ મુનાહિ મેવે કઅળ। મુનહિ ગાછીસઁ આગૂ વઢિ નામક્ ષ્ણમ ળપ્પન વૃદ્યિાન્થી દસિ વઢૈથ નઁ દેપૈથ ળે ઈ નઁ મેળ પૂન્વપીઠિકા માને વયયાક ળ્માનમૂમિ! એઠામસઁ આગૂ વઢૈન ને કયિો એમ્એક યોટીપન પહુઁચૈએ આકાપિહુઁયન। મુદા એને નઁ યુમ્વકક સમ્વન્ય છૈ ળે એક સાિ દોસનકેઁ નયવૈએ।

નૈસન સાઁહ। કોસીક કનિછેન, માને મેળ યાનક ળાક ળમીનપન દેને ળે યળૈક નસ્ના નહૈએ અ। ઓહી નસ્ના હોઝન નામક્ ષ્ણમ ટહલૈન વહુન દૂન યળિ ગેળ। અપને પઢૈક વયિાન મનકેઁ દવને નહૈન, ઝળોનયિા પપ્પ નહવે કનઝ, સુન્ળ અપન વોનયિા-વસ્નિન સમૈટ સુનૈળ યળિ ગેળ મુદા ઠહાકા માનિ ઝિળોનયિા અન્હાનકેઁ ઘેનૈએ ને દઝ, અહી યોપયટમે નામક્ ષ્ણમ નીન કોસ આગૂ યનિ ટહલૈન ગેળાપન મનમે હોઇ એલૈન ળે સૌહકા સમય છી, કેને દૂન યળિ એળૌ! ઘુમિ ક્ષ આવિ અપન ઓસાનક કુનસીપન વૈસનિ મનમે ઉઠલૈન, પહનિ હાથ-પએન યોઝ યાહ વના પીવ ળ। પછાનિ વૈસ વયિાનિ ળિવ ળે હમના કો કનક યાહી। વયિાનક દુઝએ પક્ષ હોઝઇ 'હઁ' આ 'નઝ'। પછાનિ 'હઁ' ઓમે હળાનટા ડાનિ છિટિકૈએ આ 'નહિઁ'મે।

યાહ પીળ પછાનિ મિનમે યેનયિન એવને અપન વયિાન–સંકળપક વયિાન, ળે આઝ હઁ-નહિઁસ કૈને ળેવ–ળેના પૂન્વાક ળહ્કોમે મઁસયિા પછાનિ દસિ ડોળિ ગેને આ યાનક પાનિ ળકાઁ વયિાનોક ળાટ યેને દોસન વયિાન સેહો વહૈન નહૈએ, નહિના ળાટ-ળાટ સાહનિ્યક યાનમે નામક્ ષ્ણમ ઝુઁસિ ગેળ। આઽ હાઽ હાઽ! કેહેન સુન્નન સુન્દની અછ્છિ ળે એક ઘડી આયો ઘડી, આયોમે પુન આય! મને-મને નામક્ ષ્ણમ વસ્મિન્ ન મઽ ગેળ। વસ્મિન્ ન એહેન મેળ ળે ળહિના ઘડી-ઘામ્ટ વળૈન દેવાળયક મુહથૈનપન ઠાઢ મઽ પૂળાક શંપ્પ સ્કૈન હોઝન। મનમે હળયળ ઉઠલૈન। મુદા ળાગે દોસન યુન સસૈન કઽ આવિ સિવાન મઽ ગેલૈન। આ યુન છળ આય ળનમ હમ નીન ગમાઓળ! દુનયિાઁ કેનેટા આ ળનિગી કેનેટા? નઝળે ળેક અનેને હાય-હાય કપિ કનન?

ઓના હાથોક ઘડી નામક્ ષ્ણમ નપ્પને છૈથ મુદા દેવાળમે ઘામ્ટીવળ-ઘડી નપ્પનહિ છૈથ। હોઝનો એહના છૈ ળે કેકનો ઘડી સમય વનવે છૈ નઁ કયિો ઘડીકેઁ સમય વનવૈએ યએહ નઁ મેળ દુનયિાઁક પેળ। કયિો મનિટ-પળ સમય પકૈડ નયૈન નઁ કયિો કટળ-પોટળ યાન ળકાઁ ળનિગી દેપ્પ હુહુઆઝના!

ઘડી વાળળ, સાઢે આઠ। નામક્ ષ્ણમક મક્ ટુટલૈન। માનસક સમય મઽ ગેળ। હાથક ઘડીપન નળૈન નપ્પિ પિછળ સમય (માને વૈસૈકાળક સમય) સઁ મણિ઼ેન નઁ ડેઢ઼ ઘામ્ટા ઘામ્ટીએ ડોળવૈમે યળિ ગેળ। હાઝ ને વા! નાન્હટિ વયિાન કનએ વૈસળૈ, સેહો છુટયિે ગેળ! આઝક ળેળ ળે કાળ અછિ, આકાિ વયિાન અછિ ઓ ઓહુકા મેળ, કાળહિ-ળે કાળહિ છૈ। નપ્પન નઁ કાળે છુટિ ગેળ। અય્છા! માનસ કનૈ વેન વયિાનિ ળિવ। મુદા વયિાન આઝયે કનૈક અછિ।

સમ્પન્ન પનવિાનમે નામક્ ષ્ણમક ળન્મ મેને ગીન-નાદક પનવિાન મેટળ નહૈન, ળઝસઁ વયયેસઁ કછુિ-કછુિ સાળોપન હાથ દેને આ મીઠ અવાળ નહને અવાળોક સાયના નહવે કનૈન। ળે અપ્પનો પછુએવને છૈન, ળઝસઁ અસગાન નહને નવળ-મળીનાક હાથ નઁ છુટિ ગેલૈન મુદા હાનમોનયિમ નપ્પનહિ છૈથ। ઓહો નયિમનિ સમય પાઝને છૈના અસગાને ગૌનાહિન, અસગાને વળૌનાહિન-સુનનિહિન, આન કયિો ને! નપ્પન?

યુળહિ ળાગ વૈસનિ ળેના મન સુડસુડેલૈન। સુડસુડાઝને પહનિ નિામૈયે કઽ લેલૈન ળે એમ્ એ કનવ, પ્નોકેસન વનવા। કાળક ઝય્છા નઁ કનૈક શક્નિ મિંગૈ છૈ। સે શક્નિ નામક્ ષ્ણમ સંયનિ કનૈક દશિામે અપ્પનેસઁ મીડ ગેળ।

तेसर साल एम.एक परीक्षा देबक अछि। काल्हिये युनिवर्सिटीसँ सिलबस आनि, आगाँ विषयक खाम्डवाइज किताब सेहो कीनि लेब। कछु-कछु समैक कटौती सभ काजमे करैत दू घण्टा समए निकालि काजमे हाथ लगा देब।

जिनगीक टपान टपैक दुर्गा बाटपर ठाढ़ भऽ रामकृष्ण युलहि लगासँ आगू देखऽ लागल। मनक संग देहोमे युलवुली आबि गेलैन। समयानुकूल भोजन बना, भोजन करैत रामकृष्ण निर्णए केलैन जे ओछाइनपर नियनसँ ओतो नीक जकाँ बिचारि लेब।

ओछाइन सेरायिा जखन ओछाओनकि सिरमापर मुड़ी खसौलैन कि चिक्-दे बियिाह माइक संग भाए-बहिनपर मन उड़ि गेलैन। दिनो-दिन माइक देहक दशा खसल रहल अछि! देहक दशा खसैक कारण दुखिता भऽ सकैए देह आ देहकि। ओना उमेरो पचास टपि गेल मुदा सएक नापमे तँ अचानक भेल, अखन कऍ देह खसतैन। साठिक बाद ने खसैक सम्भावना जगैए। ओना खाइ-पीबैमे कोनो तेहेन अभाव तँ नहियेँ हुअ देब छथि, जेहेन हजारो-लाखो परिवारमे छै। नर! जरूर मानसकि पीड़ासँ पीड़ति अछि। की एहेन उमेरमे जँ पति-विहीन लोक भऽ जाए, बाल-बच्चा छोट रहै ओहेन लोकक रज्जत-आबरू एहेन समाजमे बँचि सकैए जेहेन समाज बनि गेल अछि आकि बनि रहल अछि आकि बनौल गेल अछि। की माए-बापक धर्म बाल-बच्चाक सेबा करब नइ छी? बहिन विआहे जोकर भऽ गेल अछि, आ तँ माइयेक सोहमे अछि, की ओकरा मनमे सन्ताप नइ जगैत हेतइ?

रामकृष्णक हँसी-खुशीक मनक नीन पड़ा कऽ दूर भागि गेलैन। करछ-मछ करैत ओछाइनपर पड़ल माएपरसँ भाए-बहिनपर नजैर उतड़ैन। दू-दूटा भाएकेँ कौलजक खर्चा जुटाएब बाल-बोधक खेल नइ ने छी। मुदा ईहो तँ दायित्व बनियेँ जाइए कनि जे जहुना अपने रामकृष्ण कौलज मधुबनीमे पढ़लौं, तहुना तँ पढ़ा दिऐ। मुदा छोड़लो तँ नहियेँ जा सकैए। तखन तँ भेल अपन जिनगीक संग परिवारक जिनगीकेँ अपन कमाइमे अँटावेस करब। जे अँटावेस करए तँ अपने पड़त।

◌



---

[१] अंग्रेजक प्रतिरूप

[२] घरेलू काज

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१ जगदीश प्रसाद मण्डलक दूटा लघु कथा- ननिकिया देवीक आमायन। प्रसैत गाछ २ मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप- राजेश झा

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक दूटा लघु कथा-

ननिकिया देवीक आमायन।

प्रसैत गाछ

ननिकिया देवीक आमायन।

बहुत दिनसँ नै बहुत बर्खक बाद गाम एलौं। आब तँ सहजे दिल्लीए-वासी भेलौं। घरो-दुआर दिल्लीए भेल बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएबसँ लऽ कऽ बिआहो-दान ओतहिसँ करै छी। मुदा पहिने से नै, पहिने ई कहै छी जे गामसँ पड़ेलौं किए।

गाममे पहिने एकटाम दुर्गा-पूजा शुरू भेल। सौसे गौआँक सहयोगो रहैन। जनिका पूजा-पाठ करैक छूटि रहैन ओ अपन भार पूजा-पाठक लेलैन। नवतुरिया सभ नाच-तमाशाक भार उठा लेलैन आ बाँकी लोके प्रन्या-वन्याक। समाजोक रंग-रूप आ मुँह-कान एकरंगाहे रहैन तँए सबहक बियोगेसँ बलि-प्रदानक प्रथा शुरू भेल।

किछु दिनक पछाति विजेताथी सबहक बीच खुला-खुली भेलैन। दोसरोटाम दुर्गापूजा प्रारम्भ भेल। ओना खुला-खुली दुर्गा-पूजाटामे नइ आनो-आनो पाबैनमे होइए जे एकदिनो पाबैन दू-दिना भाइए जाइए।

ISSN 2229-547X VIDEHA

किछु सालक पछाति गाममे एकटा निर्गुण महंथ ऐला, गामक वैष्णवजनकेँ प्रचारसँ पचैर एकठाम कऽ लेलैन। माने ई जे एकसूत्री कार्यक्रम बना बलि-प्रदानक विरोधमे फुक्की दऽ सौंसे गामक निर्गुणियाँक संग सगुणियोँ सभ एकजुट भेला। ओना जीवपर दया करी...; ओकर हत्या नै होइ; सभ जीव जीवे छी इत्यादि एहेन विचारक संस्कार तँ सबहक मनमे रहबे करैन।

ओ महंथजी जे अपना सम्प्रदायक मध्य परहक वक्ता छैथ। एक घण्टाक भाषण कण्ठस्थ केने छैथ। जहिना सत्य नारायण भगवानक कथा एके साँसमे कथा-वाचक सुनैर कऽ बाँचि लइ छैथ तहिना महंथोजीकेँ छैन्हि। इलाकामे तेतेक सेवकान रहैन जे महंथजीक छाती जमीन्दार जकाँ फुलल रहै छेलैन। मुदा गाम-समाज की छी, तइसँ ने कहियो भेँट भेलैन आ ने ओकर तरी-घटी बुझैथ।

बीचमे किछु दिन पहिने सुनने छेलौं जे एकटा एहेन थाना प्रभारी थानामे आबि गेल रहैथ जे महंथजीकेँ जहल पठा देने रहैन। कहाँदन महंथजी सेवक संग सेवकाइमे फँसि गेला। जे मामला थाना पहुँच गेल। साल भरि जहलक हवा खेला पछाति महंथजी निकलला। द्वितीय गुण रहल जे ओ थानो प्रभारी चलि गेल रहैथ। मुदा महंथजीक चल-चलती फेर ओहिना छैन। जहिना साँप केचुआ छोड़ि नव-जीवनक संग जिनगी पाबि लइए, तहिना महंथोजी कनियेँ एकभगाह भऽ दोसर डारि लगा पहुँचला किटलक चम्मच जकाँ पानि छुबिते शुद्ध भऽ गेल छैथ। मुदा जे से।

तइ दिनिमे हम कौलेजमे पढ़ैत रही, वैष्णव परिवारमे जन्म भेने वैष्णवी जिनगी तँ रहबे करए।

गामक गुन-गुनी आ गप-सप्पक क्रमक संग बैसार- अपन विचारक बैसार- हुअ लगल रहए। कौलेजक जिनगी कालमे पीपासु मन समाजिकि भाइए गेल रहए। गामक तरी-घटी तँ किछु बुझैत ने रही, मनमे हरल-ने-फुड़ल, महंथजी ऐठाम पहुँचलौं। महंथजीक चपचपी देख बुझि पड़ल जे मानसिक विचारी सभ संग पकड़लकैन अछि। एक तँ महंथ, तैपर लोक महत्मो कहिते छैन। उमेरगारो छैथ। देखे-देखी ने दुनियाँ चलै छै, ओहि देखा-देखीमे हमहूँ कहलियैन-

"महात्माजी, गाममे अपने?"

जहिना भेड़ुआ बरखाक बूनकेँ चारी ऊपरे लोकि पीब लइए तहिना 'गाम' सुनिते महात्माजी ऊपरे लोकैत पूछि देलैन-

"गाम तँ समाज छी किने?"

कहलियैन-

"हँ।"

फेर पुछलैन-

"समाजकेँ एक रस्ते ने चलक चाही?"

कहलियैन-

"चलक्के चाही।"

'चलक्के चाहि' सुनि जेना महन्थजीकेँ हवा जगलैन। हवा पैबते मनसूबा जगलैन आ मनसूबा जगिते बुलबुला छोड़ैत बजला-

"गाममे दू ठाम दुर्गा-भगवती बनै छैथ, मुदा हमरा सबहक परिवारक ने कियो पूजा करए जाइए आ ने कुमारि भोजन करैए!"

महन्थजीक बात सुनि किछु [illegible] ने करए। नइ [illegible] कारण भेल जे किछु बुझल ने रहए। एते देखिए जे गाममे दू ठाम दुर्गा भगवतीक स्थान अछि। सालो-साल आसिनमे दस दिनक पूजो होइए आ ओइ संग हाटो-बजार लगैए आ नाचो-तमाशा होइए, जइसँ दसो दिन के केम्हर मुहेँ ससैर जाइए से लोक बुझबे ने करए। बुझबो केना करत पूजा-पाठ करैबला पूजा-पाठमे लीन, बनियाँ-बेपारी अपन कारोबारमे लीन, गायक-वादक मनोरंजनक पाछू लीन। केकरो केकरोसँ गप करैक फुरसैतो तँ नहियेँ रहै जे एक क्षण एकठाम बैस आने समए जकाँ ताश खेलैत। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे महन्थजी बाहरोमे जखन मञ्च परहक महात्मा छैथ तखन एहेन तँ गामक सहजे जवाबदेह समाजो भेल। जहिना ओ समाजक छथिन तहिना ने हुनको समाज छैन्हि। परिवारक लोक पूजा करए नइ जाइ छैन, जखन कि सौंसे समाजक स्थान छी। कहि ने जाइ छैन आकि कियो नै जाए दइ छैन से तँ ओ ने बुझता-बुझियाता। हमरा ऐसँ कोन मतलब। मुदा समाजक बीच ओते मतलब तँ रखै पड़त ने जइसँ समाजक एकसूत्रतामे कमी नइ आबइ।

कहलैन-

"परिवारक जे समस्या अछि ओ तँ अपना परिवारमे ने मीलि कऽ समाधान करब।"

एका-एकी लोकक आवाही बढ़ल। लोकक अवाहीसँ बूझि पड़ल जे गामक लोक भारसिक कनफ्टेर गेल अछि। दुनू गोरे- हमरा आ महन्थजी-क बीच गप-सप्प पाँचो-सात मिनिट नै भेल हएत कि जहिना साँझ आकि भोरमे गोटे चिड़ियाक पुक्की सुनिते आनो-आन केतेको चिड़िया कात-करोटसँ आबि-आबि ओइ पुक्कीकेँ पुपुअबैत आगूमे आबि हौ-हौ करए लगैए, तहिना भेल जाइत रहए जे जेम्हरसँ अबैत ओ अपने तेल-बेताल भेल आबि बाजए लगए-

"महन्थजी, मञ्चपर अहाँ बजै छिऐ, कुमारि सिर्फ जातकि बेटी कुमारियि भेलि, अपने तँ अपना समाजमे छी, जैठामक सार्वजनिक दुर्गा स्थानमे हमरा बेटीकेँ साँझक दिआरी आ भोरक अछिंजलि पहुँचबैक जगह नइ अछि!"

महन्थजी चुप-चाप भेल हाथक इशारासँ, नव-नव एनिहारकेँ बैसबैत रहैथ। मुदा सुनै तँ हमहूँ छेलौं। मन नाचए लागल। अपन चरि माने कौलेजक जिनगी तक ई बात बुझबे ने केने रही जे गामक बेवहारमे की सभ अछि। जे बात बुझल ने छल तइमे किछु बाजबकेँ नीक नइ बूझि बजबे ने करी। मुदा बुझैक जिज्ञासा तँ मनमे रहबे करए। ओना अपना बीच- माने नव-नव लोकक बीच- सेहो खूब चौचाल हुअ लागल मुदा एक मुँहक बात नीक जकाँ सुनबो ने करी आकि दोसर मुँहक बात चलि आबए-

"जखन हमरा-सबहक पानियेँ छुआ जाइए तखन स्थानक नीपिया-पोतिया केना करब?"

लोकक मुँहक बात सुनि मने-मन खौंझो उठए, मुदा फेर कहि जे अपन जे ऐ खौंझक पाछू पड़ब तँ कौलेजक पढ़ाइयो छुटि जाएत। तँए मनकेँ गरगोटिया दऽ दऽ दाबी जे बाजब बन्न केने रह। फेर तेसर अवाज आएल-

"जखन हम सभ वैष्णव धर्म अपना लेने छी, तखन दसगरदा स्थानमे बलि प्रदान कहि होइए?"

નંગા-નંગાક ઊકક વાત સુની દુનૂ કાનમે ડેકી ઙાા ઙેઊ। ડેકયિો ઙાાપ્વ જૂનાયિે છઙ કનિ।

સમાળક સમસ્યા ળાઊમે નઙ મહળાઊમે ઙૅસઙ અછિ। અપ્પન નઁ પોડયિાહયિો ળાઙ યઙવૈક ઊનિ નિરૂ।

અપ્પન યની મહંથળી પે નાકમે નહૈથ ળે હમ કી ઉત્તન દઙ છઍિ। મુદા ઓ વૂહિ ગેઙા। દુનૂ હાથે હઙઙાકૈં શાન્ત કનૈત વળઙા-

"દુનગાસ્થાનક વઙિ-પ્નદાનક પ્નભાવ સમાળોપન નૈ પડિ નહઙ અછિ સે વાત નૈ। ળઙ સમાળમે વૈષ્મ્યવ સમ્પ્નદાયક ઊક નહતા નૈગમ વિપિનીત પ્નભાવ પડવે કનત। ઓના, ળઙ ગામમે આકનિ ળિઙ યનતીપન મૉં-ળગદમ્વાક આનાયના હોઙ છૈન, ઓ નીકે નઙ વહુત નીક હોઙપ મુદા ઓ ળગદમ્વા તે યનતી નૂપમે યનતયિે ને છૈથ। ગામમે દેવસ્થાન નહને તે ગામે ને દેવાઙય વનિ ળિાઙપ, તપ્પન અપન અઁગાનોમે નઁ કાઙપ સકૈ છી।"

મહંથળીક વિયિાન સુનિ હિમનો વિયિાન મહંથળીક વિયિાનમે મીઙિ ગેઙ। ળહિના કાત-કનોટક વન્પ્પા-વુન્નીક પાનિ યનાયિાઙત યાન વનિ યિડયડાઙત યાના વનૈત યાનક યાનામે મીઙિ ળિાઙપ તહિના ભેઙ।

કહઙયૈન-

"મહંથળી, હમ અપનેક વિયિાનસઁ સહમત છી, સંગ દેવા મુદા કનવૈ કી સભ સે નઁ હમનો ળના દેવ કનિ?"

હમન વાત મહંથળી કૈં ઉકડાહ નઙ ઙાગૈના ઓના વહુત મહંથકૈં ઉકડાહો કેના ને વૂહિ પિડૈન ળે પહિનિ દીક્ષે વૉંટિ દઙ છથિનિ આ શિક્ષા-ઊ અનેન છોડિ દઙ છથિનિ।

વળઙા-

"દેપ્પયિો વૌઆ, ગામક સમાળ વૈષ્મ્યવ-સૉંકડ નૂપમે વૅટિ ગેઙ અછિ, ળપ્પને દૂ દિશામે ઊક યઙત, તપ્પને કાળો સભ દૂ નંગાહ હુઅ ઙાગત કનિ।"

મહંથળીક વિયિાન ળઁયઙ। મુદા દૂ દિશામે યઙિતો સમાળ એક વનિ કેના યઙત ઇ નઁ મનમે પ્પુટયિાઙતે નહપ। દોહની નૂપમે મનુપ્પક ળનિગી છૈ, એક વૈયાનિક દોસન શાનીનિક। મુદા કછુિ યાહે ને પેવ નહઙ છેઊ। ળેમ્હન દેપ્પી તેમ્હન અથાહે વૂહિ પિડપ।

વળઙૌ-

"મહંથળી, એહેન કાળ નઙ હુઅપ ળે હોત-સઁ-હોતાંગ ભડ ળાપ"

મહંથળી વળઙા-

"હોતકૈં હોતો આ હોતાંગો નઁ ઊકે ને વનવૈપ। ળેહેન ઊક નહત તેહેન હપત! "

મહંથળીક વિયિાન મનમે નીકો ઙાગપ મુદા ડનો હુઅપ ળે ઊકો નઁ ઊકે છી, કપ્પનો અમનીત ઉગઙૈપ આ કપ્પનો વીપ્પા। સેન હુઅપ ળે એહનો નઁ ઊક છૈથ ળે અમનીતે ટા ઉગઙ છૈથ। મુદા સભસઁ ગળપટ ઇ અછિ ળે મૌકા દેપ્પિ દુનૂ ઉગઙૈપ!

એહેન વોન-હાડક પહાડમે સનિ-સળમૈન કેના ભેટત આ સુપ્પેન વૈદકૈં કેના યનિહ્વૈન?

तेँ-तर जेना हम सुतल लागल। कहियो सुड़बे ने करए जे की बाजी। मोन हुअए जे अनेरे कोन चक्करमे पड़ि गेलौं। मने गामक लोकसँ हटि कौलेजमे संगी-सबहक बीच रहै छी। मुदा मोन भेल जे साल-दू-साल बादो तँ अही गाम-समाजमे ने आबि रहबा पड़तै कालो तँ नहियेँ चलत। आगा-पीछामे पड़ि गेलौं। अक्-बक् दुनू बन्न भऽ गेल। नजैर उठा कऽ देखी तँ एको गोरे हाइ-स्कूलसँ आगू बढ़ल नइ बूझि पड़ए, तैठाम हुअए जे कौलेजमे पढ़ै छी केना पाछू हटि कहियो बाजब। लोकक बीच- माने जेते गोरे ओइठाम रहथि- घौचाल करबे ने करए। मुदा ओ घौचाल बढ़ैत समस्याक नइ समाधानक।

एके समस्या लोको-लोकक बीच आ परिवारो-परिवारमे बढ़ैत जाइत। अपन जिनगीक रस्ता हम अपने ताकि लेब, बेसी मुहसँ सुनिऐ। लोको राक्षसे जकाँ जे बड़ छोट से उनचास हाथ।

मनमे कनी चैन आएल। चैन अबैक कारण ई भेल जे हम तँ छौड़ा-मारेड़ ऐ गामक अप्पन छी, जइ गामक साहित्यमे छै जे छौड़ा-मारेड़क करेल पेती आ नै उपजल तँ।

चल जे हेतै से हेतै महंथजीकेँ गामक गाछ मानि लेर छथिन। घौचाल हँसि हँसैत कऽ कहलिऐ-

“अहाँ सभ महंथजीकेँ निर्माण करि ने सुनबऽ हर छथिन जे अनेरे अपनामे घोल-मथचक्का करै छी।”

मुदा हमरो बात जेना ठीक लागलै। राम हरबाहमे जहिना बानरक हल युक्ती-माली बैस दुनू हाथ दुनू कानपर भेने धियानसँ रामायणा सुनै छल तहिना महंथजीक निर्माणक धियान सुनैल सभ कान ठाढ़ केलक।

महंथजी अपन निर्माण सुनबैसँ पहिने समूहकेँ पुछलथिन-

“कनिको जँ कोनो प्रश्न मनमे घुरियाइत हुअए आ पहिने बाजि जाउ। पाछू जे घंघौल करब से ठीक नइ।”

कियो कोनो प्रश्न नइ उठौलक। चुपा-चुपी देख हुथकारैत कहलथि-

“अनेरे सभ मुँह बन्न करि केने छी?”

एकटा हमरे सन नबछबड़िये छौड़ा जे नैहो भेने अही साल कम्मठी बान्हि बिबाजी बनल, ओ कड़ैक उठल-

“जीवन को मैने सोप दिया भगवान तुम्हारे हाथो मे।”

धरमागती पूछी तँ हम ओइ गीतक अरथे ने बुझलिऐ। मुदा आब बुझै छी जे सत-पथ चलैले लोक सभ दिन जीवन-दान दैत आएल अछि। ओकरा डपटैत कहलथि-

“ऐठाम समाजक समस्याक समाधानक विधान भऽ रहल अछि आ तूँ बीचमे नाच ठाढ़ करै छह;

महंथजी अपन विधान सभकेँ सुनबथुन।”

हमर धरियाएब महंथजीकेँ अबल नइ लगलैन। मने-मन कहियो विधानए लागल। की विधानए लागल से तँ ओ जानैथ। थोड़ेकालक पछाति बजला-

“हस मणि किनी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। समाजक बीचक काज छी तँए समाधान तँ एकरे समाजे ने करत।”

એકટા કનશ્નુકા વવાળી ળે કામ્ઙી તઁ નર વન્હને નહિ મુદા ગુનુમંત્ન કાનમે ઉડ નેને નહ્ણ વયિયેમે ટમૈક ગેઉ-

"યઉ છૈ મઉનિયિઁ વેટી, યનતી યમકવૈ છૈ।"

મને-મન પ્યીળો ૩ઽઉ શ્ના હઁસયિો ઉગેઉ। પ્યીળ ૬ ૩ઽએ ળે સમાળક સમસ્યાકેઁ હઁસી વૂહિ ગીત ગવૈએ શ્ના હઁસી એ દુશ્નાને ઉગેઉ ળે હાર ને કોસી પેટક ઉીક, જઁસૈત ઘનક છપ્પઙપન વૈસ વંશયિો પ્યેઉએ શ્ના ગીતો ગવૈએ!

મુદા મહંથળી સમ્હાયૈત વળઉ-

"દસ ગોયેમે તઁ શ્નહિના નંગ-નમાસ યઉ છૈ। શ્નગુતેઉાસઁ કાળ નૈ।"

મન શાન્ત ભેઉ। વળઉી-

"મહંથળી ળે વ્રયિાન નપ્પતા સે હ્મ માનિ ઉવા।"

મનમે નહ્એ ળે શ્નપન કહિ દોસનોક વ્રયિાન વૂહિ ઉી મુદા સે ભેઉ નર વયિયેમે એક ગોયે વાળઉ-

"હ્મ સભ માનને છી।"

કોનો શ્નનયે ને ઉગેએ ળે કી માનને છી, ને કાનસઁ સુનને નહી શ્ના ને કોનો તેહેન કાળે દેપ્પિ શ્નેન ભેઉ ળે શ્નભેને મગળ-હિક્રિકીમે ઉગેઉ છી। ળહિના સભ હ્મે-હ્મે હ્નાવિેઉ કહિ દિઉક તહિના કપિ ને હ્નાહિને કહિ દિપિ।

વળઉી-

"મહંથળી, શ્નપના એઙામક વ્રયિાન નહ્ઉ શ્નછિ ળે સંપો મનિ ળિાએ શ્ના ઉઙશ્નો ને ટુટએ।"

મહંથળી વળઉ-

"એકના શ્નહં સભ સોહ્ ઙાનપિ ને દેપ્પૈ છી। ળપ્પને સંપપન ઉઙી ઉગતૈ તઁ ઉઙયિોકેઁ તઁ શ્નોતે યોટ ઉગવે કનતૈ, ળરસઁ ટુટૈક સમ્ભાવના નહિ ળાર છૈ। મુદા એઙામ નોગ નૂપી સંપક શ્નોહ્ન રઉાળ હોર ળે દુનૂ હોર।"

મહંથળીક વ્રયિાન ળેના તને-તન મન તક ઘોસયિા ગેઉ। નળૈન ૩ઙા કઽ ઉીક દિસ દેપ્પી તઁ વૂહિ પઙએ ળે સભ હૂમિ નિહ્ઉ શ્નછિ। મન ૩વયિઁએ ઉગેઉ।

વળઉી-

"મહંથળી એહેન વ્રયિાન દયિો ળે શ્નપ્પનેસઁ સમાળક વોચ વોશ્ના-વાન ભઽ ળાએ ળરસઁ ળનૂન સમાળ સોચિ-વ્રયિાનિ ૩ત્થાન દિસ વઢતા।"

ળેના હ્મન વાત મહંથોળી કેઁ ળઁચઉેના વળઉ-

"ળનૂન! "

વૈસઉ-વૈસઉ મનો ૩વયિઁએ ઉગેઉ। નનિત્થક વૈસવ વૂહિ પઙએ ઉગેઉ। યનપિવૈત મહંથળીકેઁ શ્નેન કહ્ઉયૈન-

"केतेकाल धरि मुँहक मूँगबा नुकेने रहब। काल्हि हमहूँ दरभंगा चलि जाएब। पछाति अहीं देख लगबैत कहब जे ओ छौंड़ा सभ पोखरी-घाटक छबड़ा सभ छी, आगूमे लप-लप करत मुदा एकोटा पकड़ए नइ देत।"

हमर बात जेना महंथजीक मनमे मेघ जकाँ गुम्हड़ेलैन। तखैन हमरापर तेना देखैत जेना हमर चालन देख अपनोकेँ चैन महसूस केलैन। दुनू हाथक इशारा दैत महंथजी बजला-

"दस गोटे जखन एकठाम बैसब तँ अहिना सासुरक रस्ते सासुर-सरहोजिक गाम होएत मसियौत-पिसियौत होएत ददियौत-ननियौत तक पहुँच जाएब आ दोसर दिसि तँए गामक एक-एक जनकेँ जीबैक बाट चाही।"

ओना महंथजीक संग समाजक बीच तेसर भगवतीक स्थापनामे संगे-संग काज केने रही, जेकरा आइ तीस बर्खसँ ऊपर भेल हएत। बीचमे मोबाइलसँ पता लगल जे महंथजी एकटा झमेलमे फँसि साल भरि जहल काटि एला। मुदा जखन हुनकर बियाह मन पड़ैए तँ सोहड़ाएल महंथजी रहैथ से मन पड़ि जाइत आइयो ओहिना मन अछि।

महंथजीकेँ जखन चरियबैत कहलयैन तँ बजला-

"जँ पूजाक स्थान भगवतीक बनबै छी तँ ओइमे सभकेँ पूजा करैक रास्ता खुजल रहए। जँ से नइ तँ लोक घरे-घरे भगवतीक पूजा तँ करिते अछि।"

तेसर बैष्णव भगवतीक स्थान बनि गेल। महंथजी अगुआ भेला। सभकेँ समर्थन बढ़ल।

किछुए दिनक पछाति बूढ़ पड़ल जे जहिना भागवत कथा भेने भूतो-प्रेत आ राक्षसोक आवाही हुअ लगैत तहिना रामलीला भेने रावणक वंश सेहो उपैक कऽ चलि अबैत। आमक गाछीक बगबानी, बटाइ खेत छीनब, बाध-बोनमे परती-परांतपर गाए-महीसकेँ चरबैसँ रोकब शुरू भेल। बूढ़ पड़ल जे सौंसे गाममे डोलि गेल। पचीसो बेर पचीसो रंगक बात कानमे पड़ए लगल। अन्तमे, चौराएल बाघ जकाँ रहितो उठे गामसँ पड़ा गेला।।

शब्द संख्या: २०८८, तिथि: ०१ नवम्बर २०१५

पसैन गाछ

जिनगीक अन्तिम सीढ़ीपर पहुँच पुरन ठाकुर ओइ गाछ सदृश भऽ गेल छैथ जे ने अकास दिसि मुँह उठौने ठाढ़ अछि आ ने धरतीपर पछाड़ल भेल पड़ल अछि।

सौन मास, बादलसँ छाड़ल मेघ, सुर्जक केतौ पता नइ, उमड़ैत-घुमड़ैत ओहन हूंकार भरैत जे बरसि कऽ धरतीकेँ जलमग्न कऽ देत, रहि-रहि बिजलीका सेहो दिशा बदैल-बदैल कखनो अपन पीतौछ रंगे तँ कखनो हरलुक लाली लेने तँ कखनो लाल लाल रंगे तड़तड़ेबो करैत आ गोटे-गोटे बेर ठनक-ठनक ठनका बनि खिसबो करैत। ओना अदरा नक्षत्रसँ बर्खा अपन रूप पकैड़ लेने छल जइसँ पोखैर-झाँखैरक संग धारो-धुर भुल अपन तेज गति पकैड़ लेलक। धर-धाँधरक संग ऊँधरास-नीधरास खेतो जल-प्लावित भेल। अस्सी-बरिसी बर्खक पुरन ठाकुर आबि दरबज्जाक मुहथैरपर ठाढ़ भऽ थर-थर कँपैत ने किछु बाजैथ आ ने कोनो धाल-धुड़।

दरबज्जाक दछिनबरिया खिड़की टुटि गेल अछि, जइ होइत हवा आ झटको घरमे अबैए, ओकरे बन्न करैले प्लास्टिकक बोराकेँ बाँसक फट्ठीमे काँटीसँ ठोकि-ठोकि ठीक करैत रही।

कखन पुरन ठाकुर दरबज्जापर आबि गेल रहैथ से तँ ठीक-ठीक नै बूझि पेलौं मुदा पनरह-बीस मिनट पहिने दरबज्जाक खिड़कीक काजमे लागल रही, तइसँ पहिने नइ आएल रहैथ। तइसँ अनुमान केलौं जे दस-पनरह मिनटक बीतने आएल छैथ।

थरथर कँपैत स्वरमे पुरन ठाकुर बजला-

"बौआ!"

ओना एकबेरक अवाजकेँ जहिना लोक अवाज नै मानैए तहिना हमरो भेल जे भरासिक अनुका अवाज छी। तँए कानक बातपर मन नइ उठल। जहिना अपन-काजमे लागल रही, तहिना लागले रहलौं। दोहरा कऽ पुरन ठाकुर बजला-

"बौआ, बौआ राधेश्याम!"

नाओ सुनिते घरेसँ कहलयैन-

"के छिआ! अबै छी।"

अवाज तँ सुनि लेने छेलौं, मुदा बोलीक अकार नइ भेल छल। जँ बोलीक आकर होइत तँ आरो किछु कहितिऐन। मुदा से नइ भेल। जहिना खिड़कीक काज पसरल छल तहिना छोड़ि घरसँ निकललौं तँ पुरन काकाकेँ देखलयैन। नाट कद, गाढ़ कारी रंग, गोल मुँह पचकल, आँखि धँसल, धोती, गोलगला आ कान्हपर तौनी लेने ठाढ़।

देखिते पुछलयैन-

"पुरन काका, एहेन समैमे घरसँ किए निकललौं?"

देहक वस्त्र भीजल, जइसँ टप-टप पानि धरतीपर खसैत। बजला-

"बौआ, आइ हम मरि जाएब!"

ओना मनमे भेल जे पहिरि सुखल कपड़ा दिऐन मुदा पुरन कक्काक बात 'आइ हम मरि जाएब' मनकेँ डेंगा देलक। डेंगा ई देलक जे कोन थर्मामीटरसँ पुरन काका नापि लेलैन जे आइ मरि जेता? मरमक पीड़ा आ जन्मक पीड़ा तँ जिनगीमे लोककेँ एकेबेर होइ छै, ओ केना अनुमान कऽ लेलैन? फेर भेल जे मानसिक जाड़सँ देह ठिठुर गेल छैन तँए एहेन बात मुहसँ निकैल गेलैन। मुदा लगले भेल जे सौनक पानिमे ओहुना ठिठुरन होइ कहाँ छै जेहेन माघक पानिमे होइ छै। तही बीच पुरन कक्काक परिवार दिसि नजैर उठि गेल। उठिते भेल जे मानसिक घर ने खसि पड़लैन अछि, जइसँ एहेन बात बजला।

घरपर नजैर पड़िते मन पड़ल- पुरन काकाकेँ परिवारे कहाँ छैन, घर तँ खसले छैन। हाथ पकैड़ पुरन काकाकेँ घर लऽ जा चौकीपर सँ एकटा धोती दैत कहलयैन-

"पहिरि सुखल कपड़ा देहमे लगा लिअ। हमरो काज लगिचाएल अछि, पछाति दुनू गोरे चाहो पीब आ गप-सप्प करब।"

मन बहटारै दुआरे कहलयैन-

"ऐ बेर इन्द्र भगवान खुशी छैथ!"

धोती पहिरैत पुरन काका बजला-

"धु: कोन भाँजक बात बजै छह। अन्हराकेँ जेहने जगने तेहने सूतने।"

पुरन कक्काक बातक कोनो अरथे ने लागल। अपना मनमे भेल जे मानसिक देहक वस्त्र ने सुखल पहिरि लेलैन मुदा मन समिसल छैन।

पुछलयैन-

"काका, अहाँक बात नइ बुझलौं?"

पूछ होइते जेना पुरन कक्काक मनमे पुछड़ी लगि गेलैन तहिना मन कलैश उठलैन, बजला-

"बौआ! जागब आ सूतब भेल, जूरनसँ कम-बेसी।"

पुरन कक्काक बात फेर ने बुझलौं। ऐठाम इन्द्र भगवानक गप अछि तखन बीचमे 'जागब आ सूतब' केतएसँ आबि गेल?

पुछलयैन-

"की जागब आ सूतल कहलिऐ, काका?"

बहिँसैत आसनि मासक सगिहानक खूल जहिना सउँह पड़िते भकरार भऽ जाइए तहिना पुरन कक्काक मन खुला कऽ भकरार भऽ गेलैन। बजला-

“जहिना इन्द्र भगवान बरिसिअ तहिना बाढ़ि आनि-पोखरि भरि आ जहिना सूतल तहिना नदी सुखा-टटा देत तहिना मानल जाइत खेत आ खेतक बथ जीविवल ओक। मुदा खेतपर जीनिहार ओको की भगवानकेँ गुदानै छैन, मन खुशी रहलैन तँ कोहबरक गीत सुनबै छैन आ जँ खिसियाएल रहलैन तँ महाजादियो बेर मुहेँ-कान ग्रासिँ एकबाहि कऽ दइ छैन। बाप! घरवैयाकेँ सुननौ ओ गारि किए लगत, हुनके बहनि-माए ने बरियातीकेँ सोहा-सोही गरियेबै छैन। सएह छैथ खेतपर जीनिहार भगवान, जे अपने शक्तिये जीबै छैथ, समुद्रक उपौरे-शंख किए ने अनघोल करौ मुदा अनठौआ बहीर जकाँ कानमे या तँ आँगुर लऽ साहोर-साहोर करत आ नइ तँ तुर-टेल लऽ अमुआ कऽ सुइत रहत।”

हाँइ-हाँइ कऽ खड़ियो लगा, हथौरी-कचाँटी, बेशल समाकेँ कानमे रप्पैत, बाहर छोड़ि, जखन पुरन ककाक आँख-पर-आँख देलखिन तँ बुझि पड़ल जे याह सुनि पुरन ककाक मनमे तृप्ति भइ एलैन। जँ तृप्ति आबि गेल रहितैन तँ मन जरूर तिरपित जकाँ बुझाइत। मुदा से नइ, मानसिक पुरन काका अन्नक भूखल छैथ, तँए याह सुनि तृप्ति जगलैन। सोभाविको छै, अन्न आ पानि तत्काल मारि सिमहानि सकैए मुदा अन्नक सोलहन्नी भार पानि तँ नहियेँ सम्हारि सकैए। एहनो तँ भाइए सकैए जे तत्काल वायुकेँ आनो तरवा मनकेँ बेपीड़ति कऽ दिए मुदा पुरन ककाक मन जहिना तन-मन भागल भेल छैन, तइसँ कनियेँ नीक ने अपनो छी। एहेन समैमे याहीक निवेदन करब नइ भेल। जैगर वाणिभक युग वा गैसक युग निरए तैगर मानसिक युग माने गोड़हा-खेड़ा जगैबलपर याह केना बनत। याह तँ जेहने पीवैमे रसगर लगैए तइसँ की आ कम रसिक अछि, गाछक सूखल डारहि, सुखाएल कड़ुयीक टुकड़ी आकि सुखाएल बत्तीक टुकड़ीक युगहि छी। एहेन समैमे[1] ओहो याहक युगहि निरमाएले रहैए। एतबो आग्रह करब नइ भेल।

अंत भेल जे किए ने एकबेर पुरने काकाकेँ पूछि लिएनि। मुदा मनमे ईहो उठल जे बूढ़-पुरान लोक छैथ, जँ कही एहेन बात्ती जनिगी रहल होएत जे की खाएबकेँ अयल बुहेत होथि आ कहि देथि जे तूँ हमरा बड़ बड़खनाह बुझै छह! तखन तँ आरो पहपैट हएत। समए भनिसुनके रहै, जलखै नइ केने रही। मुदा युगहि पजैर गेल रहै से धुरखाँ-धुकुरसँ आगम भऽ गेल रहए। लगले मनमे बयैड़ गेल। जखन याहक आग्रह पुरन काकाकेँ केने छलिऐन, ओना नोटीक संग याहक यैन तँ नइ अछि आ ऐछो तँ गाम-घरमे अखन नइ अछि मुदा शहर-बजारमे कम पार करैनिहार याहक संग याहकेँ तीमन बना खाइतो अछि। गाममे याहक तीमन तीमनक मान्यता नइ पौलक अछि। समा जनिगीक सब रंग भोजन होइए, ओइ भोजनक संग ओकर जनिगी यऔ छै आ जनिगीक संग रहन-सहन सेहो यऔ छै। तँए भोजन संस्कृत प्रभावित भाइए जाइए जेना याहक आगमनक संग बिस्कुटो आबि गेल।

मन पड़ल, घरमे बिस्कुट ऐछे करौ अहगरसँ बिस्कुटो जँ आगूमे देबैन तँ जरूर मनमे तृप्ति औतैन। जखन मनमे तृप्ति औतैन तखन ने आइए जे मनैल तैयार भेल एल हेन, हुनको इस बरख जीवैक इच्छा जगतैन। लगले देहक भुलकल रूप आ जाड़सँ सनिसनिआइतपर नजैर पड़ल। मन डमैक गेल।

तीन साटसँ जेते कपड़ा बदलने रही, ओ सभ ऐछे। कहि ने मोटरीए सुमहा दिएन जे जेतेसँ देह हुँपाएत तेते लऽ लेथि। सेह केलौं।

गंजी, अंगा आ यद्देन देख पुरन ककाक मनमे तृप्तिक संचार भेलैन। जनिगीक मूल आवश्यकता जे अछि ओइमे वस्तुओ तँ ऐछे। जँ मनसँ भोजन, रहैक घर, पहिरैक वस्त्र, बेर-बेगरतामे दवाइ-बिरो भऽ जाए तँ के याहत जे लगले अछियेपर यठि जाइ। दुनियोँ तँ नन्दन कानन छी, जइमे के नइ बास करए चाहैए। सभ तँ चाहिते अछि।

ओना मोटरीमे बहुत कपड़ा तँ नइ मुदा तीनटा गमछा, चारिटा धोती, दूटा धोती आ एकटा चद्दरि तँ छेबेहे। कपड़ा देख पुरन काका अपन जिनगीकेँ देखली-अपनासँ अपन जिनगी अपना तँ बूझि पड़लैन जे आब अपन औगुदे केते दिनक बाँकी अछि, तहूमे तेहेन जिनगीमे जीब रहल छी जे होइए आइए मरि जाउँ। मुदा जँ दसो बरिस आरो जीब तैयो वस्त्रक दुख नइ हएत। द्रोपदी जकाँ भगवान तेहेन वस्त्रक ढेरी आगूमे रखि देलैन जे जिनगीक कोन बात असमसानक अछियो धरि नइ घटत।

लगले मन घुमि गेलैन। घुमिते उठि बैसला। बैसते मनमे एलैन राधेश्यामकेँ जे रखलाहा छल से सभटा आगूमे दऽ देलक। एकर माने ई नइ ने भेल जे मोटरीए दऽ देलक। जेतबे अप्पन खगता अछि तेतबे ने लेब, मुदा तइसँ ते साले दू साल ससरबा।

पछाति स्थिर मनमे उपकलैन, राधेश्याम ईहो तँ नहियेँ बाजल जे ऐमे सँ एकटा निकालि लिअ आ बाँकी हमरा मोटरीयेमे छोड़ि दिऔ।

आगू-पाछू नजैर दौड़बैत पुरन काका गर अँटकाबि कऽ बजला-

“बौआ, अपने हाथे दान”

‘अपने हाथे दान’ सुनि मिन तड़ैप गेल। मन तड़ैप ई गेल जे जखन बेचारेकेँ मोटरीए सुमहा देलखिन, तखन अपने हाथे दैक माने भेल जे किछु दिअ आ किछु रखि लिअ। रखैक माने भेल- हिरिन काटत चाहे पानिक चुबाडसँ भीज कऽ सड़त आकि मूस-मुसरी खाएत तेकर कोनो ठीक थोड़े अछि, तइसँ नीक ने जे एकटा वस्त्र-विहीनकेँ वस्त्र भेटत।

कहलखिन-

“काका, अहाँ जड़ाइत छी, जेतेसँ देह गरमाए तेते पहीरि लिअ आ जे रहि जाएत ओहो लऽ लिअ।”

हमर बात सुनि पुरन कक्काक मन ओहिना रंगर जकाँ भरि गेलैन जेकरा खुशीयेकाल खुशनहिरि कहि दैत जे ऐमे पाँच हाथ आकि सात हाथ पानि रहत। तहिना ने अपनो जिनगीक हिसाबे सभ वस्त्र भाइर गेल। तइमे धोती तँ तेहेन अछि जे मुँह झाड़ि देबै कि एकटासँ तीनटा भऽ जाएत। ओढ़ो लेब, बिछाइयो लेब आ पहीरो लेब।

वस्त्र विहीन खसल पुरन कक्काक मन जेना बेपीड़तिसँ पीपाति दिसि बढ़लैन। परीछक आगमन होइते मन मुस्कियेलैन। कहि कऽ चाह आनए आँगन गेलौं। अँगना-दरबज्जाक दू आँगन अछि, तँए आँगन टपैमे कनी देरी लगल। तैबीच पुरन काका देहमे गंजी, कुरता पहीरि माथमे तौलीक मुरेठा बान्हि चद्दरि ओढ़ि लेलैन।

कागजक टुकड़ीपर दूटा डबिबा ट्वेन्टी-ट्वेन्टी बिस्कुट उहेल देलखिन। बिस्कुट देखि पुरन काका बजला-

“बौआ, हमरा कोनो बेसी भूख नइ लगल अछि, तहूमे भरिसुरका उखड़ाहा छी, हम कि कोनो करखन्नाक मौजुरा डयूटी करि कऽ आएल छी जे भीनाएल-भुखाएल रहब। मुदा हम केना।”

पुरन कक्काक अबबोलिया बात सुनि मिनमे भेल जखन पुरन कक्काक मुहसँ एहेन वियार खसल तँ मानि लइ छथिन। मातैत कहलैन-

“काका, बीचमे रहऽ दियौ आ दुनू दिसिसँ दुनू गोरे उठा-उठा खाएब।”

ओना मनमे रहए जे अपन खाएबकेँ सरकारी कर्मचारी जकाँ हाजरी पुड़ाएब आ भुखाएल पुरन काका छैथे तँए भूखक लहैमे बेसी भेल।

चाह-बिस्कुट भेल पछाति बुझि पड़ल पुरन काका आब पातलसँ ऊपर उठि चारीपर आबि गेल। चएह तँ तीनू दुनियाँक भेल छी, कखनो अकासमे उड़ैए तँ कखनो पातलक सात सीढ़ी-बिचियाँमे दबाएल अछि। एकर माने ई नहि जे बीच बसल चारीपर कखनो ने अछि सेहो तँ ऐछे, से कोनो आइए अछि सेहो बात नहियेँ अछि, अदौसँ रहल आ तावैत रहत जावैत अकास-पातल एकबट्ट भऽ चारीपर आबि ठाढ़ नहि हएत। बिचारक दुनियाँ एहने अछि। खसल मन, टूटल जिनगीक बिचार आ ऊपर उड़ैत जिनगी जावे एकठाम आबि एक दिसि नहि चलत तावे एकरस भऽ केना सकैए।

मुदा से नहि, चाह बिस्कुट खाइते-पीबते पुरन काका, चौमासी खेत जकाँ जोतल-चौकियाएल एक रसमे बूझि पड़ल।

कहलैन-

"काका, एना कए टाँहि दैने छेलौं जे बौआ आइ हम मरि जाएब। अहीं कहू जे आइ धरि जे सुख-दुख गमेलौं ओ अपना घरमे आ मरैल चलि एलौं हमरा दरबाजापर?"

जहिना बिचार बिचारकेँ छुबैत, प्रेम प्रेमकेँ छुबैत तहिना पुरन कक्काक मनकेँ छुलकैन। छुबाइते बजला-

"बौआ, तोरे सबहक- माने समाजेक- मुँह देख अहू अवस्थामे ठाढ़ छी, नहि तँ अपन कहि के रहल। तखन तँ जहि समाजक मुँह देख जीबै छी, सेवा करै छिऐ, वएह समाज ने मुँहक चहतो अखैन तक दैत आएल अछि।"

पुछलैन-

"से की?"

'से की' सुनि पुरन कक्काक मनमे मौलाएल गाछ जकाँ नव कलश जगलैन। जगिते मुँहक रंग बदललैन। रंग बदलैक कारण भेलैन जे मानसिक हमरो सन लोकक बेथा-कथा सुननिहार समाजमे कियो छैथ। मुस्की दैत बजला-

"बौआ, शुरूमे जहिया ऐ गाममे आबि बसलौं, तहिया अखुनका जकाँ ने एते नमहर गाम छल आ ने एते लोके छल। पतिजीक संग दुनू भाइयो आ माइयो आबि बसल रही। अपन तँ ने खेत-पथार रहए आ ने घर-घराड़ी, मुदा समाज मीलि रस्ते-कातमे घराड़ियो देलैन, खढ़-बाँसक घरो बना-देलैन आ रोजगारक रूपमे केश-दाढ़ी कटैक काज देलैन।"

जिज्ञासा करैत पुछलैन-

"तरसँ पहिने गाममे नौआ नहि छल?"

कहलैन-

"नहि पड़ोसी गामक नौआ आबि दाढ़ियो-केश आ बिआहो, मुड़नो आ सराधोक काज सम्हारै छल। मुदा संख्यामे कम रहने बेर-बेगरतामे काज खगिये जाइ छेलै। ओना गामो-समाजकेँ नौआक जरूरत छेलैन आ अपनो उजरल-उपटल जिनगीकेँ ठौर भेटल।"



पुछलथिन-

“जेकर रोजगार छोड़ि ओ सभ किछु कहलक नइ?”

बजला-

“की कहियौ बेटा। सबहक अपने जाति रहैत छैक, तहूमे ओहो सभ की आन छल, बाबूक मसियौत भाइए छला।”

“काजक बोइन केना भेटै छल?”

‘बोइन’ सुनि पुरन कक्काक मन बहिंसलैन। मुस्की दैत बजला-

“दू टाक कमाइल दइ छल। जनिका केश-दाढ़ी कटै छेलियनि ओ एक बाड़ा माने एक पसेरी दाढ़ीक आ एक पसेरी केशक कमाइल दइ छल आ जनिका खाली केशटा कटै छेलियनि ओ एक पसेरी कमाइल दइ छल।”

पुछलथिन-

“एक बाड़ा केते भेल?”

कहलैन-

“बौआ, पहिने कच्ची सेर चलै छल। ओना पक्की सेहो छल मुदा कमाइल कच्ची सेरसँ दइ छल। पक्की पान सेरक पसेरी छल आ कच्ची छह सेरक।”

पुछलथिन-

“तैसंग आरो किछु दइ छल?”

‘आरो’ सुनि पुरन कक्काक मुहसँ हँसी निकललैन। हँसैत बजला-

“समांगे जकाँ सभ बुझै छल। ओना कमाइल दइ छल अगहनमे। मुदा मुड़न- उपनैन, बिआह- सराधमे पैघोल दइ छल आ कमाइलक अतिरिक्त लोटा-कपड़ा आ सिदहो भेटै छल। जइसँ कहियो गुजर-बासमे दिक्कत नइ हुअए।”

पुछलथिन-

“दुनू भाँइक परिवार केते दिन सामिल रहल?”

कहलैन-

“जाबे बाबू-माए जीबै छला, ताबे सभ सामिले छेलौं। सामिलेमे दुनू भाँइक बिआहो-दान भेल। हम भैयारीमे छोट रही आ भैया जेठ छला। हुनका चारिटा बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। हमरा दूटा बेटेटा भेल।”

पुछलथिन-

“अपन के सभ छैथ?”

कहलैन-


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“बैशाख पखिरा न ँ दिनो-दिन बढ़िते गेलैन मुदा हमर एकटा बेटा दस-बारह बरखमे मरि गेल आ दोसर तेहेन याद-याैलक भऽ गेल- माने गोंता पीअ लगल- जे भरि-भरि दिन ओही पाछू तेना बौआएल रहै छल जे किछि कहि नै। एक दिन प्रसिद्धिए दुनू परानी पड़ा कऽ सासुरेमे बसि गेल। तेकर किछु दिनक बाद घरोबारी मरि गेल। मुदा तैयो जाबे देहमे हूवा छल ताबे तँ केकरो ने गुदानलिए मुदा जेना-जेना हूवा घटैत गेल तेना-तेना सभ किछु बदलैत गेल! सोह्होअना जजमैनको भागिजे सभकेँ दऽ देलिए। दऽ देलिए बड़बढ़ियेँ, मुदा तेहेन-तेहेन जनीजाति सभ घरमे आबि गेल जे कियो देखैबला नइ रहल।”

पुछलियैन-

“आब की सोचै-बिचारै छी?”

कहलैन-

“आब की सोचब-बिचारब तखन तँ।”

मनमे भेल, एक आदमीकेँ पुऔनार-पीऔनार कोन बड़ भारी काज भेल।

कहलियैन-

“अहीठाम रहि जाउ।”

‘अहीठाम रहि जाउ’ सुनि पुरन कक्काकेँ जेना जान-मे-जान एलैन। मुदा बजला किछु ने, मुस्कियाए लगला। बूढ़ि पड़ल जेना नव जिनगी भेट गेलैन तहिना खुशीसँ मुस्कुराइतो रहला।।

शब्द संख्या : २२३४, तिथि : २२ अक्टूबर २०१५

कथा लेखन क्रम

१ बैटक लाला- (३१०५)

२ बसिआँढ़- (२४९८)

३ पीनानक श्वेड़- (२०२४)

४ अनेनुआ वेटा- (३३३९)

५ टूटा पाइ- (३२७८)

६ वोनहिानि मननी- (३३९६)

७ हानि-फीन- (२३४३)

८ ठेआवआ- (२५६२)

९ फीवक्रि- (३६४२)

१० नक्सिावआ- (३९४५)

११ युनवाणि- (२४४५)

१२ डीहक वटवाना- (४७२४)

१३ भैयानी- (४०४१)

१४ वहनि- (२६९२)

१५ घनदेप्पयिा- (४०१८)

१६ पछनावा- (२६६५)

१७ डाक्टन हेमन्त- (४३९८)

१८ वावी- (२१६३)

१९ कामिनी- (२२८५

२० स्नाष्टाक समग्न नयना- (१३७)

२१ प्नतिमा- (१५४)

२२ मनम- (१४२)

२३ अयप्पन्नुआ- (२५५)

२४ समैक वेनवादी- (२१३)

२५ पहिनि तप तप्पनि ढेआहैं- (०८४)






मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

११८ ળ્યોતિ- (०८१)

११९ પવ઼નક વ઼વિક- (१८०)

१२० શ્રાત્મવ૭-२- (१०५)

१२१ પ્રુદીપામ વોસ- (१७२)

१२२ શષિ્યકેં શકિ્ષેટા નૈ પનીક્ષો- (१८७)

१२३ ૭ીહ પુનુષ- (१२४)

१२४ ઇંગા ૭ાા૭- (१५०)

१२५ ળીવ઼કક પનીક્ષા- (११७)

१२६ તપ- (१६२)

१२७ ३૭ટા શ્રન્થ- (२०३)

१२८ ળાતિ નૈ પાળિ- (१४२)

१२९ ઊઁય-ળીય- (२०६)

१३० પાગા૭પ્યાળા- (२२३

१३१ દોહ્ની માનિ- (१३५७)

१३२ કેના ળીવ? - (१०३१)

१३३ નવ઼ાન- (२२८२)

१३४ તિ૭ાસંક્નાન્તિક ૭ાહ- (२०३४)

१३५ માહક સનિહ- (११६६)

१३६ પ્રેમી- (२५२०)

१३७ વપૌતી સમ્પતિ- (२३५२)

१३८ ઙંકા- (२४२२)

१३९ સંગી- (१८५८)

१४० ડકહ્નવા- (२३५१)



१४१ श्रगहिगह- (२४७७)

१४२ श्रनुद्यांगनी- (३०४५)

१४३ ऑपरेशन- (१६०५)

१४४ यमुनानाथ- (१९८३)

१४५ सनोळनी- (१८१६)

१४६ सुभद्रा- (१९१०)

१४७ सोनमाकाका- (१५३७)

१४८ दोगी वश्रिाह- (१८१६)

१४९ पड़ाइन- (१९८८)

१५० केगी गै- (१२११

१५१ वहिनन- (३१७४)

१५२ मायनाम- (२०३७)

१५३ गोहकि शकिान- (२११३)

१५४ मान्ृभूमि- (१०३६)

१५५ भवडाह- (२०५३)

१५६ पनिवािनक प्रनगिषड़ा- (१८८८)

१५७ श्वागु- (२०९६)

१५८ ७श्वक साग- (११९२)

१५९ नविकोनक नुश्रा- (१८२६)

१६० एकोटा गे- (१०७१)

१६१ योगीक मान- (४७२)

१६२ साहृी- (९८९)

१६३ सनभैया पोप्पनि- (२९९०)



૧૬૪ ન્યાય યાહી- (૧૩૦૮)

૧૬૫ પનિયાહા દૂધ- (૨૧૧૪)

(૧૬૬ ક્ન્ળ- (૨૮૬૦)

૧૬૭ પરદેશી વેટી- (૨૪૫૧)

૧૬૮ માન- (૬૩૧)

૧૬૯ મનોરથ- (૧૧૫૧

૧૭૦ કયિો ને- (૩૬૯૮)

૧૭૧ સૂદિ બિરના- (૯૦૪)

૧૭૨ ળન્મતિથિ- (૨૩૫૬)

૧૭૩ સ્માનદાર ઘૂસખોર- (૨૨૦૪)

૧૭૪ પટિયાવઊ- (૨૩૫૬)

૧૭૫ સનેસ- (૧૨૪૮)

૧૭૬ ઉઊવા યાઉર- (૨૫૮૮)

૧૭૭ વઊળોર- (૨૩૨૦)

૧૭૮ વેટી) હમ અપરાધી છી- (૩૨૪૦)

૧૭૯ વગાવારિ- (૧૮૪૭)

૧૮૦ મુસ્ઊ વસિવનિ- (૪૨૪૪)

૧૮૧ સઙઊ દારીમ- (૨૪૪૨)

૧૮૨ યુપ્પા પાઊ- (૨૫૧૭

૧૮૩ એક યાપ ળમીન- (૨૫૨૨)

૧૮૪ ઓહ્રી- (૧૯૬૩)

૧૮૫ મુસહરિ- (૨૨૭૭)

૧૮૬ ફેઊવાડી- (૨૬૨૮)


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१८७ स्वनोळगाम- (२३३८)

१८८ धून- (२७४९)

१८९ कनियाँ-पुतना- (२३४०)

१९० वांनंट- (१६०१)

१९१ गामक मुँह स्वैन देखव- (२८८७

१९२ कयोट- (३१३)

१९३ काँय सून- (३९०)

१९४ वुयनी दादी- (२६७)

१९५ यखिनोड़- (३९६)

१९६ मुँह-कान- (२३४

१९७ अनदिना- (३१२)

१९८ अपन कान- (३६६)

१९९ दूनी- (२६४)

२०० पुननी मौली- (११६)

२०१ छूटनिगेठ- (१११)

२०२ काठ्हि दिनि- (१५१)

२०३ अप्पन हानि- (२८३)

२०४ कनखुसकी- (१३७)

२०५ मुँहक वान मुहँमे- (१३५)

२०६ कनीटा वान- (०९८)

२०७ गानि-गुद्दा- (२५०)

२०८ वसिवास- (३१६)

२०९ कयहनयिा-नायु- (२७०)





२५६ दूयवढा- (२७१)

२५७ टारपस्टि- (२६३)

२५८ समदाहि- (३००)

२५९ वुढ़िया दादी- (३३१)

२६० पाश्क मोढ- (२४१२) - [२२ दसिम्‌वर २०१३

२६१ योनूक्का हगाड़ा- (५३८) २४ दसिम्‌वर २०१३

२६२ अपसोय- (५४८) २६ दसिम्‌वर २०१३

२६३ पगहाड़- (२५८७) ३१ दसिम्‌वर २०१३

२६४ हीसीक मळा- (४५३) १ ळनवरी २०१४

२६५ मनि-गनि- (१८०७) ०७ ळनवरी २०१४

२६६ अपन सन मुँह- (५६९६) २५ ळनवरी २०१४

२६७ नळिढट- (२३४३) १६ ळनवरी २०१४

२६८ सुमनि- (३०५२) ३० ळनवरी २०१४

२६९ स्रेन पुछवनि- (३४६) ३१ ळनवरी २०१४

२७० माघक घून- (१६८३) ०६ स्रनवरी २०१४

२७१ धन्य- (३३०) ०७ स्रनवरी २०१४

२७२ अपना-दोपना- (३४२) १० स्रनवरी २०१४

२७३ पेटगाणाह- (५९३) १४ स्रनवरी २०१४

२७४ वड़की माना- (१२२४) १८ स्रनवरी २०१४

२७५ यनी-अकास- (१८४) १९ स्रनवरी २०१४

२७६ वकठाँर- (८८३) २४ स्रनवरी २०१४

२७७ येन-वेयेन- (९३६) ०९ मान्य २०१४

२७८ हथियाएढ धुनपी- (६४५) ११ मान्य २०१४

२७९ अढपुनिया वनी- (२८७) १२ मान्य २०१४



२८० नीक बोल- (५६५) १३ मार्च २०१४

२८१ सुआद- (६२४) १४ मार्च २०१४

२८२ गंगा नहेली- (६९०) १९ मार्च २०१४

२८३ मौँटक गहमी- (५०८) २४ मार्च २०१४

२८४ जँसैत नाह- (५९७) २६ मार्च २०१४

२८५ पान पनाग- (१६९२) २९ मार्च २०१४

२८६ सपिमा- (७६०) ३१ मार्च २०१४

२८७ नीमीक हकार- (११९८) ०३ अप्रैल २०१४

२८८ श्लोक मकड़- (१)७४४) १० अप्रैल २०१४

२८९ केते ला केते दूर- (१२५२) १४ अप्रैल २०१४

२९० अमानिव अनुभव- (३२६) १६ अप्रैल २०१४

२९१ प्योटकन्मा- (११८४) १९ अप्रैल २०१४

२९२ कछिु ने- (५०३) २२ अप्रैल २०१४

२९३ हकास- (१५८९) २६ अप्रैल २०१४

२९४ अप्पन-वीनान- (२९१९) ०१ मई २०१४

२९५ सळमनयिाँ आम- (६११) ०४ मई २०१४

२९६ अन्हुन नोग- (१००३) ७ मई २०१४

२९७ गामदनी किट्टा वेटा- (५७५) १० मई २०१४

२९८ नैहनाक याड़- (८८५) १४ मई २०१४

२९९ अवाक- (१०४७) १७ मई २०१४

३०० पोष्पाकि सैनान- (९२३) २० मई २०१४

३०१ दनयिाँ डावा- (४०९) २२ मई २०१४

३०२ यमान काँट- (३९५) २३ मई २०१४

३०३ पलमानि- (१११६) २४ मई २०१४



प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'विदेह' १९२ म अंक १५ दिसम्बर २०१५ (वर्ष ८ मास ९६ अंक १९२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३०४ कनिहारी- (५२९६) १४ जुन २०१४

३०५ सगाहा- (२८६७) २२ जुन २०१४

३०६ अकाल- (१२३८) २४ जुन २०१४

३०७ उत्कट बात- (११५२) २६ जुन २०१४

३०८ कालपरौक- (११७५) २ जुलाई २०१४

३०९ उलटन- (११८७) ६ जुलाई २०१४

३१० मेहना याची- (१३०७) ९ जुलाई २०१४

३११ बुढ़नी दादी- (१२५६) ११ जुलाई २०१४

३१२ अउताति प्रश्न- (१२२९) १४ जुलाई २०१४

३१३ हानि- (१२४०) १६ जुलाई २०१४

३१३ सोनाक सुरा- (११३५) १७ जुलाई २०१४

३१४ मनूमनि- (१२१४) २० जुलाई २०१४

३१५ असगरे- (१५५७) २४ जुलाई २०१४

३१६ पुरनी नानी- (१३०४) २७ जुलाई २०१४

३१७ कटा-कटी- (११४०) ३० जुलाई २०१४

३१८ केते ठाम केते दूर-(१२०६) ३ अगस्त २०१४

३१९ गाड़ी अपने मेल-(३३८६) ०६ अगस्त २०१४

३२० योगक योगवती- (८८४) ६ अगस्त २०१४

३२१ घर तोड़ि देलिए- (१५२७) १० अगस्त २०१४

३२२ सपना सुमति- (२३६३) १४ अगस्त २०१४

३२३ सनेस- (२६५४) १६ अगस्त २०१४

३२४ सए कप्छे- (४८८) १९ अगस्त २०१४

३२५ एक मुठी घास- (४११) २१ अगस्त २०१४

३२६ कनछियौह मुँह- (३१८) २४ अगस्त २०१४


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३२७ पुनस्कान- (२४१४) २४ अगस्त २०१४

३२८ गावीस मोस्स- (६८७) २९ अगस्त २०१४

३२९ मनकमना- (६११८) १९ सितम्बर २०१४

३३० घनवास- (४८८४) २६ सितम्बर २०१४

३३१ समयोग- (६०९६) ०४ अक्टुबर २०१४

३३२ यापाकळक पाश्प- (१६१६) ७ अक्टुबर २०१४

३३३ कळम हानकि- (२२२६) १० अक्टुबर २०१४

३३४ ळगयिाएळ धगिगी- (११८४) १४ अक्टुबर २०१४

३३५ गामक अकळ-सूनग- (२५९६) २० अक्टुबर २०१४

३३६ धतियिा पावनि- (३७०६) २४ अक्टुबर २०१४

३३७ सुप्पाएळ सूनग- (३६९०) ३० अक्टुबर २०१४

३३८ मैयानी हक- (३१३१) ४ नवम्बर २०१४

३३९ ठकुआएळ झुसवा- (३३५६) १३ नवम्बर २०१४

३४० ध्रुदियिाएळ- (२८९४) १७ नवम्बर २०१४

३४१ धटहा आम- (३५२८) २२ नवम्बर २०१४

३४२ ढकनपैंय- (३७४०) ३० नवम्बर २०१४

३४३ अमहाध- (२८५३) ०४ दिसम्बर २०१४

३४४ समनथाश्क झूग- (३८३२) ०७ दिसम्बर २०१४

३४५ वदिाश- (५१०३) १७ दिसम्बर २०१४

३४६ धळओदान- (७३१) १९ दिसम्बर २०१४

३४७ मनुष्यदेवा (१०१६) २२ दिसम्बर २०१४

३४८ उमेद- (३६४३) ३१ दिसम्बर २०१४

३४९ गळगन मैस- (३३९२) ४ धनवरी २०१५

३५० धाइ अाटगिळ- (३३२८) ९ धनवरी २०१५


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३५१ सुनना- (३३०४) १५ फरबरी २०१५

३५२ असुच मन- (२३५३) १९ फरबरी २०१५

३५३ धनमूदासक अप्पड़ाहा- (१४१०) २१ फरबरी २०१५

३५४ डोमनगू- (१५३१) २३ फरबरी २०१५

३५५ भावे ने कहब- (१४४८) २५ फरबरी २०१५

३५६ उकडू समय- (१४६७) २७ फरबरी २०१५

३५७ घास-घास दुनू गेल- (१६१५) २८ फरबरी २०१५

३५८ नहनकन्हा- (१२०८) ११ मार्च २०१५

३५९ वटपौक- (१२७२) १४ मार्च २०१५

३६० पसेनाक धनम- (१२६३) १६ मार्च २०१५

३६१ पेडुआ गनदा- (११०३) १८ मार्च २०१५

३६२ हँसीएमे उड़िगेलौ- (१२४३) २० मार्च २०१५

३६३ बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- (१२३४) २३ मार्च २०१५

३६४ हमर वारनकि बिचार- (१२०७) २६ मार्च २०१५

३६५ नोकनहिना- (११४६) २६ मार्च २०१५

३६६ घसवाहि- (१२१३) २८ मार्च २०१५

३६७ नेतन मारक कनिा- (१३१८) १ अप्रैल २०१५

३६८ छूआ- (१२२३) ६ अप्रैल २०१५

३६९ दोसनारन- (१२७०) ८ अप्रैल २०१५

३७० लछनमान- (११७३) १३ अप्रैल २०१५

३७१ हमर कोन दोष- (१५२७) १७ अप्रैल २०१५

३७२ मौसी- (१३९३) २१ अप्रैल २०१५

३७३ नटकिया गति- (१३१३) २४ अप्रैल २०१५

३७४ प्याए याहेए- (१२२३) २७ अप्रैल २०१५



३७५ मधुमाछी- (१८८२) ०७ मई २०१५

३७६ दलान घास- (२७७५) १३ मई २०१५

३७७ सहजिया खेती- (३१३५) २३ मई २०१५

३७८ मुस्तफिया माछ- (३२३१) २८ मई २०१५

३७९ मथाहाथ- (२९२३) ०२ जून २०१५

३८० पहपटि- (१३६९) ०५ जून २०१५

३८१ शरणार्थिया पानि- (१५१२) ०७ जून २०१५

३८२ तीन जुगिया साथ- (२०१०) १२ जून २०१५

३८३ अँगनेमे हेना गेली- (६०५) १४ जून २०१५

३८४ उकना हाथ- (२५२९) १७ जून २०१५

३८५ जेतए जे हैउ- (२०६२) २१ जून २०१५

३८६ गहूमक गानि- (१५३२) २५ जून २०१५

३८७ कनी हमनो सुनू- (१९८३) २९ जून २०१५

३८८ गामक वाहु- (२४३७) ०३ जुलाई २०१५

३८९ गुड़ा खुद्दीक रोटी- (२४४३) ०८ जुलाई २०१५

३९० सीनक गाछ- (३०७१) १३ जुलाई २०१५

३९१ हनहीक हनहा- (२९२४) १९ जुलाई २०१५

३९२ जाम- (३३५५) २९ जुलाई २०१५

३९३ गाम्हड़ा- (२३०४) ५ अगस्त २०१५

३९४ हाथी आ मूस- (३०१६) ११ अगस्त २०१५

३९५ मुसनी आ घोड़ा- (३६२५) १७ अगस्त २०१५

३९६ श्रमहान- (२३५०) २५ अगस्त २०१५

३९७ मोनक हगड़ा- (२६९७) ३१ अगस्त २०१५

३९८ कनियाशीप- (३३९५) १३ सितम्बर २०१५



૩૯૯ આર એન શ◌ૉમી- (૨૯૨૭) ૨૩ સતિમ્વર ૨૦૧૫

૪૦૦ ઓ હો હો હૂસગિેલ- (૧૦૨૫) ૨૯ સતિમ્વર ૨૦૧૫

૪૦૧ મીની મ્નષ્ટાયામ- (૮૨૫) ૫ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૨ ગળપઠ પેતી- (૧૧૭૧) ૮ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૩ સમુદ્રી વહ્દિયા- (૭૮૭) ૧૧ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૪ મકશે મહિગેલ- (૯૫૯) ૧૨ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૫ નનિયિા દેવીક આમાયના- (૬૭૯) ૧૩ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૬ વળાહે વળાહ વનૌલક- (૫૭૪) ૧૫ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૭ યોપ્પા- (૧૧૭૨) ૧૭ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૮ પ્પસૈળ ગાછ- (૨૨૩૪) ૨૨ અક્ટૂવર ૨૦૧૫

૪૦૯ વૈષ્ણવી મગવતી- (૨૦૯૯) ૦૧ નવમ્વર ૨૦૧૫

◌ ◌ ◌

◌ ◌

◌

---

[1] વમસાળક સમૈમે

૨

મૈથલીિક કિછુ સમકાલીન ઉપન્યાસક વવિધિ સ્વરૂપ

:મમહા

સમકાલનિ મૈથલીિ ઉપન્યાસક વષિયમે યન્યાસઁ પહનિ સમકાલનિ શબ્દક અર્થ સ્પષ્ટ કરવ આવશ્યક અછ। સમકાલીનક અર્થ હોઇત અછિ ઈ-કાલ અથવા વર્તમાન-કાલ। મુદા ઈ કાલપ્પાહ્ન ઁ સવયં પરવિર્તનશીલ અછિ ઈ સતત્ આગૂ

दसि घुसकैत रहैत अछि ई-कालखण्डक अन्तिम क्षणकेँ त अखुनका क्षण सेहो कहि सकै छी अर्थात कहबाक तात्पर्य ई जे आब अखन जे उपन्यास लिखल गेल अछि, मोटा-मोटी वएह समकालीन उपन्यास छी।

मुदा प्रश्न उठैत अछि जे ऐसँ पहिने उपन्यास लिखल गेल, ओहो त ओइ समयक समकालीन उपन्यास छल। अर्थात् प्रत्येक युगक उपन्यास ओइ युगक समकालीन उपन्यास छी।

मैथिली साहित्यमे उपन्यास विधाकेँ समृद्ध करबामे अनेक उपन्यासकार शिल्प, शैली एवं कथानक व वातावरण आ तथा सामाजिक परिवेशक वर्णनमे सफल भेल छैथ।

डा. विदिति एकटा प्रयोगधर्मी उपन्यास 'मानवकल्प' २००८ ईमे प्रकाशित करौलैन। मैथिली उपन्यास लेखनक पारम्परिक प्रवृत्तिसँ भिन्न ऐ उपन्यासमे एकटा गामकेँ पात्र बनौल गेल अछि। आन उपन्यासक नायकक उमेरसँ बहुत बेसी उमेर ऐ उपन्यासक नायक अछि। ऐ उपन्यासक नायकक उमेर तीन सए पचास वर्ष अछि।

बनवासी जनजीवनपर लिखल मैथिलीक प्रथम उपन्यास 'विप्लवी बसेरा' छी तँए मिथिलाक द्रविड समुदायक उत्थानक कथा 'कोसलिया' उपन्यासमे अछि। एकटा अनाथ कन्याक संघर्ष आ ओकर आत्मबलक यात्रा 'करपुरिया' उपन्यासमे केने छैथ। संयोग आ चमत्कारक अपूर्व समन्वय विदितिजी 'वधिकरी' उपन्यासमे देखने छैथ। साहित्य आ समाजक बीच जे खाधि बनल अछि तेकरा भरबाक लेल एकटा समाधान प्रस्तुत केने छैथ 'परिक्रमा' उपन्यासमे माए-बापक पीड़ाकेँ नीक जकाँ उभारि ओकर एकटा समाधान प्रस्तुत केने छैथ- 'केकरो कहबै नहि' उपन्यासमे।

शोभा ठाकुरक २००८ ईस्वीमे प्रकाशित उपन्यास 'भारती' अछि। मंडन मिश्रक पत्नी आ कुमारिल भट्टक बहिन भारतीसँ सम्बद्ध अनेको किंवदंती आइयो मिथिलामे सुनल जाइत अछि। शोभा ठाकुर ओइ विद्यान दम्पतिमि सुनल जाइत अछि। शोभा ठाकुर ओइ विद्वान दम्पतिकि आधारपर बनल आलोच्य उपन्यासक लेखन केलैन अछि। ऐ उपन्यासमे ऐतिहासिक तथ्यकेँ गौण राखि अपन कल्पनाकेँ आधार बनौलैन अछि। मुदा उपन्यासक लेल जे तदनुकूल वातावरण चाही तेकर निर्माण दसि लेखिका सचेष्ट छैथ आ उपन्यासक भाषा, शब्दक चयन आ ठाम-ठाम दार्शनिक मंथन युक्त व्याख्या सभ ऐमे सहायक भेल अछि। एकरा दार्शनिक दम्पतिपर केन्द्रित उपन्यासमे दर्शनक ह्रास रहब स्वभाविक अछि।

मुरारि मधुसूदन ठाकुरक 'देवव्रतक आत्मकथा' २०१० ईस्वीमे प्रकाशित भेल। ऐ उपन्यासक नायक भीष्म पितामह छैथ, जिनकर आदि देवव्रत छेलैन। आत्म कथात्मक शैलीमे लिखित ऐ उपन्याससँ एकर लेखकक गहन अध्ययन आ विद्वता सहजे परिलक्षित भऽ जाइत अछि। महाभारतक गम्भीर अध्ययनक पश्चात लिखित ऐ उपन्यासमे लेखक वातावरणक निर्माण ओयुगक अनुकूल पात्रोचित भाषाक प्रयोगमे अत्यन्त सफल भेल छैथ। देवव्रत अर्थात द्वापरयुगीन महाभारतक एक आबाल ब्रह्मचारी जे अपन पितृ भक्तिमे आजीवन ब्रह्मचारी रहबाक तथा हस्तिनापुरक चक्रवर्ती सम्राटक पदपर नहि बैसबाक भीषण प्रतिज्ञा करबाक कारण महामना भीष्म नामसँ विख्यात भेल। अविवाहित रहबाक कारणें पुत्र प्राप्तिकि सम्भावनो केना होइतैन। तथापि ओ भीष्म पितामह संज्ञासँ आइयो इतिहासमे प्रसिद्ध छैथ। ओहन भीषण प्रतिज्ञाक प्रतिफल की भेटलैन एक जन्मेसँ आन्हर, दोसर पुत्रक मोहमे बनिको आँखिसँ अन्ध अपन एक भातिजकेँ राजगद्दीपर बैसा ओकर अन्न खाइत रहलाक दुआरे उद्दण्ड दुर्योधन, दुःशासन सदृस पौत्र सबहक द्वारा होइत अनीति-अत्याचारकेँ आँखि मुनि सहैत रहबाक लेल बाध्य होमए पड़लैन। की भीष्मक प्रतिज्ञा

કનવ ૩ચતિ છેઐન? કી પ્નતિ઼્ગા કનવાક સમ૨ ભવિષ્યક પ્નતિ ળે સુપ્ય-સમ઼ૃદ્ધિ માનસકિ શાન્તિ પ્નાપ્તકિ કલ્પના છેઐન સે શુઊ઼ન ભૈઐન?

મધુકાન્ત ઝાક 'સ્વેદળીવી' ૨૦૦૮ ઈસ્વીમે પ્નકાશતિ ભેલ। સ્વેદળીવી વસ્તુત: મીલ મળદૂન સમુદાયક ળીવન, ઓકન સામાળકિ પનદિ઼ૃશ્ય, ચનિ઼ત–સમસ્યા, ઓકન નાગ-વનિાગ, ઓકન અપેક્ષા-ઉપેક્ષાક કથા કહૈત અછિ। માત્ક્સ ળર સ્નમકિ વ઼્ગક અધકિાન લેલ અવાળ ઉઠૌને નહૈથ આ તકન વાદ 'દુનયિ઼ાઁક મળદૂનએક હૌઉ'ક ળે વશ્વિવ્યાપી નાના પડલ છલ તાર પનપિક્ષ્યમે કાન્ય કેનહિાન પ્નવાસી મૈથલિ શ્નમકિ વ઼્ગક ળીવનક આનોહ-અવનોહક તાની-ભનનીસઁ ઉપન્યાસ-કથા વૂનલ ગેલ અછિ। આ સ્વેદક અમૂલ્યતા સ્થાપતિ કએલ ગેલ અછિ। અપન વષિય-વસ્તુ, વસ્તિ઼ૃત શ્રુલક એવં સંવેદનાપૂન્ણ ભૌગોલકિ દ઼ૃષ્ટકિ સંગે એકન ભાષા, શલિ઼્પ, અભવ્યિક્તિ કૌશલ પ્નવાહપૂન્ણ ગદ્ય ઓન સમ્પ્રેષણીયતા એકના હ઼ૃદયગ્નાહી આ ચપિ સ્મનણીય વના દૈ છૈ।

અન્તમે કહિ સકૈ છી ળે ળહિયાસઁ સમકાલીન ઈતહિાસ અસ્તતિ્વમે આએલ અછિ તહિયાસઁ પ્નત્યેક ઉપન્યાસકેઁ ઐતહિાસકિ ઉપન્યાસ કહલ ળા સકૈત અછિ। કાનણ કોનો નીક ઉપન્યાસમે સામાળકિતા આ સમકાલીનતા દુનૂ નહૈ છૈ।

સન્દર્ભ સૂચી :-

૧ ઝા વદ્યિાનાથ 'વદિતિ' માનવ-કલ્પ, પ્નસ્તુતિ પ્નકાશન દુમકા- ૨૦૦૮

૨ ઝા વદ્યિાનાથ 'વદિતિ' વપિ઼લવી વસેના, દુમકા- ૨૦૦૯

૩ ઝા વદ્યિાનાથ 'વદિતિ' કનપુનયિા, પ્નસ્તુતિ પ્નકાશન દુમકા- ૨૦૦૯

૪ ઠાકુન વીણા, ભાનતી, મથિલિ નસિન્ચ સોસાઈટી કવલિપુન, દનભંગા- ૨૦૦૯

૫ ઠાકુન મુનાનિ મધુસૂદન, દેવવ્નતક આત્મકથા, નવનત્ન ગોષ્ઠી દનભંગા- ૨૦૧૦

સમ્પન્ક :

પતિ- શ્ની વકિાસ કુમાન ઝા

ગ્નામ : ઘોઘનડીહા

પત્નાલય : ઘોઘનડીહા

ળલિા : મધુવની

ઐ નચનાપન અપન મંતવ્ય ગગાળેશદનાવદિહેચોમ પન પઠાઉ।

१कामिनी कामायनी- लघुकथा-भागमंती २**लल्लन कुमार कामत**- किछु विहनि आ लघु कथा

१

कामिनी कामायनी

लघुकथा

॥ भागमंती ॥

बड़ दिनक बाद आइ ओइ घरक खुजल पुबरिया खिड़की दिस भानो दायके धियान गेल। झाड़ीसं घेरल, गुल्युही सं भरल, सुनूजक फनीनमे उमकैत, फूल पत्तीसं खिल खिलाइत एक तुलसी घर। डबडबा गेलन्हि आंखि, हुलकय लगलै अतीत।

तहिया ई इलाका एकदम्मे सुन मसान छलै। रातिके कोन गप्प, दिन दहाड़ो ओमहर जेबा क नाम प कोढ़ हहरि उठैक। रिक्शा वाला सेहो उमहर के यात्री के मूड़ी डूला क नकारि दैक। महारानी पूल के अहि पार पंचानाथ के पूजा करय बला लोक, जनी जाति सेहो झुंडे मे आबेथ, आ पुल के ओहि पार करी दूरस्थ सती स्थान के पूजा करि क हाली हाली घूरि जाइथ।

मुदा शहरीकरणक के तीव्र आँधी बसात के चपेट मे एला के कारण इमहरका जमीन तहिए सं मोटगर दाम मे बिकै लागल छल।आ लगिये क गाम के महेश बाबू दू कट्ठा जमीन किनी क अहि ठाम चारि टा कोठरी, किचेन आ बाथरूम बना क बाकी जमीन के जाली स घेर देने छलैथ।कंपाउंड मे छहर द, आम लताम, शरीफा, नेबो, केरा के गाछ संग जाली प लतर लत्ती सब मे लुधकल करेल, सजमनि, घेरा लगावा देलखि। जे से तोड़ि क ल जाय, आ महेश बाबू खुश होथि, केकरो काज त भेल हमर परिश्रम।

हुनक सामाजिक पोख्ता पाटन घर बड़ नीक खेती पथारी भरल पूरल पैलवार क दालान सेहो शहरक टुनमुनिया कोठरी के ड्योढ़ स बेसिए छलैह। तखन रातिबिराति, कोर्ट मुकदमा, डाक्टर अस्पताल क अतेक लागल प रातिकटवा लेल एक टा अपन छत त भ गेल छल।

ओहि घर क चौखटि पि तहिया स नियमित दीप जरलै, जखन महेश बाबू के बड़का पोता क विवाह दुरागमन भेल।कनिया के सीथ मे सिंदूर पड़िते मानू महेश बाबू के कहिया कत्त स कतेको अटकल काज सुनैट गेलैन। परिवारिया वाला जमीन के केस जीत गेला, छोटका बाबा विधानसभा के चुनाव मे भारी बहुमत स जीतियो घोसीत भेला, तेसर पोता के आर्मी मे नौकरी लागि गेलन्ह, सत्तरह साल स संतान के बाट तकैत, सुनूज्ञ देव के अरघ प अरघ चढ़बैत बेटी के बेटा भेलैह, गाय के बाछी भेलय, सासुर मे कन्या सुमंगली मानल गेली।चतुर्थी के परात दुरागमन करि किनिया के ल आयल गेल। ददिया सौस पहिनहि स मुनादी करवा देलखिन जे सब गोटे हुनका भागमंती नाम स सोर पाड़ैथ। हुनका होयन्हि कि पोत्पुतौह के माथ प राखी कि हाथ मे राखी, कि करेज चीर क ओहि मे स्थापित करी ली।दाय नौड़ी सब सेहो भागमंती भौजी अथवा बौआसनि कहनाए प्रारम्भ करि देने छल।

કનયિા અપન ગામ મેં ઇંટર મે પઢૈત છથિ, ત હુનક નામ કાલેજ મે લખિા ક કછિૂ દનિ સાસુઅો અપન ખવાસનિ, જનસીયા મુનેસના સંગ આવી ક રહલખીન। મુદા અોતત ગામ પ ગાળ કાળ મે વડ હલ્ળ હોમય લાગલ છલૈ। વડ સોચવિચિનિ કિ પૈલ વાનક સવસ અનામતલવી પ્રમામી વૂલન પોસો કે ગામ સ ઉઠા ક શહરમિ ગાખ દેલ ગેલ। છોટકા કકાક વેટા શ્રીહરે જે મેટ્રિકિ કે પરીક્ષા ગામ કે સ્કૂલ સ દેને છલ, મેડકિલ કે તૈયારી કેલેલ આઇએસી મે નામ લખિા અોહો ડેરા પ જાકય રહય લાગલ। વડકા પોતા કતતો વાહર નૌકરી કરૈત છલ।

એક ગોટ નવ નકિ્શા કીન ક કની દૂરસ્થ પડોસી લકડી કે દોકાન વલાકે જાતજિ વપિનિ કે અહી શત્ત પ દેલ ગેલ જે કનયિા કે કતતો જેવા એવા મે કોનો અસિસિાની નૈ હોય , તેકરા વાદ મોન હો ત જાડો કમા લૈ। કછિૂ પાય મહનિવારી સેહો વત્હિ દેલ ગેલ અોકર। ડેરા પ કે સવ ઇંતજામ કરા ઘિરવૈયા નશ્ચિંકીર જ ગેલ છલા । કનયિા સુજાસનિી અપન દયિર સંગ કઅોલેજ જાઇથ, આ રકિ્શા હુનકા ઉતારિ શ્રીહરિ કે કઅોલેજ છોડૈત।ઘૂરતી કાલ મે સુજાસની એસગરે રકિ્શા સ જાઇથ ।શ્રી હરી ઉમહરે સ ટ્યૂશન યલિ જાયથ , કખનો કોનો સવારી નૈ જોટૈય ત હુનકા પૈરે ડેરા પ આવય પડૈત।

શ્રી દેખવા મે સોનગર પોરગર ગોર આકર્ષક યુવક મૈયો ક તેક લજકોટર જે સદખિન યડ ખસૌરે , યરતી મે સટલ , ગુમ સુમ ગુમસુમ, મુદા મેહનતયિા વડા।આ ત।દિનિક દમિાગક ઘસિાઇ સ સ્થાનીય મેડકિલ કઅોલેજ મે અપન સ્થાન નશ્ચિયતિ કરવા લેલન્હિ।

વરસ છૌ માસ લાગૈ મેડકિલ કઅોલેજક પરમિાન્જતિ વાતાવરણ શ્રી કે વ્યક્તિત્વ કે યો માંજ કિ દર્પણ સન યમકા દેલકેન્હ। સીના તનિ ગેલય, પોશાક વદલિ ગેલય આ આવ કેકર નજરિ એહેન છલ જે હુનકા પ નહિ અટકૈ।

લોકલ જેલા ક કારને હ઼ોસ્ટલ નહિ લેને છલથિ।

સુહાસનિી કે ખુશી કે ઠેકાન નહિ, કતતો જાઇથ ત હુનકા હોન્હિ શ્રી હુનકા સંગ રહૈથ।હુનકો જનિ માથક સદ્દુર ઘટ કિ આય આંગુરક જ ગેલન્હ, કેશ સ તેલ ઉડિ ગેલ, પારલર કે અરી લગા કેશ છોટ કરવા , જૌ છલિવય લાગલ છલિ। એક દૂ વેર ઘરવલા લગ જા વડકા શહરક હાવ ડીવ લ લેને છલહિ। ગામક વાખ છુટવા સંગ , અંગેજી કે દૂ યારિ શવ્દ સેહો વાજિ લઇત , આવ આ માથ તૂકા ક નૈ, માથ ઉઠા ક નયિોક જ યલૈત અછિથ , ત આર સુન્દર લગૈથ। વ઼ષિય સેહો કોનો તેહને સન છલ જાહિ મે કોનો તરહક દમિાગ નહિ લગાઅોલ જાયછૈ।હુનકા કોન નૌકરી કે વેગરતા છલ, આ ત અોહનિા સખ સ પઢિ રહલ છથિ , દુસ્રુ કુલ મે પહલિ સ્તરી , જે કઅોલેજક મુંહ દેખલેન।

પતિદેવ દૂ તીન માસ પ અવૈત છલા। આવ હનિક વીએ કે અંતમિ વરખ યલિ રહલ છલ , પરીક્ષા દ માઘ ફાગુન મે ઇ અપન ઘરવાલા કે ડેરા પ જાય વાલી છલહિ।

ઇમહર શ્રી કતેક વેર મહલિા કઅોલેજ સુજાસનિી સંગ જાયત અવૈત રહલા , મુદા આવ હુનકો લાલ દુપટ્ટા અપન ગરિહ મે વાંધી લેને છલ। એના વુઝ પિડલૈ જે કયિો હુનક ટકિો કાટ કિ મહલિા વદ્યિાલય કે સોઝા ઠાઢ નીમક ગાછ ક નીચા ગાડ દિને હોય ।

કતેક વેર અપન કલિાસ છોડઅિો ક અો અોતય ઠાઢ રહૈથ। સખી વહનિપા કે ટોટ સુનૈત, મને મન મુસકેત સુહાસનિી કખનો ગાજ , કખનો મનો કામના મંદરિ, કખનો ટાવર ઘૂમય જાયથી, કખનો સનિમિા ।અપન પતિ કે લખિલ યટ્ઠિી હુનકા પઢિ પઢિ કિ સુનાવૈથ, આ હુનક આંખિ મે ઉપજલ ઇરખા દેખિ અંતસ કરય યરિ મુિગ્ય હોઇથ।

ગામ સ નીન દનિ કશ્નિ નૈ કયિ઼ે, મશ્યાઁ ક હાથ ક વનઙ કછુ વ઼િશેષ પકવાન ઙ ક આવિ ળાયાપીસી કે શહન મે મોન આનાય ન આ રમહન ઉમહન કે સપ્પી વહનિપા સ ગપ્પ ઙડ઼ા ક , સ્ટેન વપિનિ કે નક્નિશા સ દુ યાની દનિ ઙઙ ગામ ઘુનિ આવેથામાનો દાય સ આગા પ્પસિ કિ ગપ્પ કનય વાઙી વ઼ઙહ સ્નેહઙિ સ્નની છઙહિ। એહને સુપ્પક સુવ઼ાસનિ મઙયાનાઙિ સઁગ ળનિગી કટિ નહઙ છઙ। ગોનિયા નાના કે વડ઼કા ઙનની, આવા ળાહિ , સેહો સમય કે સુગંયનિ વના નહઙ છઙ।

માદવ઼ાનિ માસ આવિ ગેઙ ન વનપ્પા વૂનિ, સઁગ કાની કયોન મેઘ અપન ઙટ છટિકોને , આકાશ મે છનિહના પ્પેઙાય ઙાગઙાએક ગોટ એહને મનોનમ સાઁહ્મે ળપ્પન આ અપન વનંડા મે અસગાન વૈસઙ ગનળશ્ન મેઘ આ યમકૈન વળિ઼ની કે ળુગઙ વંદી દેપ્પ નહઙ છઙ, હડ઼ાન આ શ્ની કે વળવય઼ ઙઙ હુનક કોડની દસિ વઢ઼ઙ। કુન્સી પ વૈસઙ , દુનૂ ટાંગ ટેવુઙ પ યેને પેટ પ ધૈઙ કોનો કનિાવ મે ડૂવઙ આ મુસૈક નહઙ છઙ। હનિકા દેપ્પિ કિછુ ઘવડાયઙ સન, કછુ અનસોહાન માવ઼ના કે શકિાન સન હૃટ દની કનિાવ વંદ કનિ દેઙથી। સુહાસનિી હૃપટઙપ્પીન ", કયિહેન પઢ઼ે છઙહૂ, ળે હમાના દેપ્પિ કિ વન્ન કનય પડ઼ઙ, એહેન વૈનિ હ્મિ મ ગેઙહૂ"।મુદા શ્ની હુનકા કછુ ળવાવ઼ નૈ દ ક , હુનક હાથ હૃકિૈન કોડની સ વહના ગેઙ છઙથી।

ઈ સામાન્ય઼ સન ગપ્પ સુહાસનિી કે વડ઼ વ઼્યથનિ કનિ દેને છઙ ।દાઙિ મે કછુ કાની નળનિ અય઼ઙન્હિ। મનિ નાનિ મોન મે માનિ માનિ કે ગપ્પ વાઈસ્કોપ મે દેપ્પાઆઙ દૃશ્ય઼ ળકા ઘૂનયાનિ નહઙ। પનાન મેને શ્ની ળઙપાન કનિ કિ કઆઙળ યઙિ ગેઙ , મુદા આ વહન્ના કનઙ આછોન પ પડ઼ઙ નહઙ , અપન કૉઙળ સેહો નહિ ગેઙ। પીસી ગામ ગેઙ છઙ , આ મનસિયા કે માછ આનય઼ ઙઙ પડ઼ા ક આ શ્ની કે કોડની પઈસી ટેવઙ પ નપ્પઙ આકન એક એક કનિાવ હાડ઼ઙ।રમહાન સૂઘઙ આમહાન કનપ્પિઙ , કનનો કછુ નૈ હાથ અય઼ઙન્હિ।

દોસન નેસન દનિ સેહો પ્નયાસ કયઙ, મુદા અહૂ વેન નનિન્થક। મોને મોન ડેકાને ઙાગઙ કોનો આટો ળકા અવ઼શ્ય઼ છઙ। મુદા કેકન ?

રમહન દુન્ગા પૂળા કે ઙઙ કઆઙળ મે નાનીઙ ઘોસનિ કનિ દેઙ ગેઙ ।ઘનવાઙા પનસૂઁ આવિ નહઙ છઙ।દૂ નીન દનિ મે આ હુનકા સંગ હુનક ડેના પ યઙિ ળિય઼નિ।

ગામ સ ળનના કનિ ડેના અય઼ઙ।મોનકા ટ્નેન છઙ। યીળ વ઼ોસ્ન કોનો વેસિ નૈ , માન્ન દસ દનિ ઙઙ એક ટા અટૈચી આ એયન વૈગ કાસ્ટી છઙ। દુનૂ માઈ ગપ્પ કનૈન કનૈન કોનો સમાન આનય઼ ટાવન દસિ ગેઙ , મનસયિા માનસ વનવય઼ મે ઙનિ નપ્પન આ એક વેન સ્ટેન હુઙકો માનઙૈન શ્ની કે કોડની મે। નાપ્પ પ નપ્પઙ એક ટા મોટકા કનિાવ હાથ મે ઙઙથી ।સવ઼ૂન મેટ ગેઙન। ચુપ યાપ સવ઼ૂન સહનિ અપન કોડની મે આપસ આવી ગેઙ।

દસ દનિક છુટ્ટી , વડ઼ વ઼િઙિવ સ વીનઙ। પનિ કે હુનક મુનુહાયાઙ , મુંહ દેપ્પિ આશ્ય઼ય઼્ય઼ હોય઼ન્હ કિ મેઙ ળા નહઙ અછિ ? કછુ ન કહૂ, ડાક્ટન સ ગપ્પ કની।મુદા આ કહૈથ પનીક્ષા કે ડન ગાના મોકિ નહઙ અછિ। "છોડુ પનીક્ષા , નીક્ષા અહા કે કોમ્ન નોકની કનવા કે અછિ" ।પનિ કે અહિ ગપ્પ પ આ સહ્મનિ કિ વળૈથ " અનેક મેહનન અકાનળ મ ળાય઼ન, માન્ન દૂ માસ આન છૈક વસ"।

છઠી કે પનના કે ઉપનાંન , નવ઼ંવન કે કાની મોઙાય઼મ મોઙાય઼મ

સાન નૌદ મે કઆઙળ પ્પુળઙ ન , યાનૂ દસિ કશિોન , યુવા કવિઙઙ પ્નસ્ફુટનિ હોય઼ ઙાગઙૈઙાઙ પયિન, પનયિાન , કંયા પ હુઙૈન પન્સ , પૈન મે ઝંયકા એડ઼ી કે સૈડીઙ, સપ્પી સહેઙી ડગિયા ડગિયા ક અપન હયિ કે ઉઙઙાસ પ્નકટ કનિ નહઙ છઙ।છાન્ન

समाज संग शत्रिकषिका सब सेहो जेना प्रसन्नताक महाकाव्य वांचि रहल होयथु। एना बुझी पड़ैक जेना वसंत आबि कि ओहि ठाम नाचि रहल छल ।

मुदा सुहासिनी के आंखिकें मीया क करि किती गेल कछिआओन कहवा लेल व्यग्र छल। ओ गुमसुम , मुन्हैल सन कक्षा लग उद्विग्नता स प्रतीक्षा करि रहल छली। सखी सब टोकैत करेन्ह "ठिठाठी मोन पड़ी रहल छथीन, तै हमार सखी अतेक उदास , आ 'के पतिया लय जायत ने मोरे प्रियतम पास" ।कियो कहे 'कोन काज छल पढ़ के , हम रहितौ त करितो नहि अबितौ , प्रियतम के छोड़कि, पढ़ाई जाए चूल्हीमें"। सुहासिनी के कछु नै सुनाई पड़ल, व्याकुल हिरणी सन ओ ओहिना इम्हर उम्हर ताकैत रहली।

ओहि दिन ओ लाल चूड़ा लाल आंगी , लाल चूड़ी , आ लाल सैंडील पहिरने छलहि, । हठात हुनक नजरि लाल पहिर वेलवेटक बाली कन्या प टिकल। "पुष्पा" मस्तिष्क मे नाम अनुगुंजित होमय लागल। ओकर पछोर धेलथी। तैत कओलेजक प्रथम घंटी बाजि चुकल छल , सब कियो धड़ धड़ धड़ धड़ करैत अपन अपन कक्षा दिसि बढ़ै लागल छल ।कक्षास मे प्रवेश करय स पहिनहि ओ पुष्पा के पाछा स हाथ धयिलक "एक तोरा स बड़ जरूरी गप्प करबाक अछि"। प्रथम वर्षक छात्रा अपना सोहा अंतिम वर्ष के छात्रा के देखि घबड़ा गेल।

ओ ओकरा खीचने खीचने बाथरूम दिसि सुनसान मे ल आयल। ओकर लिखल चिट्ठी , ओकर छोटो देखैत बाजल "प्रेम करब के बड़ सख छली, पूरा कओलेज के देखबओ तोहर करिदानी"। आ अपन पैरक सैंडील उतारि ओकरा प पेरेवर अपनायी सन टूटि पड़ल। पहिने त पुष्पा सकपका गेल छली , मुदा बादमे ओहो सीना तानि अड़ि गेली, की करबै। तखनेक सेंडलि ओकर आंखि पि लागे आ ओ वक्षस्थलि किटैत मीया खसि पड़ल।"मया गे मया" एक त महा भयौन धबनि सि सम्पूर्ण बाथरूम काँपि गेल। सुहासिनी प जेना अनेको चुड़ैल असवार छल, ओ मीया खसल पुष्पा प लात घुस्सा के बरसा करैत, जांति जांति के गारि पढ़ि रहल छल। ओकर पीठ प कखनो ठंडा मारलकै 'राक्षसी" ओ मुंह उठौलक बड़का नीड़ संग तीता मैडम छलहि। वेसुध पुष्पा के उठा पुठा क बगल के क्लीनिक ल गेल , जतय ओकरा मृत घोसीत करी देल गेल छल। करी काल मे पुलिस आबी क सुहासिनी के अपन जीप मे बैसा क ल जायत रहैत।कियो अनेरे घंटी टनटना देलकै। यारहू काल सोर सराबा , हो हल्ला होमय लागल छल ।कतेको प्रकारक बाता लागायल जाय लागल।आनन फानन मे सूचना बोर्ड प एक सप्ताह के छुट्टी के नोटिस चपिका देल गेल छल।

माली दाय हुनके द्वार प बैसल छलहि, जखन पुलिसक गाड़ी पपियाति , घघियाति गर्द उड़बैत हुनका दरवज्जा प आयल छल।बरदी बाली पुलिस सब के देखि मालर यारहू दिसि जेना घनगर अनहार भ गेल छल , सबहक करेज बेतहासा धुकधुकै लागल , हे विधाता , ई कथि आयल हमरा दुआरे। जीपक सोझा सुनी शती कोठरी सा बहरैल। पुलिस के गप्प सुनी ओ तुरंत ओकरा जीप मे बइसी क जायत रहल। ओहि जिमम पड़ल सन्नाटा के चीरैत इम्हर "दाय गे दाय आब हम केकरा की मुंह देखैबै गे दाय' घिघियाती , अस्पस्ट स्वर स कहैत बुढ़ नीसी ओहि ठाम बेहोस भ क खसि पड़ल छलहि ॥

२

ललन कुमार कामत

सम्पर्क-

ललमनियाँ, मरौना, सुपौल।

गोल इंग्लिश गार्डेन निर्मली।

किछु विहनि आ लघु कथा-

अप्पन माए-बाप

सुनील जीकेँ दूटा सन्तान। सौरभ दस सालक जे पाँचमा कक्षामे आ छोटका सुमन छह सालक जे पहिलामे मेडोना स्कूल, कटहल बाड़ी दरभंगामे पढ़ैए। स्कूल घरेक लगमे छै। सुनीलजी अकाशवाणी दरभंगामे नौकरी करै छैथ।

हम सुनील जीक दुनू बच्चाकेँ घरपर जा ट्यूशन पढ़बै छी। हुनकर कनियाँ मंजू हरदिम बच्चाक कपड़ा-लत्ता, बर्त्तन-बासन आ आनो-आन घरक काम-काजमे ओझराएल रहै छथिन। सुनीलजी नौ बजे भोरे निकलै छैथ अपना काजपर। दू बजे खेनाइ खाइले अबै छैथ। फेर रातिमे दस बजे घर अबै छैथ।

चारि बजे बेरू पहरमे हम पढ़बैले सभ दिन जाइ छी। आइयो गेलौं। कनीएकालक पछाति मंजू चाह लऽ कऽ हमरा लग एली। चाहक कप पकड़ा बच्चाक बदमाशीक उपराग कम मुदा काजक बेस्तताक पोथी खोलि छिनेमे संसारक परेशानीक पाठ पढ़ि गेली। फेर काजमे एना लागि गेली जेना टाँग-पर-टाँग नै पड़ैए।

छुट्टीक समैमे सुनीलजी सेहो घरक काम-काजमे बेस्त रहै छैथ। दुनू गोटेक परिवारक प्रति समरपन देखि हमरा बुझाइत रहैए जे ऐ छोट परिवारक अलावे हिनका सभकेँ ऐ संसारमे किछु ने छैन। अचानक गामसँ हुनका फोन एलैन जे हुनकर पिताजी सिरियस छथिन। सुनीलजी ऑफिसमे छुट्टी लेल दरखास दऽ गाम विदा भेला। गाम जा पिता जीक संग माएकेँ सेहो संगे दरभंगा आनि लेलैन। बाबूजीकेँ अस्पतालमे डाक्टरसँ जँचबौलैन। डाक्टर कहलकैन-

"अहाँक पिताजी केँ टीबी भऽ गेलैन हेन।"

"आब की उपए अछि डाक्टर साहेब?" सुनीलजी पुछलखिन।

"नौ मासक दवाइक कोर्स अछि। देख-रेखमे समैपर दवाइ चलबए पड़त।"

सुनीलजी, ऑफिस जा अदहा दिनक छुट्टी छह मासक लेल दरखास लगा माए-बापक सेवामे लीन भऽ गेला।

कटहल बाड़ी स्थित नीज अवासपर माए-बाबू रहए लागल। मुदा सप्ताहमे दू दिन अस्पतालमे जाए-आबए पड़ैत।

શ્રાવ મંજૂ પહિનિસઁ વેસી પરેશાન નહ્ય લાગલી। એક દિન મંજૂક વાત્તા હમરાસઁ ભેલ। વજલી-

"કી કહૂઁ સર, એક્કો-રતી મન નૈ લાગય જે એ ઘરમે નહિ।"

હમ પુછલિયૈન-

"કહિ, કી ભેલ?"

"જેતવે ઘરક કાજ તેતવે વચ્ચિા-પુતાક કાજ શ્રા તૈપરસઁ માય-વાવૂજી માથક વોઝ વનિ ગેલ છૈથ। શ્રપને જે છૈથ શ્રો એકોટા કાજ નૈ સમ્હારૈ છૈથ।"

હમ કહલિયૈન-

"શ્રહિના હોઇ છૈ, કામ-ધામ તઁ સત્ત દિન લાગલે રહૈ છૈ। મુદા માય-વાપક સેવા સેહો એ જીવનમે જરૂરી છૈ।"

મંજૂકેં જેના હમર ઉપદેશ એક્કો-રત્તી નૈ સોહેલૈન। તમતમાઇત વજલી-

"માસ્ટરજી, હમરા શ્રહાઁ નૈ સમ્પિાઉ। શ્રહાઁકેં દુનિયાઁ-દારીક થાહ નૈ ચલલ શ્રછિ શ્રપ્પન। સાસુ-સસુર હમર શ્રોહેન શ્રદરાગર નૈ છૈથ।"

મંજૂક ઈ વાત સુનિ હમ સ્તબ્ધ નહિ ગેલૌ। મુઁહક વાત મુહેંમે નહિ ગેલ। સંચ-મંચ વચ્ચા સત્તકેં પઢવય લાગલૌ। મુદા મંજૂ વડવડાઇત રહલી-

"ચૌવીસ ઘણ્ટા કાજે-કાજ। સત્ત શ્રઢવૈય વલ। એ ઘરમે રહૈક મન એકોરતી નૈ હોઇત શ્રછિ। જેતવે ઘરક કામ-કાજસઁ માથા દુખાઇત રહૈય શ્રા તૈપર સઁ વુઢવા-વુઢયિા માથ ભુકવૈત રહૈ છૈથ।"

તહિ વીચ વુઢ઼હાક ખૌંખી જોર-જોરસઁ સુનિ પડલ। ખૌંખી કખૈન-કખૈન વઢ઼લ જડ કહૈર-કહૈર કડ વાજય લાગલ-

"કનહૈલીવાલી, સુનીલક માય, કેતય છી? શ્રોહૂ વુઢયિાકેં જેના હમરા લાગ નીક નૈ લાગૈ છૈ। જેના હમ કાટેલ દૌડ઼ છથિ।"

વુઢ઼હાક હસ્તીક શ્રવાજ સ્થિર સુનિ પડલ-

"કનિયાઁ છી હે, લહાનવાલી, એ સૌરજક માર? વાપ રે વાપ! કોઇ ને સુનૈય।"

મંજૂ વડવડાઇત ઘુમલી-

"મરવો ને કમૈય વુઢા જે હમર સભિક વોઝ હટૈત। જાનિ ને કોન પાપક શ્રલ છી।"

સુનીલ જીક ઘરક ઈ કથા રોજક ભડ ગેલ। એક દિન શ્રનાયાસ હુનકર ઘરક હવા એકદમ શાન્ત વુઝ્ના ગેલ। છાતક ચૌકીપર જાજીમ વછ્લૌલ છલ। દુનૂ વચ્ચા શ્રોઇપર શ્રાવિ પઢૈલ વૈસલ। હમ પલાસ્ટકિક કુરસી ખચિ વૈસલૌં। કનીય કાલ પછાતિ મંજૂ પલેટમે જલપાન શ્રા કપમે ચાહ લડ મીઠ-મીઠ ચાલમિ મુસ્કયિાઇત એલી। હમરા વુઝાયલ જે શ્રાઇ મંજૂજી તતિપતિ છૈથ। ઇચ્છા ભેલ જે એ ખુશીક કારણ જાની। પુછલિયૈન-

"ભાભીજી, શ્રાઇ શ્રપને વડ઼ ખુશ નજૈર શ્રવે છી, કી વાત છથિ?"

"हँ, खुशी कहिने हएब। आर हमर अपन माए-बाबू गामसँ एला अछि। खुशी तँ सोभाविक छै।"

मंजुक ई बात सुनि खुशि तँ भेबे केलै जे माए-बापक दर्शनसँ सोभाविक खुशी जे हेबक चाही से हिनको भेलैन। मुदा दुख सेहो भेल। दुख ई भेल जे आखिर सासु-ससुरक विषयमे जे मिथिलाक दर्शनमे बानी छल बतौल गेल छै जे अपन माए-बापसँ बढ़ि कऽ सासु-ससुर होइ छै से हिनकामे कहि नै छैन।!!!

सम्पर्क- लछमनियाँ, सुपौल।

स्कूलक फीस

मानस तीन सालक छल तहिये माइक देहावसान भऽ गेलैन। पिताजी गामक मुखिया छथिन। समाजक कहलापर दोसर बिआह केलैन। नवकी कनियाँ थोड़-बहुत पढ़ल-लिखल, सोभावशील, बियानू आ सुन्दर भेलैन। तीन सालमे मुखिया जीकेँ दूटा सन्तान और भेलैन। चन्दन आ नन्दन। नन्दनक जन्मक छह मासक पछाति मुखियाजी स्वयं भगवानक प्रिय भऽ गेला। एकबेर फेर परिवारसँ लऽ कऽ गाम भरिमे शोकक लहरि पसैर गेल।

मुदा मुखियाइनि शोकक सागरसँ बाहर आबि तीनू बच्चाकेँ लालन-पालनक हेतु फेरसँ अपन दिन-दुनियाँमे लीन भऽ गेली। अपना सुख-दुखसँ बच्चा सबहक बरबैर लार-प्यारसँ पोसैमे कोनो कसैर नै छोड़ै छथिन।

मानस आब दस सालक भऽ गेल। प्राइवेट स्कूलक चारिम कक्षामे पढ़ैए। महिनाक पाँच तारीख तक सभ बच्चा अपन-अपन फीस जमा करैए। लेट-सेट छह तारीख धरि विलम्ब शुल्कक संग जमा करब आवश्यक अछि। नै देने नाओ काटि दैल जाइ छै। मानस प्रत्येक महिना अतिरिक्त शुल्कक संग जमा करैत छल। मुदा ऐ मास सेहो नै भेलै। पीठपर पोथीक बैग टाँगि, अनजान चालिमे डेग उठबैत, एम्हर-ओम्हर तकैत स्कूल दिसि बढ़ि गेल। घरसँ लगभग एक किलो मीटर भरि पूब स्कूल छै। बाटेमे मानसक मन फीपर गेलै। आइ तँ छह तारीख छी। मुदा फीस तँ अछि नै। सरजी की कहता की नै।

असमंजसमे पड़ल मानस स्कूलक हाता धरि पहुँच गेल। हातासँ आगू नै बढ़ि बाहरेमे ठाढ़ रहल। किछु काल पछाति आपस घूमि गेल। अगल-बगलमे ढबरा-डुबरीमे पहिल मानसुनक बर्खासँ पानिक जमाव सभकेँ देखैत, बेंगक टरटरेनाइ आदिकेँ देखैत-सुनैत लीन भऽ गेल।

ओम्हर स्कूलमे सरजी हाजरी भरैला। पछाति मानसक अनुपस्थितिपर बजला-

"मानस आइ नै एलै?"

एकटा बालक कहलकैन-

"आएल तँ छल मानस, साइत बाहरमे हएत।"

सरजी-

"आइ फेर फीस नै अनने हेएत।"

फेर बएह बालक बाजल-

"सरजी, अहाँ कहब तँ हम मानसकेँ बजा आनब।"

सरजीक ध्यान मुद्रापर गेल। बजला-

“जो, आ कहि दिहिन जे आइ जँ शीस नै लऽ कऽ आएत तँ दोबर शीस लगतै।”

बालकक नाओ सौरभ अछि। सौरभ स्थानीय बेगानीक बेटा छी। सौरभ केर घर स्कूलक बगलेमे छै। मानससँ मित्रता छै। मानस केर प्रति सहायताक भाव सेहो नहि छै। सौरभ बदि। भेल मानसकेँ तकैत। बाहर जा एम्हर-ओम्हर नजरि दौड़ौलक। मानसपर केतौ नजरि नै पड़लै। कनी और आगू बढ़ल। देखलक एकटा गाछक छाँहमे ठाढ़ किछु देखि रहल अछि। देखिते चकित कऽ सोर पाड़लक-

“मानस, की करै छी। एम्हर आ।”

मानस अबाज सुनि-ताकि लग आबि बाजल-

“आइ हम स्कूल नै जेबौ। सरजीकेँ नै कहिहेन जे मानस गाछ तर अछि।”

सौरभ-

“जौं तूँ स्कूल नै जेमें तँ एतए की करै छीहि। घरेपर रहितेँ।”

मानस-

“तूँ नै बुझै छीहि। घरपर जँ रहब तँ माइक सैकड़ो प्रश्नक उत्तर देबए पड़त। घरमे पाइ-कौड़ी नै छै। माए कहलक जे दू-चारि दिनमे पाइ देबौ।”

सौरभ स्कूलक नियमसँ अवगत अछि। जौं छह तारीख तक शीस जमा नै हेतै तँ स्कूलसँ निकालि देल जाइ छै। ई सभ सोचि मानसकेँ कहलकै-

“स्कूलक नियम नै बूझल छौ जे केते कड़ा छै। माएकेँ नै कहने छीहि?”

मानस किछु बाजल नै, आ ने किछु सुनलै। चुप रहल। सौरभ घूमि कऽ स्कूल चलि गेल।।।।

सम्पर्क- ललमनियाँ, सुपौल।

દસલ્યાયિા નોટ

હમ અપન રહાકામે ળાનθ પહ્યાનθ પેન્ટર છેθી। પેન્ટગિમે વેદનેસઁ θાાવ નપ્પૈક કાનામ, માડ઼ી-સઁ-માડ઼ી યતિ્ર પθ મનમિ વનેનાર હમના θθ શ્રસાન છθ।

એકટા θઙોટયિા દોસ્ત છθ ધીનેન્દ્ર, કપિાના દુકાનદાન શ્રા ળાતકિ મ્રુમહિના વપ્પત-કુ-વપ્પતપન હમ એક દોસનકેઁ મદૈત નસ્રિવાન્થ માવસઁ કનૈ છેθી। એક દોસનકેઁ વશ્રિદ્ય દોસ્ત માનૈ છેθી। θક સના હમના પે દોસ્તીકેઁ દેપ્ય હૈનત નહૈ છθ। હૈનત પે પ્યાતપિ નહૈ છθ ળે હમન દોસ્ત ધીનેન્દ્ર મુમહિન ળાતકિ છθ। કેતે θગ કહૈતો છθ-

"કી નૌ, મુમહિનસઁ દોસ્તી કેθઁહ, ઊકસઁ નહિઁ કહી મુમહિની દાઉમે શ્રઁસθહ નઁ વુહ્યિહૈન।"

મુદા પે વાતપન હમ કોનો કાન-વાત નૈ દર છેθી। એકદનિ ળહનિા હમ નગ-વ્નશક હોના θઽ કઽ કેતૌ કાળપન વ્રદિા મેθ છેθી શ્રાકાળિનક કાકા દθાનપન સઁ યકિૈન કઽ વળા કહθથિ-

"નૌ, સુન કહૈ છયિો નૂઁ ળૌ મુમહિનસઁ દોસ્તી કેθઁહ નઁ મુમહિની દાઉ એકોટા સપ્પિθઁ શ્રાકનિૈ?"

હમના ળળ્રિાસા મેθ શ્રા પુછθપૈન-

"કાકા, મુમહિની દાઉ કેકના કહૈ છૈ હૌ?"

"હમ ળઁ વુહતિૌ નઁ હમહી ને તોના સપ્પા દૈતશ્રિો? θક વાળૈ છૈ ળે મુમહિની દાઉ વડ઼ પેયદા હોર છૈ।"

હમ મનવિાટ ગુન-યુન કનૈત એθી 'મુદા ઈ કોન દાઉ છી? ળે θક સના દોસક સંગ દેપ્ય પુછૈત નહૈએ? સે નૈ નઁ, શ્રાર હમ દોસેસઁ પે વષિયમે પુછ્રિ કઽ નહવ।

દુપહનયિાક નૌદામે હમ કોસી પ્નોળેક્ટક દેવાθપન એકટા વ્રળ્રિાપન θપ્પિત નહી સંયોગસઁ તપ્પને પાછૂસઁ મોટન સારકθિક સીટીક શ્રવાળ પપિયિાએθ। હમ નગક ઙળિાર્ન વનવૈમે મગન નહી। મને-મન તામસસઁ દેહ વહનિ મઽ ગેθ। 'કે એહેન દુષ્ટ છી ળે ઙસ્રિટન્વ કનૈએ?' મુદા તાકવ કેના? ળૌ તાકવ નઁ ઙળિાર્ન પ્યનાપ મઽ ળાએત। θગθ હાથ છોડ઼િ તાકθી। શ્રવાક્ નહિ ગેθી। વ્રએહ મુમહિન દોસ ધીનેન્દ્ર છθ। દોસ્તીમે કની-મની શૈતાની નઁ યθતિ નહૈત છθ। મન્દ મુસ્કાન યેહનાસઁ સેહો છુટθ। તૈવીય ધીનેન્દ્રક નળૈન પેન્ટગિપન પડ઼θ શ્રા પ્નશંસા કનએ θગθ। મુદા હમન પ્નશંસા, ળે હમને મુઁહપન વાળθ ળાર્ત શ્રછિ! નીક નૈ θગθ, શ્રંગ્નેળીક એકટા મુહાવના મન પડ઼ િગેθ, 'નેસ્ટ ઑત વ્રન્સ θંનેθ્સ' શ્રન્થ શ્રછિ, 'શ્રપ્પન પ્યયાતસિઁ સંતુષ્ટ નૈ નહક યાહી, ' હમ વ્રનિમ્નતાસઁ કહθપૈન-

"દોસ, શ્રહાઁક પે પ્નશંસાસઁ હમ પ્યુશ નૈ છી। હમ માત્ન એકટા છોટકા કθાકાન છી, પ્યનયા-પાનયિθવા θθ ઈ કાળ કનૈ છી।"

ગૈવીય હમના મન પડ઼ઉ 'જુમહિની દાઉ'

પુછઉપૈન-

"દોસ, ઊક કહૈપ ળે જુમહિની દાઉ વડ઼ નીક હોર છૈ, હમનો સપ્પિા દશ્રિ"

ધીમેન્દ્ર પહિઉ ń હમના વાળપર ધયિાન નૈ દેઉક મુદા વેર-વેર ળદ્દિ કેઉાપર સોચપ઼ ઉાઉ, કનીકાઉ સોચિ કઽ વાળઉ-

"દાઉ ń શ્રહઁકેં સપ્પિા દેવ મુદા વદઉામે કછુિ દશ્રિ પડ઼ળ।"

હમ પુછઉપિહન-

"કથી દેવપ પડ઼ળ? વાળૂ।"

ધીમેન્દ્ર સ્ઠેર વળઉ-

"શ્રહઁકેં પ્કટા દસ-હળારિયા નોટક પેન્ટિગ વના કઽ હમના દશ્રિ પડ઼ળ।"

હમ વળઉ-

"નૂપૈશ્રાક નોટ। દસ-હળારિયા શ્રા પઁચ-હળારિયા કી, ળૌ પેન્ટિગસઁ વનાપ્વ ń કપિ નૈ? ળનૂર વના દેવ। કનીપ દનિ નૂકૂ સ્ઠુરસળ઼િ઼શ્ર દશ્રિ ń છાપિ દેવ।"

પેન્ટિગ હમર ઈશ્વરીય દેન છઉ, વેદોસઁ શ્રનેક પ્રકારક ધતિ્ર પાઉ઼ છેઉ, સ્કૂઉમે સરાળીકેં પાર-દોસ્તક શ્રા સંગ પઢ઼ૈળ ઉડ઼કિયો સવહક। વાવૂળી સધારણ કસિાન છઉ, હમર પઢાર ઊઉ પર્યાપ્ત પ્પ્રયા નૈ રહૈક કારણ શ્રધ્યયનક સંગ ઉપાર્જનક માર્ગ શ્રપનૌને રહી। શ્રપ્પન હમ નતિમિઉ શ્રા શ્રાસપાસક ક્ષેત્રમે ળાનઉ-પહચાનઉ ધતિ્રકાર છી। કામક વ્યસ્તતા હનદિમ રહૈપ। પે વ્યસ્તતામે દોસક ઊઉ દસ-હળારિયા નોટ વનેરાર હમ સાસ્ઠે વસિૈર ગેઉ।

પ્કદનિ હમ નગર સેઠક દોકાનક વગઉમે સારન વોર્ડ વનવૈત રહી, તપ્પને ધીમેન્દ્રક શ્રવાળ સુનિ પડ઼ઉ। કામ રોકિ ગદ્દી ઉગ હમ સસૈર કઽ પ્ઉ, તહિ સમૈમે શ્રાઉરો કછુિ ળાનઉ-પહચાનઉ વેપારી સભ પહુઁચઉ છઉ। ધીમેન્દ્ર ળોરસઁ સભકેં સુના કઽ હમના કહૈપ-

"કી દોસ, હમર કામ નૈ હોત?"

હમ ચૌક ગેઉ ળે હમના કોન કામ કહને છૈથ। પુછઉપૈન,

"કોન કાળ?"

"વ્પહ દસ હળારવઉ।"

હમના મન પડ઼િ ગેઉ દસ-હળારિયા નોટ। મુડ઼ી હલિા સ્વીક઼તિ દૈત કહઉપૈન-

"શ્રોઽ હઁ, હેત, હેત, કછુિપ દનિ શ્રૌર નૂકૂ।"

सेठजी नोटक गड्डी गनैत-गनैत, येशमाक बीतने-बीतन, नूपैश्वाक बात सुनि हमरा हँसि लागए लागल। हम चुपचाप, काम करए लगलौं। हमरा एल पछाति, धीरेन्द्र सर आ बाजल, जे 'ई पेन्टर हमर दोस छी, हमरासँ दस हजार टाका लेने अछि, केतेक महिना भऽ गेल, मुदा टाका मांगलापर, आइ-काल्हि करैत, समए काटैए।'

समए बीतैत गेल, छह महिना-साल भरि बाद, एकटा दोसर बेपारीक दोकानपर दस हजारक लेन-देन भेल। हम दस-हजारिया पेन्टिंगक नोट समहि टाड़ि देलौं। मुदा हमरा लागल पछाति धीरेन्द्र सर आ बाजल जे साँचेमे ई हमर नूपैश्वा लेने अछि।

ऐ बातक दू बरख भऽ गेल। जेतए-तेतए लोक सभ हमरा कहए लागल-

"धीरेन्द्रक नूपैश्वा कहि ने खुड़िया दऽ छथि। दोस-बोनक पैसा एते-एते दिन रखनाइ नीक बात नै छै।"

पहिल नँ हम असमंजसमे रही मुदा, जखन पता चलल जे धीरेन्द्र दस-हजारिया पेन्टिंगक बदलामे दस हजार टाका लोक सभ आ बाजल खुड़िए, हम अवाक् नहि गेलौं। केतेक गोटेकेँ समहेबाक परियासो केलौं ई बात, मुदा जेकरे कहिऐ बएह, बुड़बिक बनबए लागल-

'कहाकार भऽ कऽ एहेन नीयत लोहर नै हेबा चाही।'

हम चिन्ति भऽ सोचए लगलौं, 'ई दोस्त नै छी, दुश्मन छी, एते भाड़ी खेलामे पड़ा देलक। केतएसँ एते टाकाक ओरियान करब।' हमर ओकाति हजार टाका जेना लाख टाकाक के बराबर छल। बिना जमीन-जथा बेचने दोसर उपए नै छल।

कनीए दिनक पछाति, पंचैती भेल, पंचक फैसला भेल, कटि-मारि कऽ दू हजार सुरहकक संग बारह हजारक देनदारी ठहरौल गेलौं। लोक सभ बाजए नै देत छल। जीवनमे एहेन बेजजती कहियो नै भेल रहए। दस दिनक समए देल गेल।

टाकाक ओरियान नै भऽ रहल छल। कोनो गुंजाइश नै देखि, एकटा उपए सूझल, जमीन बेचु नै नँ, भरना लगाउ। एक बीघा जमीन मैयारीक खाँट पड़ल छल। बेचब नँ खेर कीनल नै हएत, से नै नँ भरने लगा देबाक चाही।

हजार टाकाक दरसँ बारह कट्ठा खेत भरना लगेलौं, नूपैश्वा लऽ कऽ दोसक घर पहुँचलौं। दलानपर कियो नै छल असगारे बैस गेलौं, दोस्तीनीकेँ खबैर गेल। कनीकालक पछाति, दोस्तानी एक हाथमे पानिक लोटा आ दोसर हाथसँ घोघ तानि, अदहा मुँह झाँपल अदहा देखाइत, आगूमे पानि बढ़ा देलि। लाजसँ नँ हमर देह बहिन छल, सोचने छेलौं जे दोसकेँ कहिब कहबनि, मुदा की करब। चोटपर दोस्तीनी पड़ि गेलि। भाड़ीए मनसँ कहलयैन-

"दोसकेँ बजाउ आ कहियन जे अपन टाका लेत।"

कनी काल पछाति धीरेन्द्र हँसैत-हँसैत दलानपर एल। ई हँसी, हमरा हनियाएल घापर, नूनक लेहेन जकाँ लागल। चुप चाप नूपैश्वाक गड्डी देलिएन, गनिल पछाति खैरसँ हमरे हाथमे धराऽ देलैन। हम चुपे छेलौं मुदा धीरेन्द्र बाजल-

"दोस, याद करू। अहाँ हमरा कहने छलिऐ ने जुमहिनी दाउ सिखिबैल? यएह छलि जुमहिनी दाउ।"

एकबेर खेर दोसक ऐ बनाबसँ हम चकाति नहि गेलौं।!!!



(एक कथाक पुनर्लेखन)


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लगन

गोनर बेदेसँ संगीतक प्रेमी अछि दिवाली, दशहरा, सरोसती पूजा आ आनो-आन अवसरपर गाममे नाटक होइत पराएल अछि मुदा गोनरकेँ ओइ समाने मौका कमे भेटए मौका ओकरे पहिल बेर भेटए जे ओइमे चन्दा दइए गोनरक पिता साधारण किसान छैथ। गोनरक पिताक दोस्त देवन पण्डित गाममे कीर्तनियाँमण्डली चलबै छैथ, तँए लोकसभ गबैया कहै छैन। गोनरकेँ संगीतसँ लगाउ देखि पिताजी केतेक बेर कहै छैन-

“गोनर, दोसक ऐठाम जा कऽ घड़ी-घण्टा हरमुनियाँ कहि ने सीख अबै छँह?”

आइ स्कूलमे शनिचराक पछाति सिरजी गोनरसँ गीत गबौलैन आ खुश भऽ खुब प्रसंशो केलैन। स्कूलसँ अबैतकाल बाट भरि गोनर सोचैत आएल जे आइ देवन काकाक घर जा हरमुनियाँ सीखनाइ शुरू करब।

दुपहरियाक टहटहाइत रौदमे, सभ लोक घरे-घर सूतल-पड़ल, आराम करैत रहए मुदा गोनर, देवन पण्डितक घर विदा भेल। देवन सभ दिन बेरूपहरमे अपन एकलौता पुत्र हरियाकेँ संग कऽ साज-बाजक संग रियाज करैत रहैथ। आब गोनरो संग दिअ लगलैन।

सप्ताहे दिनमे गोनर हरमुनियाँक रीढ़ आ पटरीकेँ नीक जकाँ परेख लेलक आ सा रे गा मा पा पहिलुक धुन बजबए लगल। ई आकस्मिक आ तेज शुरूआत देखि देवन सोचमे पड़ि गेल, 'हमर हरिया बेदेसँ साज-बाजक संग खेलैत आएल तैयो अपन चरि एतेक नै सीख सकल।

देवनके डाहक संग पक्षपातक भावना सक्कत भऽ आ अगिला दिनसँ गोनरकेँ दुआरि पहुँचते, साज-बाज समेटि रखि दैत रहए। एक-दू दिन गोनर जाइते रहल मुदा ओहिना घुमि कऽ आबि जाइत रहए। गोनर उदास तँ होइते रहए मुदा हताश आ निराश नै भेल, तँए संगीत सिखैक जीद्द मनसँ नै गेल।

साँझ पड़ैत सभ दिन, देवन चाह-पान करैले बजार जाइ छल। ई बात गोनर जनैत रहए, तँए साँझ होइते देवनक घर पहुँच कऽ, हरियाकेँ फुसला कऽ साज-बाज बजानाइ सीखए लगल। मुदा ई सीखनाइ तीने-चारि दिनक पछाति स्थाइ रूपे बन्न भऽ गेल। जइ दिन देवन पण्डित दुनू छौड़ाकेँ साज-बाज बजबैत सिखैत देखि गेल। कड़गर झटकारो दुनूटाकेँ लगेलखिन आ समटा साज-बाज समेटि कऽ संदूकमे बन्न कऽ देलखिन।

कहल जाइए जे समए आ लोभ केकरो रोकल नै करैए ई बात साँच भेल। गोनर ऐ दसे दिनमे जे किछु सिखने रहए बएह रामबाण भऽ गेल आ सक्कत अभ्यास बनि, तारक गाछ सन बढ़ए लगल। कहल जाइए जे कोनो तरहक विद्या आ हुनर सिखैले निर्धारित समए नै होइए जेतै-तेतै, जखैन-जखैन गोनर सुर आ तालकेँ साधैत, गुनगुनाइत धूनमे रमल रहै छल। मुदा साँझ-भोर संगीतक अभ्यास केनाइ अपन दिनचर्या सेहो बना लेलक। ठेल-ठपड़ा आ गाममे जखन केतौ भजन-कीर्तन आकि

नाच-गानक आयोजन होइत रहए तँए गोनर बड़ी तत्परतासँ भाग लैत रहए। तेँ गाम भरिमे लोकसभ गोनरकेँ गवैया कहए लगल।

गामक सटले शहर अछि। शहर छोट सन अछि सुप्पी सम्पन्न लोक आ पैघ-पैघ बेपारीसँ लक हाकिमो-अफसर सभ रहए रहै छैथ। गोनरकेँ शहरमे केकरोसँ जान-पहिचान नै अछि। एकटा डाक्टर सुरेन्द्र नारायण नामक गण्यमान व्यक्ति छथि जे महिला कौलेजमे हिन्दीक सरकारी प्रोफेसर आ संगे-संग महिला कल्याण संस्थानक अध्यक्ष सेहो छथि। संगीतक प्रेमी रहैक कारण साल-साल सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन करैत रहै छैथ। प्रोफेसर साहैबक एगो बेटीकिया संगी जे दिल्लीमे नाट्य आ कला विभागक प्रोफेसर छैथ ओ रिटायर भऽ अपन पैतृक शहर पहिले बेर एला, तँए ऐबेरक आयोजन बड़ जोर सोरसँ भऽ रहल अछि। शहरक गण्यमान लोकसभ जे ऊँच-ऊँ पदपर कार्यरत छैथ, सभकेँ कार्यक्रममे शामिल होइक वास्ते न्योँत पठाएल गेल। तँए ऐबेर टीवी सीरियलक जानल-मानल कलाकार जीतुलाल जोहर सेहो हिस्सा लऽ रहल छथि।

कार्यक्रमक दिन लगिचाइत गेल। शहरमे जगह-जगह बैनर-पोस्टर लगाएल गेल जे अमुख तिथिकेँ सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन जानल-मानल संगीत प्रेमी सबहक सहयोगसँ भऽ रहल अछि। मुदा गोनरकेँ ऐ बातक कोनो खबैर नै भेल छेलै।

शहरमे स्टेशन चौकपर बबाजी पानबला अछि। हुनिका दोकानपर गामक बेसी लोक पान खाइले साँझ-बिहान जाइत-अबैत रहैए। बबाजीकेँ बूझल छैन जे गाम भरिमे गोनर सेहो नीक गवैया छी। मात्र दू दिन बँचल रहए, जब गोनर अनायास बबाजीक पानक दोकानपर गेल, बबाजीकेँ मनमे उहकलैन आ जनैक जिज्ञासा भेलैन जे गोनर ऐ कार्यक्रममे भाग लेने अछि की नै। पुछलखिन-

"की रौ तूँ ऐ कार्यक्रममे हिस्सा लेने छेँ किने?"

गोनर जिज्ञासु भऽ बिनम्रतासँ पुछलक-

"नै यौ, के ई कार्यक्रम करबै छै यौ?"

बबाजी बूझि गेला जे गोनर भाग नै लेने अछि तैयो आस्वासन दैत बजला-

"अच्छा सुनह, हम प्रोफेसर साहैबसँ बात करै छी।"

बबाजी मोबाइल लऽ कऽ नम्बर मिलौलैन आ बात करए लगला-

"हेल्लो सरजी, प्रणाम! हम बबाजी पानबला बजै छी।"

ओमहरसँ जे जबाब पुछने होन्हि, मुदा बबाजी फेर बजला-

"एकटा नवयुवक बड़ नीक गवैया छैथ।"

कनीए कालक पछाति फेर बजला-

“लड़का तँ लोकल छैथ मुदा एक नम्मर गवैया छैथ।”

कनीए काल रूकि कऽ फेर आग्रहक स्वरमे बबाजी बजला-

“सर! देखियौ कनीए, मौका देल जेबक चाही।”

कनीकाल पछाति फोन डिसकनेक्ट भेल। गोनरकेँ बबाजी कहलखिन-

संस्थापक चलि जो, अतए बजेलको हैं। पहिने गीत गववेतौ तब चुनाव होतौ। अपने चलि जो।”

गोनरकेँ बसंती साइकिल रहबे करए, मुदा बूझल नै छल जे संस्थान छै कतए! तैयो पुछैत-पुछैत विदा भेल। शहरक दछिन, बान्हक कछेरमे उजरा रंगक मकान, अगुआरे-पछुआरे नाना प्रकारक रंग-बिरंगक फूलक गाछसँ सजल-धजल फुलवाड़ी अछि। सड़कक कातमे साइनबोर्डपर लिखल अछि 'महिला कल्याण संस्थान'। गोनर साइकिल तीयाँ धँसा संस्थानक प्रांगणमे पहुँचल, जैठाम दुचक्कियो आ चरिचक्कियो गाड़ीक पार्किंग लागल छल। बुझना गेल, ए जे सभकेँ-सभ वीआइपी पहुँचल अछि। कातमे साइकिल लगा, एकटा रूममे लोक सबहक सुनगाम देखि भीतर घूसल। प्रोफेसर साहेबक नाओं पूछि गोनर लगा गेल आ परिचए देलकैन। परिचए दइते वैसैक आदेश भेटलै। गीत गौनहार, नाच केनहार आ आनो आन कलाक प्रदर्शन केनहार सभ रहए आ रिहलसल होइत रहए। कनीए कालक पछाति गोनरसँ गीत गववौल गेल, गोनरक सेलेक्सन नै हेवाक तँ कोनो सवाले नै रहए, आश्वासन भेट गेलै जे एकटा गीत गोनरो गौत।

गीतक आयोजन शुरू भेल। एक-सँ-एक वीआइपी सभ पहुँचल छल। विशिष्ट अतिथि सभकेँ वैसैक वेवस्था मंचपर आ मंचक अगल-बगलमे कएल गेल रहए। ई आयोजन सार्वजनिक चंदा चिट्ठासँ होइत रहए जइमे बड़का-सँ-बड़का पुजीबला लोकक चिरिया-पुता सभ भाग लैत रहए। रविनाथ सहाय, जीतुराज जौहर आ स्थानीय समिति अधिकारी सभ मुख्य अतिथिक रूपमे मंचपर आसीन भेल रहैथ।

गायन, वादन आ नृत्य ई तीनु संगीत छी एकर प्रस्तुति रसे-रसे हुअ लगल। हर-एक आदमी जे बाजि सकैए ओ गाइवो सकैए कारण तँ गायन बोलियेक एकटा उन्नत रूप छी। मुदा नव-सिखुआ गवैया लेल समान रूपसँ निर्देशन आ नियमित रूपसँ अभ्यास जरूरी होइत अछि, जे बेसी-सँ-बेसी बच्चा सभमे अलोक नै छैन। गायन एकटा एहेन कला छी जइमे स्वरक सहायतासँ संगीतमय ध्वनि निकालल जाइत अछि। सुवेवस्थित ध्वनि जे रस दैत अछि आ रसक अनुभूति करबैत अछि वएह संगीत कहबैत अछि। ऐ कलाक प्रदर्शन युद्ध, उत्सव, प्रार्थना आ भजनक समए मनुष्यक द्वारा गावन आ बजावनक माध्यमसँ कएल जाइत अछि। जे गाबैए ओकरा गवैया, जे नाचै ओकरा नचनियाँ आ जे बजबैए ओकरा बजनियाँ कहल जाइए।

प्रोग्राम होइत-होइत अढ़ाइ राति बीति गेल मुदा अखन धरि गोनरकेँ मौका नै भेटल। बखत केर पहिया बढ़ैत गेल आ राति दू बाजि गेल। विशिष्ट अतिथि सभ घर दिसि विदा भेला, दर्शको सभ रसे-रसे जाए लगल, तब जा कऽ गोनरक नाओं एलन्स कएल गेल। गोनर स्टेजपर आएल। गोनरक मुँहसँ राग लयात्मक रूपसँ वेवस्थित भऽ संगीतरूपी लहैर समुद्रक ज्वार जकाँ पसरए लगल। जइ प्रस्तुतिमे कलाक प्रदर्शन हुअए आ जइ कलाकेँ संगीत या मनोरंजन कहल जाए, गोनरके कंठसँ वएह सुरीलि कंठध्वनि, ओहिना उत्पन्न हुऐ लगल जेना वाद्ययंत्रसँ सुसज्जित ध्वनि निकलैए।

जे सभ प्रोग्राम छोड़ि, घर दिसि विदा भेल रहए, ऊहो आबि ठमैक गेल, डेग पाछू घीचए लगलै, सभ आपस आबए लगल आ जेकरा घरपर अबाज जाइत रहए, ओकरो जिज्ञासा हुअ लगल जे के एहेन गवैया छी आ केतक छी? कछु विशिष्ट



मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मेहमान सभ सेहो घूमि आएल छल। गोनरक गीत पछाति सभ हिनका लग बड़ा परिचए-पात पुछए लागल आ प्रसंशा सेहो करए लागल। गोनरकेँ आशा जागल जे कहियो हिनका मदैत करैथ।

जौं शुद्ध मनसँ भगवानकेँ याद कएल जाए तँ भगवानो कोनो रूपमे दर्शन देबे करै छथिन। वएह भेल, जीतुनाथ जौहर ढ़ोढ़ी कलाकार, गोनरकेँ आश्वासन देलकैन-

“दू महिना बाद अहाँ दिल्ली आउ, ओतए संगीतक ऑडिसन छै।”

गोनर हर्षित भऽ गेल आ जोर-सोरसँ ऑडिसनक तैयारीमे लागि गेल।।।

बेटी

सोमनाथजी म्युनिसिपल आँफिसमे पैंतीस वर्ख नोकरी केला पश्चात रिटायर भेला। जीवनमे एक्को पाइ नजायज नै ग्रहण केलैन। सोमनाथजी हृदैसँ पवित्र, शालीन, विनम्र आ दयाक भाव हिनका मुख-मण्डलसँ झलकैत रहैए तँए हिनकर विशेषता बेकतिगत संज्ञा (उपनाम) मे बदैल गेलैन आ घरसँ लऽ कऽ आँफिस धरि लोक सभ हिनका सोनाजी कहि बजबए लगलैन।

सोनाजीकेँ तीनटा सन्तान, बड़ दुइटा लड़का, जेठ बबलू तैपर सँ डबलू आ सभसँ छोटकी बेटी उषा छैन। उषाक विआह नीक घरमे, इंजीनियर वरसँ कऽ सम्पन्न केलखिन। जमाइबाबू मुजफ्फरपुरमे नोकरी करै छथिन ओतै सरकारी अवास भेटल छैन, तइमे उषा संगे रहै छथिन।

जेठका बेटा बबलूक करिस्तानीसँ दुनू परानी सोनाजीक मन बेथित छैन। बबलू इंजीनियरिंग करैत दिल्ली गेला मुदा हरियाणाक एकटा लड़कीक प्रेममे फँसि अपन जीवनक नैयाकेँ कठिन कऽ लेलैन आ ओतै प्रेम-विआह कए बसि गेला।

डबलू नागपुरमे बैंक मनेजर छथिन। हिनको विआह भेला पश्चात पत्नी संगे ओतै रहै छथिन। साले एक-आध बेर कहियो-कभार घर अबै छथिन।

सोनाजी अपन जीवनसंगिनी ममताक संग बुढ़ाड़ीक पहिया जेना-तेना घीचि छैथ। बेटा-पुतोहुक सुख हिनका नसीब नै होइ छैन मुदा उषा, बेटी रहितो, बेटा जकाँ देखभाल करैए। सप्ताहमे एकबेर आबि कऽ जरूर देखि जाइत अछि। उषाक सोभाव पतिजीसँ विरासतमे प्राप्त भेल छैन तँए मधुर आ एक दोसरसँ अनुकूल छैन।

सोनाजीक ई पैंसैठम वर्ख चलि रहल छैन। नोकरीसँ रिटायर भेल रहैथ तँ शरीरसँ स्वस्थ छला आ भरोसा छेलैन जे आगुओ नीके रहता, मुदा मनुष्य तँ मात्र इच्छा करैए, होइ तँ अछि वएह जे ऊपरवलाक मरजी रहै छैन। उषाक विआहक पश्चात दुनू बेटा दू जगह अपन-अपन घर बसा लेलकैन। सोनाजी दुनू परानीकेँ चिन्ता-फिकिर घेरि देलकैन। जीवन-शक्ति शिथिल भऽ गेलैन। हाथ-पएर ढील पड़ि गेलैन। आँखिक रोशनी कम गेलैन। कानोसँ कम सुनाइ दिअ लगलैन। पाचनतंत्र गड़बड़ा गेलैन आ दिल-दिमाग सेहो दुरुस नै रहलैन। मतलब बुढ़ापा हिनकर समस्या बनि गेलैन।

बेटा सभ कहियो-कभार फोन घुमा हालचाल करैत रहै छैन। दोस्त-यारकेँ- दवाइ दोकनदार आ मोहल्लाक डाक्टर- सभकेँ फोन घुमा कहैत रहैए जे माए-बाबूकेँ देखैत रहबै।

सोनाजी दुनू गोटेकेँ ई परिपक्व अवस्था अछि जइमे ज्ञान, स्थिरता आ अनुभव छैन आ तहिक सहारे दुनू बेकती जीवन रूपी नैयाकेँ आगू घीचि रहल छैथ। ओना तँ बुढ़ापा भार नै होइत अछि मुदा जब खाएल-पीअल काया जड़जड़ भऽ जाइए आ परिवारक सदस्यक संग तालमेल नै रहैए तँ परीवारमे अपन उपयोगितापर विराम लगि जाइत अछि। वृद्ध लोकैनकेँ ऐ अवस्थामे सहायता आ सहयोगक जरूरत पड़ैत छै। जे बेटा-पुतोहु अपन वृद्ध माए-बापकेँ सेवा करैए वएह जीवनक

ઉત્તમ કર્મ કરૈત એહેન પૂત જે માએ-બાપકેં જીવતિ છોડ઼િ દૈત અા અપનેમે મગન રહૈ અો અોહને કાજ કરૈત જેના યથિા-પુત સભ વાઉક નેતસઁ મહઉ વના ઉઠૈ અા તૈપર ગાછક ડાર-પાત ગાડ઼િ કઽ વગીયા વના ઉઠૈ અા ખુશી મનવૈત રહૈ મુદા જેકર ધ્યાન અછિ અો અપન જીવનક ઉત્તમ કર્મ કરૈસઁ પાછૂ નૈ હટૈત।

અાજુક સમાજમે વેકતી અપન વાઉ-વય્યા સંગ પરિવારમે રહઉ રહૈત। માએ-વાપ, વૃદ્ધ-પુરાનક માન-મર્યાદા, તેકર સેવા સત્કારકેં સાસ્ત્ર વસિૈર જાઇત। અોહેન મનુષ્ય હરદિમ પાવૈક પાછૂ વેહાઉ રહૈ મુદા જે હનિકા ઉગ પ્રાપ્ત વસ્તુ અછિ અોકર ઉપયોગ કરનાઇ નૈ જાનૈત। વૃદ્ધ-પુરાન અનુભવી હોઇ છૈથ તેં હનિકા સમાજમે વિશિષ્ટ સ્થાન ભેટવાક ચાહી। જે વેકતી વૃદ્ધયક સેવા નૈ કરૈ, અો કાયર હોઇ અા કાયર ઉગ કાઉપનકિ વયિારક યનવાન અા મહા ગપ્પી હોઇત અછિ। જાવે ધરિ વૃદ્ધયજનક અા જુવકક સમાજમે તાઉમેઉ અા સમાનતા નૈ વૈસત તાવે ધરિ સમાજિક અા સાંસ્કૃતિક કાજમે સ્થરૂપસઁ વકિાસ સમ્ભવ નૈ ભઽ સકત।

સોનાજી શરીરસઁ કમજોર હોઇત ગેઉ અા વેટા પુતોહુક સહાયતા અા સહાનુભૂતિ ઘટૈત ગેઉૈન। અાવ હનિકા યાદ અાવૈ છૈન અો દનિ, જઇ દનિ વેદ્રૂકયિા સભકેં ઢેહુનાપર ઉઠ ઘોઅા-છુ મઉઉ-છુ કરૈત પઢ઼ૈત રહૈથ 'ઉવ ઘર ઉડે અા પુરાન ઘર ખસે। ખૈર જે એ હાથસઁ કરૈ અોકરા અોઇ હાથસઁ ભોગએ પડ઼ૈ। અહુ અવસ્થામે સોનાજીકેં રોજ-મર્ડાક સમાન કીનએ વાસ્તે હાટ-વજાર જાઇએ પડ઼ૈ છૈન।

અાઇ સોનાજી સુતિ ઉઠિ કઽ શૌયાઉય ગેઉખનિ। હોનીકેં કછિુ ભેનાઇ રહૈન, વાહર નકિૈઉતૈ યક્કર અાવિ ગેઉૈન અા શૌયાઉયક દરવાજાસઁ ટકરા કઽ ખસિ પડ઼ઉ। મમતાકેં ગસિક અભાસ ભેઉૈન, ભગિકાએઉ અાંગનકેં ડેઉ દેખઉખનિ સોનાજી ઢનમનાએઉ અસહાય અવસ્થામે અોડ઼ગાએઉ અા કહૈર રહઉ છૈથ। મમતા ઘવરા ગેઉ અા ઉઠવૈક પરયિાસ કેઉખનિ, હઉિ-ડોઉ કઽ પુછૈ છથનિ-

> "વવૂઉક પપા! કી ભેઉ! કેના ખસઉિ! વાજૂ ને?"

મુદા કોનો જવાવ નૈ ભેટૈઉૈન। સોનાજીકેં મુહસઁ છર-છર ઉેૂ વહૈ છેૈઉૈન। ઇ દેખિ મિમતા હાય-વાપ કરએ ઉગઉિ, અસગરિ હનિકાસઁ ઉઠિ નૈ સકઉ, દૌગઉ-દૌગઉ દરવજ્જાપર જા હેમરામકેં સોર પાડ઼ઉક, હેમરામ દુનૂ પરાની દૌગઉ અાએઉ, સોનાજીક ઇ દશા દેખિ હાંઇ-હાંઇ કઽ ઉઠા-પુઠા કઽ અોસાર પરહક ખાટપર સુતેઉકૈન। સોનાજીક ઇ હઉાત દેખિ મિમતાક દેહ જેના કેનાક ભાઉરિ જકાઁ કાઁપએ ઉગઉૈન। કી કરવ! અા કેના હએત! કછિુ નૈ સુઝૈ છેૈઉૈન। હેમરામ હડ઼વડ઼ાઇત વાજઉ-

> "કાકી! ડાગડરકેં સોર કરૂ!"

મુદા સ્રોનક ડાયરી સોનેજી રખને છેઉખનિ। મમતાકેં ભેટતિ ને રહૈન। હેમરામક પત્ની મંજૂ વુઝિ ગેઉખનિ જે વેગરતાપર એહેન છોટસન ચીજ નૈ ભેટૈત છૈન, ડાક્ટરકેં વજવૈઉ દૌગઉ-દૌગઉ ગેઉ।

મોહઉઉેમે ડાક્ટર રકવાઉક ઘર છૈન, એઉખનિ। સોનાજીક મુઁહક ઊપરકા દૂટા દાઁત નીચઉ ઠોરમે ભોકા ગેઉ રહૈન તઇસઁ મુહસઁ ઉેૂક ટઘાર ચૈ છેૈઉૈન। ઉપચાર શુરૂ ભેઉ, કનીએકાઉ પછાતિ સોનાજીકેં હોશ એઉૈન। મમતોકેં જાનમે જાન એઉૈન। ડાક્ટર રકવાઉ ઢાઢ઼સ દૈત કહઉખનિ-

> "અપ્પન કોનો ચન્તાિ કરૈક વાત નૈ છૈ, સોનાજીક વ્ઉડપેસર અા સૂગર વઢ઼િ ગેઉ છૈન તઇસઁ, યક્કર એઉૈન મુદા સમૈસઁ જાઁચ અા ઇઉાજ હેવાક ચાહી નૈ તઁ હાર્ટએટેકક સમ્ભાવના વાઢ઼િ સકૈત।"

ડાક્ટર સ્કવાઠ પૂર્તા ઊપ્પા હિતેઆમકેં હાથમે દૈત કહઠપ્પિ-

"ઈ દવાર ળઠ્દીએ ઠऽ કऽ શ્રાઉ, સોનાળીકેં ડેરમે ટાંકા ઠગવએ પડ઼ત।"

તત્કાઊન ઉપયાર ભેઠ। સોનાળીક મન પહિનિસઁ નીક ભેઠ। મમતાક ળીક મન હઠઠક હુઅ ઠગઠ આ વેટા સભકેં શ્ઠન ઠગવએ ઠગઊ। ળેઙકા વેટા વવઠકેં પહિનિ શ્ઠન ઠગ઼ા ઘટનાક ળાનકારી દેઠપ્પિ મુદા વવૂ એ વાતકેં ગંભીરતાસઁ નૈ ઊત કહઠકૈન-

"કેના પ્પસ ગેઊ? વાવૂળી દવાર પ્પાઝા રહૌ કી નૈ? તો કેતએ રહી? દનિ રાત ટેન્શન દસ્મે તૂઁ સવ ઠગઠ રહૈ છેઁહ।"

એ ઘડ઼ીમે વેટાસઁ એહેન તરહક ળવાવ સુનિ મમતાક મોહ ભંગ ભऽ ગેઊન। શ્ઠર છોટકા વેટા ડવૂકેં શ્ઠન ઠગ઼ા સ્થિતિક ળાનકારી દેઠપ્પિ। ડવઠ પતિક હાઠ સૂનિ આસ્વાસન દૈત વાળઠ-

"ચિન્તા નૈ કરૂ। ડાક્ટર સાહેવસઁ હમ વાત કરૈ છી। દીપૂ દોસ્તકેં ઘરપર ભેળૈ છિયૌ ડાક્ટરસઁ દેપ્પા કऽ દવાસ્પો-દારૂ સભ ઠાવ દિતૌ। તૂઁ કાન-પ્પીળ નૈ કરૂ।"

મમતાકેં વંચઠ-પ્પોચઠ આસ નીરાસ ભऽ ગેઊન। પ્પૈર હનિકા સભસઁ આતે આસો નૈ ઠગ઼ેને છેઠપ્પિ। આવ વેટી ઉષાકેં શ્ઠન ઠગેઊન। આન દનિ ઉષા માએ-વાવૂકેં શ્ઠન કરિ હિઠચાઠ ળનૈત રહએ મુદા, આસ માસ્ક શ્ઠન દેપ્પિ ચૌંકઊ આ ઉત્સુકતા પૂર્વક વાળઠિ-

"હઁ માય! હમ સવ નીકે છી, મુદા વાવૂળી કેના છથિ?"

મમતા ળનૈત છેઊ ળે સાઁચ વાત વાતેઠસઁ ઉષા વેસી ઘવરા ળાએત તઁએ વાતકેં છોટ કરૈત વળઊ-

"વાવૂળીક તવીચત ગડ઼વડ઼ા ગેઊ આવિ કિऽ દેપ્પિ ળાહી।"

મુદા ભાભી મન આ અવાળક થડ઼-થડ઼ાહેટસઁ ઉષા ભાઁપિ ગેઊ ળે સાઝા વાવૂળીકેં તવીચત વેસી પ્પરાવ ભऽ ગેઠ અછિ। ઘવરાહેટ તઁ ભેવે કેઊન મુદા સંયમસઁ શ્ઠન રપ્પિ સોચએ ઠગઊ ળે કી કરી! શ્ઠર ઉઠિ કિऽ વેગ હાથિ, કપડ઼ા-ઠત્તા ચોપતએ ઠગઊ આ તુરંત નૈહર અવૈક ઓરયાન કરએ ઠગઠ। ઉષાકેં એક સાઠક વેટી છેઊન તેકરો મુઁહ-કાન પોછિ તૈયાર કऽ એક કાઁપ્પમે વચ્ચા આ દોસર હાથમે વેગ ઉઠા ઓસારપર રપ્પિ ઘર દરવળ્ળામે તાઠ ઠગવએ ઠગઊ। ઘરક ચાભી વસિવાસી પડ઼ોસીકેં દૈત પતિ ઇંળીનિયર સાહેવકેં શ્ઠન ઠગેઠકૈન ળે ઘામ્ટે ભરિ પહિઠિ ડ્યૂટીપર નીકઠઠ છેઠપ્પિ, ઇંળીનિયર સાહેવ શ્ઠન રીસીભ કરૈત વળઊ-

"હઁ વાળૂ, કી વાત અછિ?"

ઉષાક મન તઁ હડ઼વડ઼ાએઠ રહૈન મુદા તૈયો સમ્હરિ કિऽ વળઊ-

"હમ વાવૂળીકેં દેપ્પૈઠ ગામ ળા રહઠ છી, માસ્ક શ્ઠન આએઠ ળે વાવૂળી સિરિયસ છથિ। અહૂઁ સાઁઝ ધરિ વાવૂળીકેં દેપ્પૈઠ આવિ ળાએવ।"

ઈ વાત સુનિ ઇંળીનિયર સાહેવ ચૌંક ગેઠ। પુછઠપ્પિ-

"અપ્પન! અચાનક! કોએ ગામ વદિ ભેઊ?"

તાવે ધરિ ઉષા રિક્સાપર વૈસિ વિસ સ્ટૈમ્ડ દસિ વદિ ભऽ ગેઠ છેઊ। હડ઼વડ઼ાઝા વળઊ-

"अप्पन ओतै गप हम नै करब, बूढ़ि बियैनु जे बाबूजीक हालत ठीक नै अछि।"

उषाकेँ हड़बड़ाहटि अबाजसँ इंजीनियर साहेब बूझि गेला जे आब हिनका कोइ नै रोकि सकैए। भरोस दैत बजला-

"जाएब तँ जाउ, मुदा मनके असथीर केने जाउ, आ बाबू जे पाइ-कौड़ी किछु संगमे अछि कि ने?"

उषा-

"अहाँ पाइक चिन्ता नै करू, हमरा संगमे ओतै पाइ अछि जइसँ, हम गाम जा सकै छी।"

इंजीनियर साहेब बात टोहियबैत पूछि देलखिन-

"पाइ केतएसँ लबलौं अहाँ? बजैत रहै छिऐ जे हमरा हाथमे एकोटा छद्दियो ने रहैए।"

उषा सकपका गेली। सकपकेबो केना ने करितथि? पतिक जेबीसँ बँचल-खूचल पाइ चोरा निकालति रहै छेली। तैपर सँ ऊपरौसँ किछु ने किछु मांगि जरूरतिक समान कीनैबते रहै छेली आ सभसँ जरूरी काज माए-बाबूकेँ देखै बास्ते जाए पड़ै तइमे खर्चा-बर्चा तँ होइते रहै। ई बात इंजीनियरो साहेब जनैत रहैथ तँए उषा बातकेँ घोलैत बजली-

"अहाँक जेबी, जे रोज साफ होइत रहैए, बएह कोशलिया कऽ हम रखने रही, बिशेष पाइक ओरियान अहाँ साँझ धरि केने आउ।"

बेटा समांकेँ नै एतासँ ममता दुखी तँ छेली। मुदा ऊषाकेँ एतासँ निरासाक बादल छँटि गेलैन। साँझ होइत-होइत उषाक पति इंजीनियरो साहेब ऑफिससँ छुट्टी लऽ पहुँच गेलखिन। बहिने भने एम्बुलेन्ससँ सोनाजीकेँ दरभंगा लऽ गेलैन आ डाक्टर पूर्ण विश्वाससँ इलाज चलए लगलैन। तत्काल किछु दवाइ शुरू कएल गेल, ऑक्सीजनक खगता सेहो पड़लैन आ दिनमे तीन बेर एकर प्रयोग हुअ लगल। विभिन्न तरहक जाँच करौल गेल। जाँचक किछु रिपोर्ट तीन दिनक पछाति आएल आ किछु रिपोर्ट हफ्ता भरिक बाद आएत। जे रिपोर्ट आएल ओइमे बीपी हाइ, सूगर बढ़ल आ संगे-संग हार्ट अटैकक सम्भावना बताएल गेल।

सप्ताह भरि इलाज चलैत रहल, तबीयतमे उतार-चढ़ाव होइत रहल, कखनो ठीक जकाँ गप-सप्प करैत रहैथ तँ कखनो आँखि पिचरा जाइन्हि, दम फुलए लगनि आ बेहोस भऽ जाथि। कखनो बेसुधि अवस्थामे अपने-आपसँ बड़बड़ए लगथि-

"बबलू! कखन एलह आ आ बेटा! करियाँ! घर जा। अहाँ पोती छी हमर? आब! आब! बिस्कुट एकटा हमरो दिऐ ने! ऐ डबलू चाह लबह! माएकेँ कहक चाह देत! ईह छनिनीक साँए! जेते खाएत नै तेते छड़ियाएत!"

दुनू पजरामे बैसल उषा आ उषाक माए- ममता- बेना होइत रहल छैन। सोनाजीक ई बड़बड़ेनाइ रोकैक बास्ते उषा सोनाजीकेँ छातीपर हाथ रखि हिला-डोला कऽ कहैए-

"बाबूजी! बाबूजी! केकरासँ गप करै छिऐ?"

सोनाजी चौंकैत बजला-

"ऊँह! नै नै गप करै छी। तोहर माए केतए छौ?"

सोनाजी किछुकाल ऊपर एकटकी नजैरसँ तकैत रहला। कनी जेना कोनो आहैट चौंकैए तहिना चौंकैत बजला-

"ડવઊ ગાડ઼ીસઁ ઉતરી ગેઊ ળા અગુઆ કઽ ઊવલિઊહક। કાઊ્હિએ કહૈ છી ગોહર માએ કછુ વુહિતે નૈ છૈ઼।"

સોનાળીક સ્મરાઞ્ઞ શક્તિ છીન્ન ભઽ ગેઊ રહૈન। આઁખ્યિ નોશની યઊ ગેઊ રહૈન। રહિ-રહિ કઽ વછિૌન હોથઙ઼ એૌ છઊ। ૬ વેચૈનીક અવસ્થા દેખ્ય ઉષા આ મમળાકૈં ળી-મન ઉડ઼િત રહૈન। મુદા ઉષા સાહસી, કખ્નો અપન ઘવડ઼ાહૈટકૈં દ્ૃષ્ટગોચર નૈ હુઅ દૈત રહૈન। મનકૈં થમ્ભિ કરૈત ઉષા વાળઊ-

"વાવૂળી! વાવૂળી? એમ્હર તાકૂ ને। હમરા ચન્હિૈ છથિ? હમ કે છી કહૂ ને?"

સોનાળી આવ દેખિ નૈ પવૈથ। મુદા ળખ્ન સ્મરાઞ્ઞ ઊૈટિત રહૈન તખ્ન અવાળ પરેખ્ય નળૈર ઘુમા-ઘુમા એમ્હર-ઓમ્હર તાકિ દેખૈક પરિયાસ કરૈત રહૈથ। કહઊખ્નિ-

"હઁ, ચન્હિૈ છી। ઉષા દાર છી ને અહાઁ? કેતએ છહક આગુ આવહ ને।"

આર અસ્પતાઊમે નઅ દિન ભઽ ગેઊ રહૈન। એકટા ળાઁચક રિપોટ આર આએત। દસ વળે ડાક્ટર વળૌને છથિન। ઉષાક પતિ આ ઉષા રિપોટક ળાનકારીઊ ક્ઊિનીકપર પહુઁચઊ। કનીએ કાઊક પછાતિ કમ્પાઉઞ્ઞ્ડર અવાળ દેઊકૈન-

"સોનાળીક ગારળિયન ડાક્ટર સાહૈવ સે મઊિએ।"

ઉષા દુનૂ પરાની વેટિંગ હૅાઊમે વૈસઊ રહૈથ, વોઊાહૈટ સુનતિ ડાક્ટરક ચેમ્વરમે પહુઁચઊ, સોશ્રા-કુરસી ઊાગઊ રહએ, વૈસૈક સંકેતક પછાતિ દુનૂ ગોટે વૈસ ગેઊ। ડાક્ટર દુનૂ ગોટેસઁ સોનાળીક સંગ ળે સમ્વન્ધ છૈઊૈન તેકર પરિચએ ઊઽ કહઊખ્નિ-

"મરીળક હાઊત ગમ્ભીર અછિ, રીકૌભરક સમ્ભાવના નૈ વઁચઊ, ળાવૈ ચરિ છૈથ, સેવા સત્કાર કરૈત રહિયનુ।"

ડાક્ટરક ૬ વાત સુનિ, ઉષા વૌક ળકાઁ ભઽ ગેઊ। મુઁહપર નૂમાઊ રખ્ખિ સિસૈક-સિસૈક કાનએ ઊાગઊ। ઉષાક પતિ સેહો અવાક્ રહિ ગેઊ। તૈયો ળળિ્ાસુ ભઽ ડાક્ટર સાહૈવસઁ પુછઊખ્નિ-

"ડાક્ટર સાહૈવ! કેના એના ભઽ ગેઊૈન?"

ડાક્ટર કહઊખ્નિ-

"શ્રેશ્રડ઼ા હિનિકર વઊિકુઊ ખ્તમ ભઽ ગેઊ છૈન। વ્રેન ટ્યુમર સેહો વઢ઼િ ગેઊૈન આ શરીરક આનો-આનો અંગ સવહક કાર્યક્ષમતા શથિઊ ભઽ રહઊ છૈન।"

વ઼િભિન્નિ તરહક વ઼િમારી આ સમસ્યાક વ઼ષિયમે વાર્તાઊાપક પછાતિ નિષ્કર્ષ ય઼એહ ભૈઊૈન ળે સોનાળીક વમારી ઠીક હેવાક કોનો ગુંળાઇશ નૈ છૈન।

દુનૂ વેકતી નીરાશ ભઽ ચેમ્વરસઁ વાહર એઊ, ઉષા વાહર નિકૈઊતે ભોકાર પાડ઼િ-પાડ઼િ કાનએ ઊાગઊ। પતિ સાહસ વઢ઼વૈત કહઊખ્નિ-

"અહાઁ ળૌ એના કનવ તઁ માએકૈં કી હએત? શાન્ત રહૂ, મનકૈં વુહાઉ! ળે હેવક છૈ સે તઁ ભારએ કઽ રહત। સુહિ-વુધિસઁ કામ ઊિઅ! માએકૈં એ વાતક ળાનકારી નૈ યઊક યાહી। હુનકો સમ્હારિ કઽ આવ અહીંકૈં રાખ્ય પડ઼ત ને। નૈ કાનૂ। ચૂપ રહૂ।"

मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ઙષો સોયઉૈન ળે શ્રપ્પન હ્મના કાનવસઁ નોકસાન છોડ઼િ શ્રાન કછુિ નૈ હ્પના કહુના મનકેં વુહ્વૈન યુપ મેઉી। સોનાળી કમનામે વેડપન પડ઼ઉ નહૈથ, વગાઉમે મમના પંપ્પા હૌકૈન નહૈન, નિ૨ વગાઉમે પળના ઉાગા ઙષા વૈસ ગેઉી શ્રા સોનાળીકેં મુઁહ નહિાનએ ઉાગાઉી।

વેટા સજ ટાઉ-મટોઉ કમૈન નપ્પન પતિાક પનામ્ન છુટૈકાઉ ગામ શ્રાએઉ ળપ્પન સોનાળી કેકનો ને યન્હિ સકૈ છેઉૈન શ્રા ને કેકનો દેપ્યિએ સકૈ છઉા!!!

ભોલા

શ્રામ ՈՎહસઁ દેખ્લ ળારૂए ળે સՈમાર્ક્ક પ્યિંશ ળોન-સોનસઁ લાગ કરેઽ। શ્રગન કોનો વય્યાકેઁ સՈમાए નહિए Ոઁ શ્રોકના લોકક સહાનુભૂՈિ નહિՈ શ્રછિ। મુદા કોનો સોՈેલ વાપક ળકિનિ કેՈૌ હોશՈ નૈ દેખ્લ ળારૂ। ળપ્પન કે ભેદ-ભાવ દુનૂગામ હોશՈ શ્રછિ। ભોલા શ્રપન માए દુખ્પીક દોસન વશ્રિાહમે પછાલિગુ શ્રા વનિ શ્રાएલ નહ। કનમ વુડલ છેલૈન દુખ્પીકેઁ ળે વશ્રિાહક દસે દિનિક પછાՈિ વશ્રિહુ શ્રા ઘરવલાક દેહાન્Ո હેળાક વેમારીસઁ ભઽ ગેલ છલ। પՈિક ગુળરલાસઁ દુખ્પીક નાՈા શ્રોર ઘરસઁ ટુટિ ગેલ। મુદા શ્રાશાક કનિમ્ન નશ્ર માસ શ્રનહનિયા વીՈલ પછાՈિ ભોલાક ળનમ ભેલાસઁ શ્રેનિ યિમૈક ઉડલ। દુખ્પીકેઁ લાગલ ળેના વેટાક ળનમસઁ વશ્રિહુ શ્રા ઘર યકિ કઽ સોર પાડ઼લકેન મુદા ઈહો શ્રળોՈ ગહનલગુ શ્રા ભઽ ગેલ, યાનપન દાગ લાગિ ગેલ। સોસનાક લોક દુખ્પીકેઁ સ્વીકાર નૈ કેલક, કયિ કુલય્છની Ոઁ કયિ કુલનાસની કહિ સદાક લેલ ડોકર મારિ દેલક। Ոર દિનિમે સમાળ શ્રાક વ઼ળ઼્શાન શ્રોՈે પ્રગՈિ નૈ કેને છલ ળે ડ઼ીएનए શ્રાક શ્રાનો ળાઁયસઁ સાવિՈ કનિ ળે ભોલા દુખ્પીક ળારૂળ સન્Ոાન છી।

સમૈક પહિયા નાયૈՈ ગેલ। દુખ્પી એકટા વેટા નૂપી યનસઁ સવુન કેને ળીનગીક સુખ-દુખસઁ Ոાલમેલ વૈસવૈՈ પાઁચ વરખ કાટિ લેલી। શ્રાવ ટોલ-મોહલ્લા શ્રા સમાળક લોક સભ દુખ્પીકેઁ દોસન વશ્રિાહક ગપ-સપ કરए લાગલ। હોશՈ-હોશՈ ખુન્સેલા ગામક મોહન દાસસઁ યુમૌન સમ્પન્ન ભેલ, ળેકર એકટા વેટી સોસના વસૈ છેલી શ્રા एગો વેટા-પુՈોહુ ભીન ભઽ કઽ નૈ છલ। મોહનાક થોર-વહુՈ ખેՈ શ્રા યારિટા મૈસ નહિન ળેકર દૂધ વેચિ ગુળર-વસર કરૈ છલ। યુમૌન ભેલાસઁ દુખ્પી-મોહનાક ળીવન હરશ્રિરી Ոઁ ઘુમિ શ્રાएલ મુદા ભોલા ળે પિՈાક ખ્યાՈિ ળનમસઁ વેલલ્લા છલ, શ્રોકના પિՈાક સુખ નસીવ નૈ ભઽ નહલ છેલૈ ળે મોહનાસઁ ભેટવાક યાહી।

ભોલાકેઁ વાલપનમે પિՈા ભેટલ, મુદા એ શ્રવોય નેનાક ળનૂરՈસઁ હનિકર સՈવાપ સાશ્રુ કઽ શ્રનભાગિ છથિ। મોહનાક યુમૌન કનૈՈ યનિ દૂટા કમૌશ્રા પ્રાશ્રી ઘર શ્રાएલ, દુખ્પી પત્ની વનિ ઘર-શ્રાઁગનક કામ-કાળ સમ્હારલી શ્રા ભોલા પોસલ-પાલલ વેટા નૂપમે મૈસક યરવાહિ શ્રા ઘાસો ભૂસામે લાગૌ ગેલ। દુખ્પીક ઈય્છા છેલૈન ળે ભોલાકેઁ પઢાવી-લખ્ખાવી, Ոર વાસ્Ոે ગામક સ્કૂલમે નાશ્રો લખ્ખા દેલી। મુદા મોહનાક ઈય્છા નૈ છેલૈન ળે ભોલાકેઁ પઢાવી। હનિક ખ્યિસિયાएલ નવૈયા ભોલાક પ્રՈિ દિખ્ખ દુખ્પીક સસ-વસ નૈ યલિ સકલ। એ ખ્યાՈિ વેર-વેર ભોલાકેઁ ડાઁટ-શ્રટકાર મોહનાસઁ પડ઼ૈՈ નહિ। દુખ્પીકેઁ Ոએ-Ոર ટુસકેલાપર ભોલા કહિયો-કાલ નુકા-છપિ કઽ સ્કૂલ ળારૂՈ છલ મુદા ન્ર વેસી દિનિ નૈ યલિ સકલ। ભોલા એકદિનિ સ્કૂલસઁ એવՈે યનિ મોહનાક Ոામસપર યઢ઼િ ગેલ। મોહના Ոમસાएલ દાઁՈ પિસૈՈ હૂરકૈՈ વળલ-

> "વડ઼ નવાવક નાՈિ છહિ! કેՈૌ વૈસ કઽ વાપ- સંગે કૌડ઼ી ખેલૈՈ હેવહી શ્રા કહૈ છીહિ પઢૈલ ગેલ છેલહિ! મરિ કાएિ નૈ ગેલૈઁ શ્રોՈે? ળવ ઘાસ- લે ળારૂ છહિ Ոઁ Ոોરા ઘાસે નૈ મલિ છૌ। કહવી ખુરપી ભૌંથ ભઽ ગેલૈ Ոઁ વેંટે ઢીલ્લા ભઽ ગેલૈ। પયાસટા વહન્ના વનવૈ છઁહ। હટ નળેરપર સઁ હલમુહાઁ!"

पाइपक टपपस नहिञो किछु हट-हट करि पीठपर बरसाए देलखिन। बौआ टम्हा करि ओतै बैसि गेल आ छट-पटाइत बोली पाड़ि कानए लागल। मोहनाक अपन बेटा नै रहैन तँए ममत नै, मुदा माता कुमाता नै भऽ सकैए, दुखनी दौगल एली आ बौआकेँ उठा-पुठा कऽ पलखिओमे अँगना लऽ गेली।

पुरुष प्रधान समाजमे स्त्री शब्द केतेक असुरक्षित होइत अछि से दुखनीक हालतसँ बूझल जाए सकैए। स्त्रीकेँ अपन अन्यायग्रस्ती बनेलोपर हुनकर मति मोहि किछु पुरुष अपना अनुकूल बना लैत अछि। धीरे-धीरे घरक वातावरण बदलैत गेल आ मोहनाक आकर्षण दुखनीपरसँ घटैत गेल। घरक काम-काजक अलावे माल-जाल आ खेतियो-पथारी दुखनीक माथपर पड़ए गेल। मोहना भिनसरे जैस दूहि, दूधक डोल बजार लेने जाइए, अनुमानतः पलमेमे दुर्गा दासक होटल अछि, जइमे दूधक उठौना लागल अछि, एतए एला पछाति गप-सप्पक संगे गाजाक दम सेहो पुड़ैत एककेबेर दुपहरियामे होइत घर अबै छैथ।

होटलक मालिक दुर्गा दास बेदर्दिया नोकरक खोजमे रहैथ जेकर जानकारी ओ मोहनासँ केलखिन-

> “आठ-दस बरखक बेदरा काज करैबला गाममे जँ भेटत तँ ललै अबहिन तोँ जानिते छहक होटलमे खेनाइ-पीनाइक कोनो कमी नहियेँ रहै छै। कपड़ो-लत्ता सीखतै आ पोसलो-पालो तँ जेबे करतै?”

मोहनो भरोस दैत कहलखिन-

> “अच्छा देखै छिऐ, नजरिपर एतै तँ लेने एबऽ”

घर एलापर बेरमे मोहनक खियाल बेदर्दिया नोकरपर गेल, मने-मन सोचैत एल जे केकरा कहक चाही ऐ बाबते? एकाएक मोहनाक धियान बौआपर गेल आ सोचए लागल। अन्तमे ई बिचार केलन जे बौआकेँ होटलमे लगा देब सभसँ नीक रहत। घर ऐबते दुखनीकेँ गप-सप्पक हँसी दैत कहलखिन-

> “बौआकेँ बजारमे नोकरी लगा देब छिऐ। घरमे खाइ-पिबैक दिक्कत भऽ रहल छै। बजारमे रहतै तँ दूटा कपड़ो-लत्ता सिखतै, गाममे देखै छिऐ ने बौआएल जाइए?”

दुखनी ऐ बातसँ राजी नै छेली मुदा मोहनक जिद्दिक आगू हारए पड़लैन। आगिला दिनसँ बौआ दुर्गा दासक होटलमे काम करए लागल। ऐ अबोध बेदराक बालपनसँ एकटा आनो लेनाक मौलिक अधिकारसँ रोकि देल गेल। सोचल माइक खद्यांश तँ होइत अछि मुदा सोचल बापोक हेबक चाही जेकर हकदार मोहन भेलखिन। स्कूली शिक्षा तँ बाल-बोधक मौलिक अधिकार होइत अछि जे आम लोककेँ समझमे नै आबि रहल अछि। परिणाम स्वरूप, अखनो बाल-श्रम अपना देशमे चरमपर अछि। गरीब घरक लेना-भुटका सभसँ बलपूर्वक आकर्षण-जबरदस्ती मारि-मारिकऽ काज जेना स्टोन उत्पादनमे कुदाक पौलिश, दोकानमे साफ-सफाइ, जोजनक ढाबा आ होटलमे जबरन बरतन-बासनक माजैक काज, चाह दोकानपर गिलास धोइक अलावे आनो अनौपचारिक क्षेत्रमे काज कराएल जाइत अछि। घरेलु काज करैले सेठ-साहुकार सभ काम-काजी बेदराकेँ घरमे नुका कऽ राखैए, जइसँ सरकारी श्रम निरीक्षक आकस्मिक निरीक्षणसँ बँचि सकए। ई सभटा काज न्यूनतम मजदूरीपर बेदरा सभसँ कराएल जाइए, बुझियौ जे ई कानूनी जुलुम अछि। एकरा अनुचित आ शोषित मानल जाइए तैयो बहुत गरीब परिवार अछि जे अपन अबोध बेदराक मजूरीक सहारे भरन-पोषन करैए। कानूनो बनल अछि जे अठारह बरखसँ कम उमेरक बालक मजूरी नै कऽ सकैए। मुदा कानूनक अनदेखी कएल जाइए आ बौआ सनक नअ बरखक बेदरासँ सतरह-सँ-बीस घण्टा काज कराएल जाइत अछि।

दुर्गादासक होटलमे अनुमानतः ५० आ बेसीक स्टाफ लोग हाकिम, करिमी, खपरासी आ आरो मीआसी सबहक खाद, नस्ता, कल्लौ बनैत कछु महानुभावक डेरापर खाद, नस्ता, जेनाइ पठाएल जाइत दुर्गा दास सोभावसँ एक नम्बरक पोलटसिवाल छथि जहिसँ कामकाजी बेदरा सभसँ गप मारि काज करबै छैथ। जूनी पड़लापर डाँट-डपटकार आ थप्पर-थप्परसँ सभकेँ सकपकेने रहै छैथ। होटलमे छहसँ दस बर्खक आरो चारिटा बाल-मजदूर काज करैत छल। मलिकसरबाक चारि बिलैत बनि सिभटाकेँ हुनपेट कऽ लगाएल जाइत आ बरतन-बासन, युवा-चौकीक माँज-मजबैल, नपिा-पोतीसँ ह्रा-पोछक काजमे लगाएल जाइत। कोर खाह लऽ डेरे-डेरा पहुँचाबैए तँ कोर जलछै, जेनाइ बनाबैमे लगि जाइत।

कप्पनो-काल सभ बेदरामे कोनो-कोनो बातपर टोना-माचीसँ ह्रगड़ा-ह्राँटी भऽ जाइत अछि, तइ घड़ीमे दुर्गाकेँ अपन सकत मयिादि देखबऽ पड़ै छै, जानकि लऽ कऽ हुँटयिबो करैत। जेनाइमे सभटाकेँ बसयिा भात, टटाएल रोटी, महकौआ तीमन आ बँचल-खुचल तरकारी दैत बलौ छथि-

"जे छौड़ा सभ अते नीक चीज तँ तोहर बापो-ददा नै जेने हेतौ। ज्यार जार लो मन लागा कऽ"

दुर्गा दासक एकटा बेटा- अमर- दरभंगामे पढ़ैत अछि। जहियो कहियो ओ गाम अबैत अछि तँ जार घड़ीमे टीसनपर पहुँचबैक जिम्मा लोककेँ रहैत अछि। आइ अमर दरभंगा बिदा भेल। दस-दस किलोक गहुम आ चाउरक मोटा लोकक माथपर आ करहापर बैग लटकेने टीसन मुहेँ बिदा भेल जे करीब कोस भरि हटि कऽ अछि। रस्तामे माचीसँ लोकक करहा-पजरा ऐठने जाइत रहै मुदा गाड़ी छुटैक डरे केतौ जिराइयो नै सकल। टीसन पहुँचते रेलगाड़ी ससरऽ लागै। अमर लपैक कऽ चौदान पकैड़ चढ़ल। लोक नीचासँ सभटा मोटा-चोटा आ बैगो जेना-तेना अमरकेँ पकड़ा आ अपन भाड़ उतारलक। लोकक माथक बोह उतरिते मन हल्लुक हुअ लागै, मुदा घुरन्ती-डेग नै उठि रहल छै लोककेँ। मन भेलै कछुिकाल जिरा ली। करहा आ गरदनि सेहो ऐठने जाइत रहै। गाछक छबुतरापर चमन दऽ बैस कऽ हाँफए लागल। कछुिकाल बैसल पछाति आएल आबि गेलै आ ओतइ ओघरा कऽ सुति रहल। साइत एते नचिनक नीन कहियो नै सुतल छल। ओ नीनक महासागरमे हेल मारऽ लागल। चारि घण्टाक कड़गर नीन जीयल पछाति जखन गाछक छाहैर घुसकि कऽ दूर हटि गेल आ देहपर दुपहरियाक रौद लागए लागै तखन जा कऽ आँखि खुजलै। भूखो जोरसँ लागि गेल रहै, आँखि मिमिंत होटल दसि बिदा भेल।

ओमहर दुर्गा दास तामससँ आगि अंगोरा होइ छल। लोककेँ देखिते मारर तरबामे लहैर दिश लागल, गारि-बात दैत बौआइत हुरकैत लोककेँ कहलखिन-

"जे सार! गेलहि तँ मरि गेल रहि? की बाप पकैड़ लेने छेलौ? भुख लागौ तँ दौगल एलहि। नमक हरामी कही कऽ!
मुइर-मुइर केना तकैए सार!"

बगलसँ करमीलक छड़ी उठा आ लोकक पीठपर सटाक-सटाक खियिए लागलखिन। लोक ओते तड़िमड़िइत ठाढ़ रहि बैसि रहल आ बाप-माए चचियिाए लागल-

"गै माएऽऽ है बापऽऽ मरि गेलियौ गैऽऽ माए गै माएऽऽ"

खिसियाइले मुहेँ दुर्गा दास झेरि बजल-

"सार तूँ हमरा होटलमे टपि नै सकै छेँ। जो जइ बाप लग जेमे। देखै छियौ तोरा के रखै छौ आ के जेनाइ दइ छौ।"

घण्टा भरि लोक ओते करैत रहल। रहि-रहि कऽ दुर्गा दास हूकैक-हूकैक मारैत छुटैत रहैथन आ बजैत रहथि-

"जागहुँ कहि कि सभवा? एने की टक-टकी देने छीहि? आब खाउ? टपऽ गँ देवौ कि आ खेनाइ के देतौ? यहि खातिर नह लाइए लेवाक छौ।"

मोहनकेँ बुझना गेल आब नशिलुकी कि नहए देता आ ने खेनाइए भेटत। उठि-पुठि कऽ कोसी प्रोजेक्टवला फाँड़ा पकड़ने एसडीओ साहेबक अवास दिस बढ़ि। भऽ गेल मनुहुआइए-सनुहुआइए आँखकि नोर पोछैत मोहन एसडीओक अवासक आगूसँ जाइत छल तखने मीम वहादुरक नजैर मोहनपर गेलैन। मीमवहादुर एसडीओ साहेबक भनसिया, जे दयालु प्रवृत्तिक नेपाली पहाड़ी जातिक छैथ। वहादुर मोहनकेँ जानति नहैथ पुछलखिन जे की भेल, कथि कहै छीहि, केतए जाइ छेँ?

मोहन हथिक-हथिक कऽ सभटा बात बतेलक-

"हमरा नै नखतौ। माइकि कहलखिन भागि जो, नै नहए देवौ।"

मीमवहादुरक उमेर पचास-पचपनसँ कम नै हेतैन मुदा खुश मिजाज आ दयालु प्रवृत्तिक लोक छैथ। मोहनकेँ केम्पसक भीतर लऽ गेलखिन आ खाइले दूटा रोटी संग कनी तरकारी देलखिन जे बँचल छेलैन। मोहन मोनुके खेलक, भूखसँ लहालोट हरवे करय मुदा ऐ रोटीक पैनठाहासँ देहमे हूवा एलै। कछुकाल धरि आँगनए बैसल रहल। एसडीओ पाठक जीक दुनू सन्तान नन्दन स्नात बच्चक आ नेहा धारा विद्यक अछि जे केम्पसमे बैट-बॉल खेलाइत रहए। मोहन ढीग-ढीग कऽ संग दिस लागल। साँझ होइत धरि पाठक जीक जीप केम्पसमे प्रवेश केलक संग लागल कछु गाम-घरक लोग लोकैनक हुजुम सेहो जुटए लागल। गप-सपक्काक बीच सभ लोगागम अपन-अपन काज करा बढ़ि होइत गेल। बीच-बीचमे पाठक जीक नजैर तीनु नेनापर सेहो जाइत रहैन जे प्रसन्नचित मुद्रामे खेलैमे मग्न अछि। मोहन एसडीओ साहेबक कार्यालयमे धरि पहुँचबैल जाइत रहैन तँए चिन्हतो नहथिन। मुदा मोहनकेँ एतए देख पाठकजी दुविधामे छल। पाठकजी वहादुरसँ पुछलखिन-

"वहादुर, ई लड़का तँ दुर्गादास-होटलक लगैए, ई एतए केना आएल?"

मीमवहादुर सभटा बातक जानकरी दैत आग्रह केलखिन-

"साहेव, धिया-पुता जाइत छिऐ, भगा देने छै, नाति-पिताति केतए जेतै, आइ भरि एतै रहे दैतिऐ तँ नीक होइतै।"

पाठकजी नेक बुझियारक लोक, हँ भरैत बजलखिन-

"रहऽ दहक की हेतै? धिया-पुता तँ छिऐ।"

वहादुर गरीबीक दिन देखने। तँए मनमे गरीब लोकक प्रति दया आ सहानुभूति भरल छैन।

वहादुरमे दूटा नीक गुण अछि, पहिल ई जे जब केतौ भूखलकेँ देखैत तँ खेनाइक आग्रह जरूर करैत, दोसर ई जे दोसरक बाल-बच्चाकेँ अपना जकाँ सिनेह दैत छथिन। एसडीओ- पाठकजी- तहिना मृदुभाषी आ दयालु प्रवृत्तिक लोक छथिन, तँए दुनू गोटेमे नीक जकाँ बनै छैन। भरिसरि भरे वहादुरक दैनिक काजमे मोहन संग दिस लागल। दस बजैत पाठकजी ऑफिस बढ़ि गेल। वहादुर अपने संगे मोहनकेँ लपेटै करबैत गप-सप्पमे पुछलखिन-

"होटल घुमा कऽ जेमे की गाम?

मोहन सकपका गेल, कछु नै बाजल, मुदा वहादुर ऐ चुप्पीकेँ बुझै खातिर फेर पुछलखिन-

“હોટ૭ ળેવાક મન નૈ હોર છૌ?”

મોઊ મુઁહ ૭ટકેને વાળ૭-

“મૈ ળેવૈ, દુ૧ગા માઊકિ વડ઼ માનૈ છૈ। ખેનારયો મ૧પિટ નૈ દર છૈ શ્રા મગારયો દે૭ક, ક઼હ૭ક શ્રાવ ΓОМА નૈ ન૧ખ્યવૌ।”

વહાદુ૧-

“તૂઁ શ્રપના વાપકેં કહિ નૈ કહૈ છૌ?”

મોઊ-

“હમ૧ વાવા એક વ૧ખ્યસઁ દૂય ૭ઽ કઽ નૈ શ્રવૈ છથિનિ। દુ૧ગા માઊકિ ક઼હ૭ખ્યનિ, વાવૂ સવટા મૈસ વેચિ ઊ૭કૌ।”

વહાદુ૧-

“માર્યો મેંટ-ઘાઁટ કનૈ૭ નૈ શ્રવૈ છૌ?”

મોઊ-

“મેંટ નૈ કે૭કૈ। એકવે૧ ખ્યળુની કકા દશ્રિર સમાદ પઠેને ન઼હૈ મેંટ ક૧િ ળાર૭। મુદા દુ૧ગા માઊકિ નૈ ળાર દે૭ખ્યનિ શ્રા હમ૧ા ગામ દેખ્ય૭ નૈ છૈ।”

એકવે૧ શ્રેનિ વહાદુ૧કેં મોઊપ૧ દયા ઊગ૭ૈન, ળે કહિ મનુષ્યક મૂ૭ સોમાવો છૌ। શ્રોના તઁ સમ ય૧મક પોથીમે વનૌ૭ ગેઊ શ્રછિ, ળે ૭કૈન કનૈત-કહૈત મેના-મુટકા, મૂખ્ય૭, વેમાન શ્રા વૃઢ-પુ૧ાનપ૧ દયા-દ૧ેળ નૈ ક૧િ સિકૈર, શ્રોક૧ ઈ મનુષ્યક ળીનગી વેકા૧ હોરત શ્રછિ। મનુષ્યક પુનનાવૃતિક ૭ક્ષામ શ્રછિ, ળનમ મેના૨, ખેનાર-પનિાર, પ૭નાર-વઢનાર, વશ્રાહ-દાનસઁ વંશ-વૃદ્ધિ કનૈત પનિવાનકેં શ્રાગૂ વનહેનાર શ્રા શ્રેન મ૧િ ળેનાર। ઈ ળીવન તઁ પશુ શ્રા પક્ષિયો ળીવૈર। તખ્ય મનુષ્ય શ્રા ળાનવ૧મે કી શ્રન્તક નહત? દયા મનુષ્યક સમ ગુણમે શ્રેષ્ઠ શ્રછિ ળે મનુષ્યને નહવાક ચાહી।

મીમવહાદુ૧ક મનમે વિચા૧ ઉઠ૭, સાહેવસઁ ગપ ક૧િ મોઊકેં શ્રહીઠામક કાળમે ન૧ખ્યિ વ તઁ એકટા વેદ૧ાક ઉપકા૧ મઽ ળારત। સાઁઝ પડૈત પાઠકળી એ૭ખ્યનિ। કાળસઁ શ્રૂન્સત મે૭ પછાતિ વહાદુ૧ પાઠકળી સઁ વિનિતી કનૈત મોઊક ખ્યાતિ ગપ ક઼હ૭ખ્યનિ ળેકના પાઠકળી સ્વીકાન કે૭કૈન।

મોઊ ઘ૧ક કાળમે સંગ-સાથ દશ્રિ ઊગ૭। મૌકા મેટ૭પ૧ નન્દન-મેહા સંગે પઢૈશ્રો૭ વૈસ ળારત નહર। ક૧ી દિનિ વીત૭ પછાતિ વહાદુ૧ મોઊક માર-વાવૂકેં સમાદ પઠ૭ખ્યનિ, મેંટ કનૈ૭।

ઙેઢ સા૭સઁ દુખ્યની વેટાક સોગમે ચન્તિીત છે૭। મુદા ઈ ખ્યવૈ૧ ળે મોઊ એસ઼ડીશ્રો સાહેવક ઘ૧મે કાળ કનૈત શ્રછિ, સુનિ સુપ સન ક૭ળા મે૭। શ્રગાઊ દિનિ દુખ્યની દૌગ૭ એ૭। દૂ વ૧ાસિપ૧ મોઊકેં દેખ્યિ દુખ્યનીકેં ખ્યુશીક ઠેકાના નૈ નહ૭। ગપ-સપસઁ પતા ઊગ૭ ળે મોઊક સતવાપ, મોહના મૈસપ૧ સઁ ખ્યસિ પિઙ૭ શ્રા ડાઁન ટૂટિ ગે૭। પછાતિ સિમટા મૈસકેં વેચર પડ઼૭। તહિયાસઁ શ્રાર તક મોહના વેમાને નહૈ છૈથ, કોનો કાળ-નાળ હનિકાસઁ નૈ મઽ નહ૭ છૈન।

મેંટ-ઘાઁટ મે૭ પછાતિ દુખ્યની ગામ દસિ વિદા હુશ્ર ઊગ૭ મુદા એસ઼ડીશ્રો સાહેવસઁ મેંટ કનૈત નહિના કે૭-

“હૂળૂ૧, શ્રારસઁ શ્રહી રે નમિોગાક માર-વાપ છિ। શ્રહીક નૂન ખ્યા કઽ એક૧ મોગ ચનકૌ।”

પાડ઼કળી ભનોસ દૈત કહલખિનિ-

"ભોલાસઁ અહાઁ નસ્તિકિનિ નહૂ। ખનયા-પાનીક દક્કિત હએત તઁ હમના ખવૈન કનવ।"

પાડ઼કળી ભોલાક હાથે પાઁચ સએ ટકા આ એક સેટ કપડ઼ા દુખનીકેઁ વદિાગનીમે દેલખિનિ। દુખની હઁસી-ખુશીસઁ ગામ દસિ વદિ। ભડ઼ ગેલિ।।।

ऐ નચનાપન અપન મંતવ્ય ggajendra@videha.com પન પઠાઉ।

१ नाળદેવ મામ્ઝ- ળથ મઁવન (उपन्यास) २ ઉમેશ મામ્ઝ- एकटा वहिन कथा- मुङनक मुन ३ આશીષ અનચિન્હાન- વનમહપશિાચ (વ્યંગ્ય)

१

નાળદેવ મામ્ઝ

ળથ મઁવન

उपन्यास

७

યાનક કછેના પસનલ વાઉલ। કેતૌ-કેતૌ કાસ-પટેનક દ્દાડ઼-દ્દઁખુડ઼। ઓહીઠામ નાળેસન ઠાઢ઼ ભેલ છલ। વતાહ સન દશા। સોચિ નહલ છલ।

'સભ કછિો અછિ ઓહિનિ,

ળહિનિ છલ તહિનિ।

મુદા ई કી ભેલ,

હમના ભેલ, સભ કછુ વદૈલ ગેલ?'

સંગે આએલ ગૌઆં સભ ળાગેસનક લહાશ તાકિ-હેનિ નહલ છલ।

યાનૂભન અગાય વાઉકા-નાશિ। કેતૌ હનયિનીક ભેશ નહિ। ળેના નદી ઉળનકા સાડ઼ી પહિનિને હોઇ। કાત-કનોટમે કેતૌ કછુ નૈ। ળેના નદીક નોનસઁ સભ કછુ દહિ-ભઁસિ ગેલ હોઇ। ચહુઁઓન પસનલ સુન-મસાન, ને કોનો વોલિ ને કોનો ગાન।

નાળેસન સોચલક- એહને દશા આવ હમના ભૌળાયિોકેઁ હોએત। અહિના વિધવા સ્નની ળકઁ ઉળના સાડ઼ી પહીનિ, આઁખિસઁ નોન વહવૈત, પહાડ઼ સન ળનિગીકેઁ નપૈત-ળોપૈત।

અકુલાએલ મનકેઁ વહટાનૈલે કની આગૂ વઢ઼લ મુદા સ્ઠેન ઠમૈક ગેલ।

યએહ તઁ ઓ ળગહ છી। ઓહીડામ ળાગેસન મૈયા કહ્લે નહૈથ-

“હૈ વૌઓ, ળાગા-વેનાગા કિ઼ડ સુતહિ઼ઝ ઘનો કાતે-કનોટમે ઓ નાતયિ઼ો ઓન્હનયિ઼। વુહ્તિ છહ્ક ગામક ગેઉ ઓ નિ઼્નક સૂતઉ। હમના વેસયિ઼ો સમએ ઉગા સિકૈત ઓછા।”

વેસી સમએ કી ઉગાતૈ ઓ તઁ સદા-સદાક ઉેઉ છોડ઼ કિ઼ડ યઉ ગેઉ। ળેના વોઉ, વાના, ક્નયિ઼ાકઉાપ દ્વ઼ાના મ઼ૃત્યુ સમૈસઁ પૂન્વે સૂચના દૈત નહૈ છૈ।

નાળેસન ડવડવાએઉ આઁખિકેં પોછા ઉેઉક।

છોટપન મુઁહ ૩ઠૈને- નાહક મગ્ન ઓવશેષ। ઉગૌ છૈઉ ળેના ગોહા શિકિ઼ાનકેં પકડૈઉ ઉક ઉગોને હોર઼।

મવ઼સિક વોહ્ ળેના નાળેસનકેં દવને ળા નહઉ છૈઉ। મન તને-તન કાછુન કાટા નહઉ છૈઉ। માથાસઁ ઘામક ટઘાન ચૂવા નહઉ છૈઉ। ઓ યડસ્ડાઝત યાનક પાના દિસિ વઢ઼ ગેઉ।

“એના યડસ્ડીમે કોનો કાળ નૈ કની। ઓાવ તૂઁ ળુઓાન મેઉહ।”

ળેના કેતૌસઁ માઝક સ્વ઼ન ઓકના કાનસઁ ટકનેઉ। ઓાશાસઁ મનઉ ઓ યાનૂમન યકોના મેઉ। મુદા કેતૌ કછુ નૈ દેખા નહઉ છૈઉ। ળેના ઓન્તનમે કછુ ૩યુક્કા માનઉકૈ। ઓ હયિ઼ા સ્ડાડ઼ કિ઼ડ કાનએ ઉગાઉ।

માઝક સંગા વતીઉ એક-એક ક્ષણ મન પડ઼ નહઉ છૈઉ। ળેકના પનતાપે ઓ ને ડેનાઝત છઉ ઓ ને કપ્પનો યનિ઼્તતિ હોર઼ છઉ। મુદા ઓાર઼ ઓકના વુહ્ાર઼ છૈઉ ળે ઓ ઓસગાન મડ ગેઉ ઓછા વ઼ણિ઼્કુઉ વેસહાના। સભ કછુ વદઉઉ। મન પ્પાઉ પ્પાઉ સના। માથપન હાથ ઉેને ઓહીડામ વૈસ ગેઉ। મવ઼સિક મૂત સભ ઓાગૂમે નાયએ ઉગાઉ।

કેતવો તાક હેના કેઉક મુદા ઉહાસક કેતૌ ઓતા-પતા નૈ યઉઉ। ગૌઓઁ સભ ઓસોથકતિ મડ કડ નાળેસન ઉગા વૈસ નહઉ છૈઉ। મૂપ્પ-પયિ઼ાસસઁ સવહક મન આઁટો-આઁટ મડ ગેઉ છઉ। કછમછી ઉગાઉ છૈઉ મુદા ળાએત કેના। સમાળકિ માનસઁ ઘેનાએઉ છઉ।

કાઉીકાન્ત કાતેમે વૈસઉ છઉ, એકગોને પુછઉકૈ-

“યૌ કાઉીકાન્ત વાવૂ, ઓાવ કોન ૩પાએ ઉગાતૈ? દાહ સંસ્કાન કેના હેતૈ?”

ગામછાસઁ મુઁહ પોછૈત કાઉીકાન્ત વળઉ-

“ઓાવ મનઉાહ સંગે મના ળાએવ સે હએત। એતે તકા-હેની કેઉૌ મુદા ઉહાશક કેતૌ પતા નૈ ઉગાઉ। સાઝત યાનક પેટમે યઉ ગેઉ।”

“૩પાએ કી હેતૈ યૌ?”

“એહેન સ્થતિમે તઁ કુશપુતન વના કડ દાહ સંસ્કાનક વેવ઼સ્થા હોર઼ છૈઉ। ગામપન યઉહ। ળાત-સમાળસઁ પૂછા ઉહિક। ળેના કહતહ તેના કનહિ઼ઝ।”

“ગઁ આવ યઉવાક યાહી।”

“હઁ, દુપહ્નયિાં વીગઉ ળા નહઉ છૈ। આ વાટ કેહેન અછિ સે વુહિગિ છહ્કા।”

મુદા નાળેસન કછિો નૈ સુનઉક। ળેના ઓ ગપ-સપ્પસઁ વહુગ દૂન છઉ। સોયક સાગનમે નમિગ્ના। મુઁહપન પીડ઼ા નાયિ નહઉ છેઉૈ। યુપે-યાપ અપનહિ નોનકેં પી નહઉ છઉ।

કનીકાઉ ગક કાઉીકાન્ગ ઓકના મુઁહ દસિ ગકૈગ નહઉ। ળેના અપના આઁપ્પસિઁ નાળેસનક હ્ૃદૈક પીડ઼ાકેં નાપૈગ હોઙ। મુદા આનક પીડ઼ા આન નહિ ળાના દુપ્પક પસ઼ૈગ છ઼ાઁહકેં કાઉીકાન્ગ દેપ્પ નહઉ છઉ। ઓ નાળેસનક વઁાહિ પકૈડ઼ હઉિવૈગ વળઉ-

“નૌ નાળેસન, એના વૌનાએઉ કપિ છોહી। ગોપેપન ગઁ આવ પઉવિાનક સબટા બાન છૌ। એના ળઁ કનવીહી ગઁ પઉવિાનક આન ઉકક કી દશા હેગૌ। મનકેં થીન કના। એઠામસઁ ઉઠ। યઉ ગામપના।”

નાળેસન ઉઠૈક કોશકિ કેઉક। મુદા ટઁાગ થનથનાએ ઉગઉૈ। સૌસે શનીન કેનાક બાઉૈડ઼ ળકઁા ડોઉૈગ નહઙ। આઁપ્પકિ આગૂ અન્હાના। ઓઙ અન્હાનમે ઉઉ-પીઅન ગેપ્પા। ઓ ઉદ દડ વૈસ નહઉ।

કાઉીકાન્ગ સમહ્વડ-વુહ્વડ ઉગઉ-

“નૌ, સંસાનક યક્ન અહનિ યઉૈ છૈ। ળે એ મૃત્યુબુવનમે આએઉ અછિ ઓકના એક દનિ એઠામસઁ ળાએ પડ઼ગૌ। ળન્મ આ મૃત્યુ હોએવ ગઁ ઉઉ અછિ એ ઉઉમે મનુપ્પકેં અપન-અપન કાળ કનએ પડ઼ૈ છૈ। બાગિ કડ કેગએ ળેવહી? ઉઉ કેકના વુગ્ગે નૂકગ। નાળા, નંક, શકીન કોય મૃત્યુસઁ નહિ વઁયિ સકૈગ અછિ।”

સંગ પનબુદાસ ઉગામે આવિ કડ વાળઉ-

“યૌ સદા ન ફૂઉૈ ગોડ઼ી, સદા ન સાવન હોય।

સદા ન ળૌવન થપિ નહે, સદા ન ળીવે કોય।

ળે એ સંસાનસઁ યઉગિેઉ સે આપસ નૈ આવિ સકૈગ અછિ સબગોટે મઉિ કડ કાનવ ગૈયો ઘૂનિ કડ નૈ આઉગ।”

નાળેસન નોન પોછૈગ વાળઉ-

“હે યૌ, અહૂઁ સબ ઠીકે કહૈ છપિ। મુદા સબ કછિુકેં એકટા સમએ હોઙ છૈ। સમૈસઁ પહનિ એહેન વેથા બડ ળાએગ સે કહયિો મનમે નૈ આએઉ નહએ। અહી સબ સોયયિૌ, પઉવિાનક બાન, ધયિા-પુગાક બાન આ બૌળીક દશા દેપ્પૈ છપિ ગઁ મોન હોઙએ ળે હમહી મનિ ળૈગૌ સે નીક હોઙગ।”

પનબુદાસકેં વળએ પડ઼ઉૈ-

“ળયિ વનિુ દેહ નદી વનિુ વાનિ,

વૈસહિ નાથ પુનુષ વનિુ નાની।

શ્રોકના તઁ ડીકે મારી વ઼પિત પડ઼િ ગેલૈ।"

કાલીકાન્ત સમ્હારૈત વાજલ-

"સે તઁ હમહૂઁ સભ વુઝૈ છિપિ જે ળુશ્રાળીક મૌત વડ઼ શ્રયલ। મુદા કી કરવહક। ઊપરવલાક જે ઙ્ચ્છા છેલૈ સે ભેલૈ। શ્રોર સન્વ઼શક્તિમાનક સોહા કેકર વ઼શ યલૈ। સંતોષ તઁ કરઙ પડ઼ત।"

કછિુકાલ સભ કયિો ગુમ પડ઼િ ગેલ। જેના એક-દોસરક પીડાકેઁ નાપિ-જોખિ રહલ હોથિ।

કાલીકાન્ત ઊપર મુહેઁ તકૈત વાજલ-

"યલહ, વડ઼ વેર ભઽ ગેલૈ। શ્રાગૂક ગપ્પ ગામપર સોયલ જેતૈ।"

પરમુદાસ પઁાજમે પકૈડ઼ નાજેસરકેઁ ડાઢ઼ કેલક શ્રા વાજલ-

"મનકેઁ થિર કરહ શ્રા ઊગ ઉઠાવહ।"

"હોઙ વ઼હી જો નામ નયિ ખાપ્પા।"

શ્રાગૂ નાજેસર શ્રા પાછૂસઁ ગૌશ્રાઁ સભ મુઁહ લટકૌને વ઼ઢિ ભઽ ગેલ છલ।

મનુષ્યક હૃદૈમે દુખ સહવાક શ્રસીમ ક્ષમતા રહૈત શ્રછિ। કેહનો મારી દુખકેઁ રસે-રસે સહ લૈત શ્રછિ।

નાજેસર સોયલિ રહલ છલ શ્રા ઉડૈત વૂનાકેઁ દેખ રહલ છલ। પતા નૈ લગિ રહલ છેલૈ જે હવા સંગે વૂના શ્રછિ શ્રાકિ વૂના સંગે હવા। મુદા વૂનાક મધ્ય વસૈત શ્રાકૃતિ તિરન્તેમે વઙીડ઼ જાઙ છેલૈ। શ્રોર વસૈત શ્રાકૃતિક મધ્ય નાજેસર શ્રપનાકેઁ તકૈત-તકૈત હેરા ગેલ છલ।



८

लोकेसँ चानूलाल अनघोल भऽ रहल छल। पुरुषमे आपसी चरचा आ स्त्रीमे खुसफुसाहैट। पूरे गाम दलमलित। लोक सभ गाममे सँ ससरल जा रहल छल। चुपेचाप, अनठौने।

गाम-घरक कोनो घटना बड्ड तेजीसँ पसरैत अछि। जेना आगिक लुत्तीआह एक घरसँ दोसर घरकेँ अपना चपेटमे लैत बढ़ैत अछि। तहिना एक कानसँ बढ़ियाबात, सबहक पेटमे बात थोड़े पचै छै। केते लोकेकेँ तँ पेटमे बात बसात जकाँ औनाए लगै छै। जँ जल्दी नहि निकलै तँ।

कालीकान्त अपने दलानपर ओंगठल छल। बाबा-पुत्ता ओकरा देहपर लटकल छल। किन्तु ओकर ध्यान ओइ औनतियाक गप्पपर छैक जे लोकमे बैसल छैक।

केतेको गप पंचकेँ एकान्तीमे करल जाइ छै। खुशामद आ पैरवी केलापर पंचो न्याय-अन्याय करैले तैयार भऽ जाइ छै। जखैन पैरवी केनिहार पंचक मनोनुकूल हुअए तखैन तँ।

कालीकान्तकेँ किछु एहने सनसन गप औनतिया सुना रहल छेलै। तखैने सरपंच साहैब आबि गेल। कालीकान्तक आँखि इशाराकेँ औनतिया बूझि गेल। आ चट-दे गुदा कऽ कोनटामे ठाढ़ भऽ गेल।

कालीकान्त खखसैत कनी जोरसँ बाजल-

“यौ सरपंच साहैब, लोक-बालक इन्तजाममे ताजेसरकेँ दिक्कत भऽ रहल छै। कनी ओम्हरो ध्यान दियौ।”

सरपंच साहैब ठमकैत बाजल-

“यौ, ओनाए गाम दलमलित भेल छै। अहाँकेँ लोक छूटि रहल अछि। अहाँकेँ तँ ध्यानो दोसर दिसि अछि।”

चकित होइत कालीकान्त बाजल-

“हमरा किछो पता नै अछि की भेलै से?”

“ललनाक स्त्री बीच्च ख्या लैलके, रातिमे भागि गेलै। थाना खबैर पहुँच गेल छै। थोड़ेकाल मे दरोगा गाममे पहुँचत।”

“केता ललना ऐगाम यौ?”

“हँ यौ, अहीबेर तँ सभ केतपनी घोसड़तै।”

“यौ नेता फुनकबाज छै। केहेन-केहेन अफसरकेँ मुट्ठीमे रखने छै। देखै छिऐ जे बड़का लोकक गाड़ीकेँ हाथक इशारासँ रोकि दइ छै।”

“धूर ई कोन बड़का बात छै। घूसखोरसँ काज करबौनाइ तँ सबसँ असान।”

“नइ यौ सरपंच साहेब। ओना जे कहियौ मुदा नेतबा छै बड़ा सोर्सयिल।”

“जँ सोर्सयिल अछि तँ मुखिया जीक कथी लऽ परोजी करैत अछि।”

“की करतै अपना बुते नै सम्हरल हेतै।”

“तब कोन सोर्सयिल भेलै?”

“अखनी केतए अछि नेता?”

“साइत डागदर संगे फदर-फदर कऽ रहल अछि।”

“डागदरकेँ देखै छी पछिम मुहेँ जा रहल अछि।”

“पूछताछसँ बचबाक लेल केतौ चलि दैने हएत।”

“यौ सरपंच साहेब, अहूँ तँ साइत ओहि डरे ससरल जा रहल छी।”

“नै यौ, हम तँ पूबरिया बाधक खेत देखैले जा रहल छी।”

तीन-चारिटा युवककेँ जाइत देख दुनू गोरेक धियान ओनए चलि गेल। पढ़ल-लिखल बेरोजगार युवक सभ छुट्टीमे गाम आएल छल। आपसमे गप लड़बैत चौक दिसि जा रहल छल।

“एकटा गप नै बुझलिऐ यौ। लेनाक स्त्री बीख खा लेलकै आकि अन्न-पानिक संगे खुआ देलकै?”

“खेलकै आकि खुआ देलकै, जे भेल होइ। मुदा मरि गेल से तँ साँच छै। एकर दोखी तँ लेना आ ओकर परिवारे भेलै।”

“जँ अपने खेने होइ तब केना कऽ दोखी हेतै?”

“परिवारमे तँ परोछ रूपसँ तेतेक दुख आ कष्ट दइ छै। बारम्बार प्रताड़ित करै छै जे महिलाकेँ बेबस भऽ कऽ आत्महत्या करए पड़ै छै। जँ एहेन परिस्थिति पैदा केने होइ तँ दोख केकर भेलै?”

“ठीके, पुरान विचारक लोक सबहक नजैरमे महिलाक कोनो मोल नहि छै। ओहन लोक हरदम महिलापर दाब-चाप देखबैत रहै छै।”

“ऐ शोषण आ अत्याचारक कारणे केतेक उपद्रव होइ छै आ समाजो पछुआ जाइ छै।”

युवक सबहक गप सुनि कालीकान्त तमसाइत बजल-

“અપના સમકેં દેપ્ય કઽ કેહેન અઁતડીમે ભઐવમ વાત વળૈ છૈ। સુનૈ છિપે આકિ નહિ?”

સનપંયો સાહૈવ તમસાશ્ત વળમ-

“સુનવૈ કો, ઈ સબ ગામમે કેકનો મનુપ્ય વુહે છૈ। ઈ છૌડ઼ા સબ અપનાકેં સબસઁ વડ઼કા કાવમિ વુહે છૈ। આ ળાને છૈ ઢોઢ઼ક મનતનો નહિ।”

મપ્પના કમ પઢમ-મપ્પિમ નહિતિ દેશ-વદિશક વાત વુહે છમ। આ વાટક કાતમે ડાઢ઼ બેમ સબ ગપ સુનિ નેહમ છેભે। નૈ નેહમ ગેલૈ તઁ વાળમ-

“ઈ સબ કછિો નહિ વુહે છૈ તઁ આશ્ઇ; વીઇ પાસ કેના કેમકે યો?”

કામીકાન્ત નૈ વળમ મુદા સનપંય યટ-દે મીકેત વળમ-

“ની, પનીક્ષા પાસ કેનેસઁ કપિો કાવમિ નર બઽ ળાર છૈ।”

“તવ કથી કેમાસઁ હોઇ છૈ?”

કામીકાન્તકેં વળઽ પડ઼લૈ-

“વડ઼ કાવમિ છૈ તઁ એના વૌઆપમ કપિ ઘુમૈ છૌ। કોનો નીક નોકની કનિતિ બે।”

“અહઁ નોકની કેનહિનકેં કાવમિ વુહે છિપિ। ઈહ! ઈ કહિયૌ ળે હમન વેટા નૈ પઢ઼મક તઁઇ મને-મન ળનૈ છી।”

“હમના સબ કપિ ળનવૈ। કોયન અપના વનદકેં નાઉંનેમે નાથત આઇસઁ મીકકેં કો વગિડ઼નૈ।”

સનપંય સાહૈવ વાતકેં આગૂ વઢ઼વૈત વળમ-

“હે યૌ, દૂ સાલ ળઁ ઉપળા નૈ હોઇ તઁ સબ નવાવી ઘોસૈન ળેનૈ। ઉપળા ળઁ હોઇત નહે તઁ પઢ઼ૌનાઇ કોન વડ઼કા વાત છૈ।”

મપ્પના પટ-દે વળમ-

“ળઁ એોક સસ્તા ગપ છૈ તઁ અહૂઁ અપના વેટાકેં પઢ઼ા લૈતૌ કનિ।”

સનપંય સાહૈવકેં ળેના મીતન તક છૂવ દેમકૈન તઁઇ આ ગુમ્હઉંત વળમ-

“ઈ છૌડ઼ા સબ અકાસેપન યમતા। હે ની, તોના કોઇ વળેને છેમી ળે મવન-મવન કનૈ છેં?”

કામીકાન્ત સ્ટકાનૈત વળમ-

“હે ની, તૂઁ એડામસઁ ળેવેં કો નહિ।”

“ળાપવ કપિ નૈ। સાઁય વાત અહિના ભૌ છૈ।”

“ઈ કપિક ળાપત હમહી યમિ ળાઇ છી।”

કहैत सનपंय साहैव तेળीसँ वाय दसि व़दि। जऽ गेθ। पदयापसँ नकिθैत क्नोय! ળोऽ θ़ौत पनवा ऊेना गेθ श्रा श्रुऽश्रुऽारत उन्मुक्त श्रकास दसि उऽ़ गेθ। मुदा सनपंय साहैवक यपिान श्रोमहन नै छेθैन। श्रो श्रपना मनसँ θऽ़ैत वढ़θ ળार छθ।◌



प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'विदेह' १९२ म अंक १५ दिसम्बर २०१५ (वर्ष ८ मास ९६ अंक १९२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

६

गाम कनी शान्त जकाँ भऽ गेल छल। तैयो एक मने-मन डेराएल छल। जतिरिया डर निकैल जेना असान थोड़े छै। ओ तँ भीतरे-भीतर कुही करैत रहै छै आ थकुचल जिनगी चलैत रहै छै। संगे इतिहास मारैत सभ कछिकेँ हुँपने बढ़ैत रहै छै, बहादुर सभ।

ओना अही बीचमे तीन-चारि बेर थानेदार आएल छल। मुदा केकरोपर केस नै भेलै। घटनाक दिन सिपाहीक एलासँ पहिनहि इतिहास जरि गेल छेलै। मुदा जरलोहो हड्डी सिपाही सभ बीछि कऽ लेने गेल छल।

डर तँ सभकेँ बनल छेलै जे केकर नाम दारोगाक डायरीमे नोट छै आ केकर नहि। एहने समैमे एक सभ मनमे सैतल दुसमनी सचैत अछि। ऐ कारणे सभ मने-मन आतंकित।

साँझ पड़ैमे कनिये पल शेष छेलै। गोसाँइ डुमानी-बेर। राजेसरक दुआरपिर एक सभ जमा भऽ गेल छल। आइए जगेसरक सराधी भोज छेलै।

ओना राजेसरक स्थिति भोज करबाक जोग नै छल परन्तु सर-समाजक उड़न्त गप सुनलकै। कोर सोहगामे तँ कोर परोछमे। बेबस भऽ कऽ भोज करए पड़लै। जाति-समाजसँ भागियो तँ नै सकै छल।

एक सभ लोटा लटकौने पैछल। भोजक चरचा करैत आबि रहल छल। राजेसरक दुआरिकेँ पछाड़ासँ साफ कएल गेल छेलै। एक गोरे कुकुर आ कौआकेँ लाठीसँ भगा रहल छल।

कनिये भोजक पंच सभ कोलहटामे ठाढ़ भऽ कऽ गप लड़ा रहल छल।

“दुआरि नीकसँ साफ नै केलकै। हौ, सकरता नहि छेलै तँ कथीले भोज केलकै।”

“हे यौ, की कहब कम्मड़ लोकनि कऽ भोज लेलकै। कहि मुँहपुरुखा सबहक बचियार भेलै जे ऐ भोजमे एकरा डाँड़ तोड़ि देतक। सभ नेतागीरी अपने छुरुट जेतै। जन-मजदूर पाटी लऽ कऽ बड़ी जोरसँ गरजैत रहै छै। भोजमे करजकेँ बोझ पड़तै आ ओकरे सचैत जिनगी बीत जेतै। मुखिया बनबाक सपना कहियो पुरा नहि हेतै।”

दोसर गोरे बाजल-

“हौ, जे भोज नै करए से दालि खीच सुड़कए। लोगक ऐठाम जे भोज खेने छै से करजा कहिया सधौत। भोज नहि करतै तँ उद्धार केना हेतै?”

“𑒯𑒿, 𑒯𑒿...। 𑒧𑒼𑒢 𑒞𑒿 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏𑒹 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒧𑒱𑒪𑒞𑒻।”

“𑒯𑒿 𑒨𑒾, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼𑒏 𑒞𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒱𑒨𑒧-𑒏𑒰𑒨𑒠𑒰 𑒕𑒻 𑒞𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒲।”

“𑒋𑒢𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒪𑒏𑒲𑒩𑒏 𑒤𑒏𑒲𑒩 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒥 𑒞𑒿 𑒧𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒴 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒞𑒩𑒧𑒹 𑒂 𑒪𑒠𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒴। 𑒥𑒔𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒏𑒩𑒴।”

“𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒴। 𑒥𑒻𑒮𑒻𑒪 𑒔𑒪-𑒔𑒪𑒴।”

𑒖𑒰𑒞𑒏𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒖𑒱𑒢 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒪𑒙𑒰 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒣𑓀𑒔 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒰𑒖𑒪-

“𑒏𑒲 𑒨𑒾, 𑒮𑒦 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻?”

𑒧𑒪𑒏𑒹𑒮𑒩 𑒚𑒰𑒿𑒯𑒱 𑒠𑓄 𑒥𑒰𑒖𑒪-

“𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒚𑒲𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒲- 𑒮𑒥𑒯𑒏। 𑒖𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒋𑒪 𑒮𑒹 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒣𑒰𑒋𑒞।”

“𑒯𑒿, 𑒚𑒲𑒏𑒹 𑒕𑒻। 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒹 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩𑒹 𑒕𑒻। 𑒥𑒻𑒮𑒴 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒮𑒿।”

𑒮𑒳𑒢𑒱𑒞𑒹, 𑒮𑒦 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒔𑒙𑒰𑒔𑒙 𑒥𑒻𑒮 𑒑𑒹𑒪।

𑒪𑒹𑒢𑒰 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒏𑒰𑒞𑒹𑒧𑒹 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒮𑒩𑒣𑓀𑒔 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒮𑒿 𑒏𑒢𑒐𑒳𑒮𑒏𑒲 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒑𑒣 𑒮𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒯𑒹𑒙 𑒏𑓄 𑒑𑒹𑒪।𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝𑒞𑓁 𑒠𑒳𑒐-𑒥𑒹𑒧𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒃𑒪𑒰𑒖 𑒁𑓀𑒑𑒩𑒹𑒖𑒲 𑒖𑒰𑒢𑒻 𑒕𑒪 𑒞𑒿𑒋 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒹𑒪𑒻। 𑒪𑒹𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒖𑒐𑒻𑒢 𑒧𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒞𑒐𑒻𑒢 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒖𑒾𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒛𑒩 𑒣𑒻𑒮𑒪 𑒩𑒯𑒻 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒲𑓀 𑒧𑒼𑒏𑒠𑒧𑒰 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒹 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒳𑒁𑒋। 𑒬𑓀𑒏𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒹𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻-

“𑒏𑒲 𑒨𑒾 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲, 𑒏𑒹𑒬𑒏 𑒏𑒲 𑒯𑒰𑒪 𑒕𑒻?”

𑒛𑒹𑒩𑒰𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒧𑒩𑒱𑒧𑒩𑒱𑒂𑒃𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

“𑒁𑒐𑒻𑒢 𑒞𑒿 𑒚𑒲𑒏𑒹 𑒕𑒻। 𑒠𑒩𑒼𑒑𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒱 𑒛𑒱𑒮𑒧𑒱𑒮 𑒏𑒻𑒢𑒹 𑒕𑒻।”

“𑒨𑒾, 𑒮𑒾𑒮-𑒮𑒮𑒳𑒩𑒮𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒱𑒢𑒏 𑒑𑒣 𑒏𑒩𑒴। 𑒚𑒲𑒏 𑒩𑒯𑒞।”

“𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾 𑒞𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻।”

𑒮𑒩𑒣𑓀𑒔 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒢𑒖𑒻𑒩 𑒅𑒚𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰-

“𑒨𑒾 𑒦𑒰𑒞 𑒣𑒩𑒮𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒲𑒏𑒚𑒰𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒼 𑒮𑒦 𑒥𑒻𑒮𑒴।”

𑒣𑓀𑒔 𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒥𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒮𑒦 𑒦𑒼𑒖𑓂𑒨 𑒣𑒠𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒣𑒩𑒮𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒮𑒱𑒨𑒰𑒿𑒞। 𑒦𑒰𑒞-𑒠𑒰𑒪𑒱, 𑒞𑒲𑒧𑒢-𑒞𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒣𑒰𑒣𑒛𑓃-𑒁𑒿𑒔𑒰𑒩 𑒂 𑒔𑒙𑒢𑒲।

लोक सभ भोजनक सुआद लऽ रहल छल। ओकरा बेटा किछि बाजए चाहलक तखने मनचला दौगैत आगूमे पहुँच गेल। मनचला चौकपर साग-सब्जीक छोट-छीन दोकान करैए। ओ अपसियाँत होइत ओकराकेँ कहलक-

“यौ बेटा, जल्दी भागू नहि तँ पकड़ा जाएब। दरोगाजी एक दर्जन अफसरक संग आबि रहल अछि।”

ओकरा आनिकऽ ठाढ़ होइत पुछलक-

“कोनेसँ यौ?”

“पछिमसँ गाम लग आबि गेल अछि।”

ओकरा अँइठे हाथे गुआँ समटैत पूबमुहेँ भागल।

कोर कातसँ ठाँहि दऽ बाजल-

“चाहे छुटए संग साथ, नहि छोड़ी आगूक बाट।”

ओकराकेँ भागैत देख ओकर दयािद भोलवा आ पीअर बाबाक कान ठाढ़ भऽ गेलै। भोलवा अपना बगलमे बैसल पीअर बाबाकेँ पुछलकै-

“हौ बाबा, बेटवा किए भागलै?”

पीअर बाबा मुँहक भात घोँटैत बाजल-

“आबैत काल टीटही बाजल रहए। हमरा शंका होइ छौ। साइत पुलिस-दरोगा आबि रहल छै।”

“साँचे हौ? अपनो सभकेँ पकड़तै?”

“हँ यौ, लहास जरबैमे तँ अपनो सभकेँ संग देने रहए। केसमे नाम लेबे करतौ। सुनै छिऐ- थानापर बड़ पिटाइ करै छै। जान नै बँचतौ। कोनो तरहेँ भाग एठामसँ।”

भोलवा हरमुठाह लोक। आगू-पाछू सोचैबला कोनो बुधि नै। तइसँ आँखि तोरा गेलै। अनअनाइत ताकत घटि गेलै। किछु दिन पहिने ओहि गामक सुपड़िया चोरकेँ पकैड़ थानापर लऽ गेल रहै। राति भरि निंगी मरचायक मसालासँ ओकरा सेवा कएल गेल रहए। ई गप भोलवाकेँ बुझल छेलै। ओ मनेमे सोचलक- चाम्हलवा जँ आइ हमरा पकड़त तँ नै जानि जे कोन दशा करत।

तइसँ ओकरा आँखिक आगू अन्हार भऽ गेल छेलै। कोने भागत बाट सुझबे नै करइ। ओ सोहे पाँत दिसि पड़ाएल। केतेक गोरेक पातपर लात दैत, भातकेँ छिड़िआबैत मलकेसरक लग जा कऽ ठाँइ-दे खसल। ओकर देहुन मलकेसरक मुँहमे लागल। मलकेसर चतेंगे खसल, मुँह पकैड़ बपराहैड़ काटए लागल।

लोक सभ हो-हल्ला करए लागल। भोलवाकेँ बुझेलै- साइत दरोगाजी आबि गेल। ओ धुड़-धुड़ा कऽ उठल आ ओकराक पछोड़ धेने भागल।

मलकेसर कुहरैत उठल आ गरियबैत बाजल-



प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'विदेह' १९२ म अंक १५ दिसम्बर २०१५ (वर्ष ८ मास ९६ अंक १९२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“के छैल रौ सार, हौ बाप, जान नहि बँचऽ दैत। कछि दिन पहिने तँ एकटा अगत्ती मखना डाँर सरकौने छल। आर मुहौं भंगड़ा देलक सार भेलवा।”

गरदा हाफैत शेर बाजल-

“हे रौ अतरागि सब, सामरथी रौ रहै छौ तँ बौहकें बीख खयिा कऽ कपि मारै छीहि। हे रौ सार, रही घुरघुरा आ उखाड़ी बचिलघर खामहा।”

भानी घोल-अचक्का होए लगल। ओहि हल्ला-असादक मध्य केतेक गोटे ससरए लगल। जेकर केशमे नाम हेबाक शंका रहै ओ दोगे-दोग बणि गेल। पीअर बाबा खोखैर दसिक लथ लगा। बिदा भऽ गेल। ओकरा पाछू डाक्टर साहेब गाप लड़बैत चलि देलक।

पाँतमे जगह-जगह स्थान नक्ति भऽ भऽ गेल छल। बँचल लोक सब भोज खा रहल छल। मुदा बीच-बीचमे ओर खाली जगहकें देखैत कुत्ता सब आपसमे गुम्हरए लगल। जाबे लोक ‘हाँ-हाँ’ करै ताबे कुकुर सब पाँतमे ढुकि गेल। नष्ट-नष्ट कहि सब गोटे आनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। धिया-पुता पातमे लत दैत भागि गेल। गचकियन मचि गेल। कछिसँ कछि बजैत लोक सब घर दसि बिदा भऽ गेल छल।

रजेसर दुआरकि कातमे ठाढ़ भेल छल। बेचारा केतेक करजा-बरजा करैत भोजक ओरियान केने छल। सेहो समाजकँ पार नहि भऽ सकलै। ओकरा आँखिसँ दहो-बहो नोर खसि रहल छल। मुदा ओर नोरकें देखैबला कियो नहि छल।

एक गोटे बाजल-

“भोज की करत। जश नहि भेटलै।”

दोसर गोटे टोनलक-

“ऐमे केकर दोख?”

रजेसरक देह जेना काठ भऽ गेल छल। ओ शून्यमे निहारि रहल छल। ◌

२

उमेश मण्डल

एकटा विहनि कथा-

मुड़नक मुर

ગોસ ૅંર શ્નાનિ કગાનીપન પહુઁચ ડુમૈઉ ગૈયાન નહૈથ। મનાઇ ઠાકુન શ્નપન દિનુકા કાળ ઉસાનિ હાથ-પયન યોર ક૬ ગમાકુઉ પ્પા શ્નપન સઙગૈનિયા સભકેઁ ઉ૬ મહાવીનાળીક સ્થાન પહુચૈક વયિાનમે દનવળ્ળાપન વૈસા પત્નીક પ્નતીક્ષામે નહૈથ ળે ળપ્પને શ્નૌતી ગપ્પને શ્નપન કામ-યામ સુમહા વદિ। હયવ।

મનાઇ ઠાકુનક પતિ। યાનિ-પાન સાઉ પહિનહિ ઈ દેશ-દુનિયિ ૅાં છોડ઼ િશ્નપન દેશ-દુનિયિ ૅાંમે પહુઁચ ગેઉ। વ ૃદ્ધ માએ ળીવતિ છૈન શ્ના શ્નપને દુનૂ પનાનીક સંગ ગીન-યાઇટા યયિ।-પુતા પનિવાનમે છૈન।

શ્નોના કાળ ગ઼ વ ૅાંટઉ છૈન, મુદા એક પનિવાનક વીય નહિ છૈથ ગઁએ સભ દિન દુનૂ પનાની મનાઇ ઠાકુન ભનિ-દિનુકા કાળક મુઁહ-મળિાની કનૈત, કૌહુકો કાળક સૂયીવદ્ય સભ દિન ક' ઉઇ છૈથ।

ળહિના મનાઇ ઠાકુનક દેશ પુનુપ્પ-પાત્ન શ્ના દુનિયિ ૅાં હોઇ છૈન હુનકન કેશ-દાઢ઼ી વનાએવ, ગહિના શ્નઉોયનિયૌંક દેશ હોઇએ સ્ત્નીગામ, હુનકન હાથ-પયનક નહ કાટવ દુનિયિ ૅાાં શ્નન્થાત્ મનાઇ ઠાકુન શ્નપના દેશ-દુનિયિ ૅાંમે નમઉ નહિ છૈથ શ્ના શ્નઉોયની શ્નપના દેશ-દુનિયિ ૅાંમે। મુદા એકેઠામ, એકે પનિવાનમે, સંગે-સંગ દુનૂ પનાનીક કાળ-નોળગાન નહઉ, પ્પાઉ કાળક દેશ-દુનિયિ ૅાં શ્નઉગ-શ્નઉગ, ગઁએ એક-દોસનક હિસાવ-વાડ઼ીક મુઁહ-મળિાનીક પનોળને નહિ પડ઼ૈ છૈન। કનિક ગ઼ દેપ્પઉ શ્ના શ્નઙયિાએઉ હિસાવ દુનૂ ગોનેક વીય નહિ છૈન।

મુદા શ્નૌહુકા કાળ વઁટા ગેઉ છેઉેન। સનાયક કાળમે પુનુપ્પ-સ્ત્નીગામ સભકેઁ નૌશ્નાક પનોળન પડ઼ૈત શ્નછિ, મુદા મુઙનમે ગ઼ સે નઇ હોઇએ। એકટા વાઉ-વોયક કેશ કાટઉ ળાઇએ। શ્નઉોયનિયૌં શ્નાઇ દોસને કાળે શ્નાનઠામ ગેઉ છેઉ। મનાઇ ઠાકુન શ્નપન શ્નૌહુકા કાળક હિસાવ પત્નીકેઁ સુમહેનાઇ ળનૂની વહિ ડેઢ઼િયાિપન વૈસઉ સોયૈત નહૈથ- ળપ્પૈન મહાવીનાળી-સ્થાનપન સઙગૈનિયા સવહક સંગ કીત્તન-ભળન કનએ ળાએવ, ગપ્પૈન કોન ઠેકાન શ્નછિ, ળઁ કહી વૌનાઇએ ળાએ, ગપ્પૈન ગ઼ શ્નૌહુકા હિસાવ માથપન ઉગયઉ નહત।

પુનના સાડ઼ીમે ગીન-યાનિટા મોટની-યોટની વનહને શ્નઉોયની ડેઢ઼ીયાપન પહુઁચઉ ને છેઉ ક િમનાઇ ઠાકુન કહઉપ્પિ-

"પહિને સુનિ ઉશ્નિ, ગપ્પૈન શ્નઁગના ળાએવ।"

ભનિ દિન શ્નયોયની પતિ વિહીન વોનાએઉ-વોનાએઉ ઉવયિાએઉ છેઉ। ગઁએ મોટની-યોટની શ્નાઁગનમે નાપ્પવ સ્વત: વસૈન ગેઉ। ઉગમે શ્નાવિ વિળઉ-

"કોન એહેન યઙશ્નડ઼ી ભ૬ ગેઉ ળે નસ્તોસઁ નસ્તા ઘુમા ઉેઉ! કહૂ કી કહૈ છી?"

ળહિના શ્નપના ધુનમે શ્નઉોયની ગહિના શ્નપના ધુનમે મનાઇયો ઠાકુન નહૈથ। વળઉ-

"શ્નાવ શ્નપન યન-શ્નઁગનાક હિસાવ ઉેવ શ્નાક િમિ શ્નોકના કનહેઠને ઘુમૈત નહવ! "

હાથક મોટની-યોટનીકેઁ શ્નોસાનપન ળા ક૬ નાપ્પ િશ્નઉોયની ઉગમે શ્નાવ િસિમાન્ય નૂપે પતિકેઁ પુછઉકૈન-

"શ્નૌહુકા મુઙનક કમાઇ કી સભ ભેઉ શ્નછિ।"

મને મગન મનાઇ ઠાકુન નહવે કનૈથ, વળઉ-

“सुन पढ़ै तँ गायए साहु, औहुका कमार की तकै छथि। आर तँ एकटा मुड़े बढ़ि गेल, तखैन अनेने कोन सुन्दर जँजमे नहितौ।”

अपना मने अपना ढंगे जहिना मनार ठाकुर बजला तहिना अपना मने आ अपन ढंगे अलोयनियोँ बुझैत, कनीकालक पछाति अलोयनीक मुहसँ निकलल-

“एहनो कमम जनूआ पुरुष हुअए!”

‘कमम’ शब्दक अर्थ मनार ठाकुर अपना हिसाबे बुझै छला। मनमे नचैत जे बाल-बोचक जन्मौटी केश काटि एकटा सम्पतैक मुड़ पूजी बँचाबि गेल तखैन अनेने सूदखोक करि वनितौ! सङगौनिया लोक छी, नाम जाजत कनै छी, तखैन अपनो मत की कहैत? मुस्कुराइत मनार ठाकुर बजला-

“हँ! बड़ सुन्दर मुड़नी-लोज बनल छेलए। जेहने पीर बनल तेहने पुड़ी।”

पतकि पीर-पुड़ी सुनि अलोयनीक मन महकैत नर बलकी जेना बाइस-तेवार पेने मन घटा जाइ छै तहिना घटा गेलैन। बजली-

“सदिहा-समर की सज अनली, से ने कहू?”

मनार ठाकुर कहलखिन-

“बँकी की नहल जे अनितौ। दनिके तेहन पेलहा अछि जे मात्र लोटा पानि पीने नतिपो कटि जाएत!”

अलोयनीकेँ जेना एकेबेर हौ चढ़लैन तहिना पति मनार ठाकुरक गट्टा पकैड़, चौकीपर सँ उठबैत कहलखिन-

“चलू अपने गतिहत ऐठाम। अपन बक्सीस केना छोड़ि देब।”

असबीसमे पड़ल मनार ठाकुर कौतुहका समए मंगैत बजला-

“अपैन पहिल सँाद छी, हलल-अशाद नर कनू, हमहूँ कीत्तत-जाजत कनए जाइ छी, जतना नर जड़गाठा।”

अलोयनी-

“एहेन पुरुषक कोन ठेकान जे।”

दुनू हाथ जोड़ि मनार ठाकुर बजला-

“हाथ जोड़ि कहै छी जे अपैन जाउ, अहूँ अपन घर-अँगना सम्हारू आ हमहूँ जाइ छी। काल्हि जोने दुनू गोटे चलि कs अनिछा लेब।”०

३

आशीष अनचिन्हार

बाल्हमपशिाय

(વ્યંગ્ય)

વદ્‌વાન સબ કહિ ગેલ છથિ-- ૧સ ની ન પ્૧કા૧ક હોઇત છૈ। પ્૧માદ ૧સ, વષિય ૧સ આ ભાગવત ૧સ। નીકકેં ખ૧ાપ કહિ છોડ઼િ દેવ આ ખ૧ાપકેં નીક કહિ ગ્૧હણ ક૱ લેવ ભેલ પ્૧માદ ૧સ। નીકકેં ગ્૧હણ ક૱ લેવ ભેલ વષિય ૧સ। આ નીકકેં ગ્૧હણ ક૱ દુનિયાઁ લગ ઓક૧ સહી પ૧ચિય દેનાઇ ભેલ ભાગવત ૧સ।

મુદા માન્યતા અછિ જે નીકકેં ગ્૧હણ ક૱ ઓહિપ૧ અપન નામ લિખિ અપન વના સંસા૧ લગ અપન કહિ પ૧ચિય દેવ ભાગવત ૧સ છૈ। વહુત પશિાય સબ આજુક સમયમે એ ત૧ીકાસઁ ભાગવત ૧સ લેવામે સબસઁ આગૂ ૧હૈત અછિ જે ભાગવત ૧સ કેક૧ોસઁ છૂટિ જાઇત છૈ ત લેલ દોસ૧ પશિાય સબ વૈસલ છૈ। એ પશિાય સબ લેલ કછુ અસંભવ નૈ છૈ। અહાઁક સામને અહીંક દેહ નકિાલિ કહત જે ઈ હમ૧ દેહ અછિ આવ અહાઁ ચચિઆઇત ૧હૂ। ઓક૧ સંગી સબ સેહો ઓઇ દેહકેં ઓકને દેહ કહતૈ। આ સે સંગી સબ કિએ ને કહતૈ આખિ ઓહો ત઼ ઓહિ પશિાય સબહઁક સંતતિ છૈ ને। અચ્છા પશિાયસઁ મોન પડ઼લ વ્૧મ્હપશિાય આ ઈહો મોન પડ઼લ જે પશિાયકેં વ્૧મ્હપશિાયે સબ વેસી તાગતિ દૈ છૈ। પશિાયક ખુ૧ાક વ્૧મ્હપશિાયે લગાસઁ ભેટૈ છૈ। ખુ૧ાકે નૈ ઓક૧ ત૧ીકા, વ્યવહા૧, અસ્ત્૧-શસ્ત્૧ સબ કછુક આપૂ૧્તકિ૧્તા વ્૧મ્હપશિાયે છૈ। ઠીક અમેરીકા આ અલકાયદા જકાઁ।

અમ઼ૃત લેલ જેના દેવતા આ દાનવમે સંઘર્ષ ભેલ ૧હૈ આ અમ઼ૃત નકિલલાક વાદ દેવતા સબ દાનવકેં ધોખા દેને ૧હૈ તેહને ખેલ પશિાય આ વ્૧મ્હપશિાયક વીચમે છૈ। જખન પશિાય સબ ભાગવત ૧સકેં અપન કહિ દૈ છૈ તખને વ્૧મ્હપશિાયક કાજ ખત્મ ભ૱ જાઇત છૈ કા૧ણ ઓક૧ જે ઉદ્દેશ્ય ૧હૈ છૈ પશિાયક વદનામી સે પૂ૧ા ભ૱ જાઇત છૈ આ તક૧ વાદ વ્૧મ્હપશિાય ઓઇ પશિાયકેં લાત માનિ ક૱ ભગા દૈ છૈ। સ્ટે૧ જનૂ૧ત પડ઼ૈ છૈ યા પુ૧ના પશિાય આઁખિ દિખવૈ છૈ ત઼ દોસ૧ પશિાય ૧ાખિ લેલ જાઇત છૈ। ઠીક માલકિ- નૌક૧ વલા સંવંધ છૈ। ઇતહિાસ ગવાહ અછિ જે કાજ ભેલાક વાદ પશિાય સબકેં લાત લગા ભગેવે કએલ ગેલૈ આ વદનામી સેહો ભેલૈ। ઇતહિાસે કિએ વ઼૧્તમાનો ગવાહ અછિ એક૧। આવ સ્ટે૧ ઘુ૧િ આવી ૧સ કે૧ ચ૧્ચાપ૧। ઈ પશિાય-વ્૧મ્હપશિાય સબ ત઼ હોઇતે ૧હલૈ, હોઇતે ૧હતૈ। એક૧ ૧ોક૱ વલા કિયો નૈ છૈ કા૧ણ જત૱ વ્૧મ્હ તત૱ વ્૧મ્હપશિાય આ પશિાયો તહિ ઠામાઠીક પહિએ જકાઁ ખદવદ ક૧ૈત પશિાય આ વ્૧મ્હપશિાય। ત઼ઇ હમ કહલહુઁ જે સ્ટે૧સઁ ૧સ કે૧ ચ૧્ચા આવી। ઓના ૧સ કે૧ ચ૧્ચાસઁ પહિને એકટા આ૧ ગપ્પ દાનવકેં ધોખાસઁ અમ઼ૃત નૈ ભેટલૈ ઓ અમ૧ નૈ ભેલૈ મુદા ભવષ્યિક હ્નેક લોકકેં પતા ચલૈત ૧હલૈ જે દેવતા સબ ધોખા દ૱ ક૱ અમ઼ૃત પી ગેલૈ તેનાહતિ ભલ હો અસલી ભાગવત ૧સ વલાકેં નામ નૈ હોઇ મુદા ભવષ્યિક હ્નેક લોકકેં ઈહો પતા ચલૈત ૧હતૈ જે પશિાય ધોખા દ૱ ક૱ ઓઇ ભગવત ૧સકેં અપન વના લેલકૈ।જેના દેવતા સબ અભશિપ્ત છૈ જે મોને-મોન ગા૧િ સૂન૱ લેલ, ઉપ૧ાગ સૂન૱ લેલ તેનાહતિ પશિાયો સબ પૂ૧ા જનિગી અભશિપ્ત ૧હતૈ। સંસા૧કેં પતા ચલતિ ૧હતૈ જે ભાગવત ૧સક અસલી ધા૧ા કમ્હિ૧સઁ નકિલૈ।


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

૬ ñ છ૭ પશિાયક હાઉ વ્નમ્હપશિાય સમ ñ સમ દનિ ળકાઁ મૌળ કનૈ નહ્ગ કાનાम ઞોકન સમ કાળ પશિાયે કનૈ છૈ। સમ મેહ્નગ ઞ્ના વદનામી પશિાયક ઞા મૌળ વ્નમ્હપશિાયક।

ऐ नयनापन ઞપન મંગવ્ય **<u>ગગાળેનદનાવ્દિહ્યોમ</u>** **પન પઠાઉ।**

<u>૩ પદ્ય</u>

<u>૩.૧ઞાશીષ ઞનચનિ્હાન- ૨ ८ા ગળ૭</u>

૩.૨૯ ॐ **શશધિન કુમન "વ્દિહ"**- ૬ કી બે૭ ! ?! ?! છઠ ગીત - ૧ છઠ ગીત - ૨ ૭પ્પકક ળનિગીક છન્દ ૭પ્પકક ળનિગીક છન્દ

<u>૩.૩.૧ઞસન્સ્ઠ નાજ્ન- પનદેશી મનક બાવ્ના ૨ઞોમપ્નકાશ ઙ્ગ- ગળ૭</u>

૩.૪નવ્ ઞૂષામ પાઠક

<u>૩.૫ પ્૭૭વ્ી મામ્૯૭- ઞપન નળૈનકિ દુનયિાઁ</u>

ઞાશીષ ઞનચનિ્હાન

૨ ८ા ગળ૭

ગળ૭

૧

ઞોકન નૂપ વહ્ગ દૂન ૭ऽ ળૌ હમના

નંગ ઞનૂપ વહ્ગ દૂન ૭ऽ ળૌ હમના



पथिया डाला मौनी सुप्ती कनसुप्ती

छिट्टा सूप बहुत दूर लऽ जेतै हमरा

ऐ पूजा पाठक बदला जिनगी मंत्रक

जापे जूप बहुत दूर लऽ जेतै हमरा

ओ मेटै की नै मेटै तैयो ओकर

छापे छूप बहुत दूर लऽ जेतै हमरा

कहियो एतै अनचिन्हार हमर आँगन

चुप्पे चूप बहुत दूर लऽ जेतै हमरा

सभ पाँतिमे २२२+२२२+२२२+२२ मात्राक्रम अछि

दूटा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

२

कनी अहीँसँ माँगब हम

खुशी अहीँसँ माँगब हम

गलत लौत हो तैयो

सही अहीँसँ माँगब हम

મને કના કઽ દશ્રિ ઙેકનિ

હૅસી શ્રહીँસँ માગાવ હમ

શ્રપન મનામ્ર યનાકિ પ્પાતા

વહી શ્રહીँસँ માँગાવ હમ

દયિૌ વહુત મુદા વાँયઙ

કમી શ્રહીँસँ માँગાવ હમ

શ્રહૉ મના કયિા કનાવે

ળદી શ્રહીँસँ માँગાવ હમ

સ્રા પાँતમિ ૧૨- ૧૨- ૧૨૨૨ માત્નાક્નામ શ્રછિ

ઐ નયનાપના શ્રપન મંતવ્ય ગગાળેનદનાવદિહયોમ પના પઠાઉ।

૭ૂ ં॰ શ્રશયિન કુમના "વદિહ"- ૬ કી ભેઙ ! ?! ?! છઠ઼ ગીત - ૧ છઠ઼ ગીત - ૨ ઙેપ્પકક ળનિગીક છન્દ

ઙેપ્પકક ળનિગીક છન્દ

૧

૬ કી ભેઙ ! ?! ?!

શ્રહૅ કહૈત છી, ૬ કી ભેઙ ! ? !

હમ કહૈત છી, કછુિ નંઇ ભેઙ ॥



सुखमा छीनल,

धरिणा हारल।

अपन अपन सभ,

दुःख केर मारल।

अपन बेगानौं,

सभकेओ भागल।

दिन सूतल आ

रातिमे जागल।

अहँकेँ अचरज लागि रहल अछि।

हमरा लए किछु नव नहि भेल॥

ओहए दिन छै,

ओहए राति छै।

ओहए लोकसभ,

ओहए जाति छै।

देखल पाथर,

खन्हल खाधि छै।

ओहए हवा छै,

ओहए आगि छै।

जन्मौटी बच्चा भौचक अछि।

हम कहैत छी, देखल खेल॥

ओएह सृष्टि छै,

ओएह प्रलय छै।

एक्कहि गाछ छै,

एक्कहि बीया छै।

ओएह काल छै,

ओएह हृदय छै।

नीक–बेजाए, ढेर

ओएह समय छै।

पहिल दृष्टिमे सभ किछु नूतन।

दोसर समटा पेडे पेड॥

कालसँ अयलहुँ,

काल कऽ जायब।

नेनहुँ पर

उत्तर नहि पायब।

जनि जानिजो,

कनहु बौआएब।

घुरि- फीरि घुरि,

एहि ठामे आएब।

परमेश्वर केर सभ "पेड" छी।

"शाक" अपन वृही वकरेड॥

२

<u>छठि गीत - १</u>



મૉંગૈ૧ છી વ઼ન્દાન, કનેક અહૉં હોરૂયૌ ને સહાય।

હમરો સુનિયૌ હે છઠિ માય!!

મહિમા અહૅંક વહુત છી સુનને।

હમહૂઁ છી કછિ આશા નપ્પને।

કાતિક માસ શળોનિયા પપ્પને।

ષષ્ઠી તિથિ હમહૂઁ છી ળપને।

હમરો મોનક વાત સુનૂ માઁ, હનિયૌ સકળ વળાય।

હમરો સુનિયૌ હે છઠિ માય!!

અસ્તાચળ સહ ઉદતિ ભાસ્કર।

અર્પણ અર્ઘ્ય કરૈ છી સાદર।

તેળોમય ભાસ્વર હે દનિકર!

ક્ષમા કરવ ગળતી સબ હમર।

હમરો મોનક આશ પુરવિયૌ, કનિયૌ કોનો ઉપાય।

હમરો સુનિયૌ હે છઠિ માય!!

હમહૂઁ મનુષ્ય સાધારણ છી।

આયળ આર કછિ કારણ છી।

સબ ઠાઁ સઁ હમ હારળ છી।

થાકળ આઓર હમારળ છી।

પ્પોરછ હમર પ્પાળી ળુનિ ભિપ્પયૌ, કનિયૌ ને વેળાય।

  मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

હમનો સુનયિો હે છઠિ માએ !!

३

છઠિ ગીત - २

દીન - હીન પાપી મુનુષ્ય હમ, કએ૭ુઁ વડ઼ અપનાધ।

ક્ષમા કનૂ ન૨યો હે સુનૂળદેવ દનિકન દનિાનાથ !!

ડાઢ઼ પાનમિ વનિય કનૈ છી।

નાળિ અપનાધક ક્ષમા મઁગૈ છી।

અનઘ નેને છી ડાઢ઼, કનૂ સ્વીકાન હે દીનાનાથ।

ક્ષમા કનૂ ગ૭ની હે સુનૂળદેવ દનિકન દીનાનાથ !!

અપના ૭૭ સૌભાગ્ય મઁગૈ છી।

અપના પ્યો૨છક ૭ાળ મઁગૈ છી।

હમ અળ્ગાની, દેવ અહાઁ છી, હો૨યૌ ને સનાથ।

ક્ષમા કનૂ ગ૭ની હે સુનૂળદેવ દનિકન દીનાનાથ !!

સઉિથ સનિૂને ૭ા૭ મઁગૈ છી।

કોના સુન્નન ૭ા૭ મઁગૈ છી।

સયિ઼ા-યયિ઼ા અઁગના ખે૭એ આ ખે૭એ વા૭-ગોપા૭।

ક્ષમા કનૂ ગ૭ની હે સુનૂળદેવ દનિકન દીનાનાથ !!

४

૭ખ્યકક ળનિગીક છન્દ



प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १९२ म अंक १५ दिसम्बर २०१५ (वर्ष ८ मास ९६ अंक १९२) मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गीत कविता ओ निबन्ध।

गजल प्रसिद्धि ओ प्रबन्ध।

उपमीकें ठक वृहत, उपकक ललितक छन्द॥

बात नँऽ कछु सत्य सेहो,

बात कछु झूठियो नहि छै।

बात कछु अपना मनक,

कछु आन केर सेहो कहै छै।

बात कछु अनुभव आयाति,

आन कछु देखल-सुनल।

बात कछु सहमति मनक,

आ बात कछु जे नहि पढल।

नैं कोनहु साहित्यकारक, उपमी-ललितो स्वतन्त्र।

उपमीकें लगि वृद्ध अहँ, उपकक ललितीक छन्द॥

उपमी नहि बान्ह मानए,

की परक आ की अपन।

उपमी नहि भेद वृहए,

की यथार्थ आ की सपन।

उपमी हर आढ़ि याँगए,

की सुखक आ की दुःखक।

उपमी नँऽ सेन्ह मानए,

आन आ अप्पन मनक।

नै कोनहु उपमक केर जिनगीक, उपमो ने छी कलम।

कछु नैऽ हुना जिनगीक दरपन, शेष स्वयच्छन्दे श्रवन॥

अंगूर केर दाना सुकोमल,

कोमलहि देखबामे छी।

नारिकेरक भीतरी ओ

बाहरीक तुलना ने छी।

नै कोनहु उपमक केर,

जीवनवृत्तमे से ध्यान राखी।

उपमीमे दर्प जिनगीक,

अछि कतेक अनुमान राखी।

सएसँ शुन्ना यरकि प्रकाशित, केर रहैछ सम्बन्ध।

आन साक्ष्यक थी सहारा, वृद्धि पड़ए जँ द्वन्द्व॥

५

श्री गणपति वन्दना

जय गणेश गजवदन विनायक।

जय जय हे गणपति गणनायक॥

गौरीसुत हे गिरिजानन्दन।

प्रथमपुज्य हे सादर वन्दन।

सकल अमंगल विघ्न विनाशक।

जय जय हे गणपति गणनायक॥



भालचन्द्र अहँ एकदन्त।

हे शंकरसुवन भवानीनन्दन।

सकल कार्य सिद्धि शुभ दायक।

जय जय हे गणपति गणनायक॥

पीतवसन, आँजी कर शोभित।

महाकाय, मूसहि पर राजित।

मोदकप्रिय अहीँ सिद्धिविनायक।

जय जय हे गणपति गणनायक॥

जय हे वक्रतुण्ड लम्बोदर।

जय हे गणाध्यक्ष सुरेश्वर।

ऋद्धि-सिद्धि स्वामी सुखदायक।

जय जय हे गणपति गणनायक॥

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.असरफ नाज़िर- परदेशी मनक भावना २.ओमप्रकाश झा- गजल

१

असरफ नाज़िर

परदेशी मनक भावना

बहुत दू साल सऽ
सात समुद्र पार
ई मरुभूमिक देश मे
अपन स्थान खोय रहल हम



શ્રાર હમના ઘન ળેવાક
સમય પૂના ભऽ ગેલ
મુદા -
તૈયો મોન પૂનાહ્ય સન્તુષ્ટ નૈ શ્રછિ
પ્પટકૈત નહૈય હન છન
મન મસ્તષ્ક મે વસ
એકહટા વાત
કી કહીં
ઈ દૂ સાલ કે શ્રંતનાલ મે
હમના સવ કેશ્રો
વસિના ત નૈ ગેલ હેતૈ
મોહ માયા હમના સऽ
તોળ ત નૈ ઉને હેતૈ
શ્રપન પ્રેમ-સ્નેહ સઁ
વન્યતિ ત નૈ કऽ દેને હેતૈ
રરહ સોચિ-સોચિ શ્રાર-કાલ્હિ
હમન ઈ મોન વહુતે
નિરાસ નહૈયા

©શ્રસનશ્ર નારન
સતિનળોડા, યનુષા
હૉલ :કતાન

२

શ્રોમપ્નકાશ ઝા

ગળલ

શ્રાઁખ્યિ મસ્તી ળે શ્રપન શ્રો પયિા દેલક
વતુ પીને હમના શનાવી વના દેલક

સમ્હાનલ છલ ઈ કનેળા વહુત ળતનસઁ
નૈનક સંકેતસઁ ગગનમે ઉડા દેલક

શ્રનકા નયવૈમે છલૈ મસ્ત એપ્પન યનિ
તા તા થૈયા નાચ હમના કના દેલક

ળે નૈ વુઝતૈ વાત તકનાસઁ શ્રાસે કી
વેદન્દી દન્દે કનેળક વઢા દેલક

કોના મોટન "શ્રોમ"કેં ચૈન ણળય ય઼ૌ
પર્દા પ્રેમક શ્રાવ શ્રપને હટા દેઉક

૨૨૨૨- ૨૧૨૨- ૧૨૨૨
પ્રત્યેક પાઁતિ એક વેર

ઐ રચનાપર શ્રપન મંતવ્ય ગગાળેનદ્ર૦વિદેહયોમ પર પઠાઉ।

રવિ ભૂષણ પાઠક

૧

શ્રસ્સી કે ઉગાનગોને
ઊ ગામ મે છથનિ

કાળક શ્રસ્થિ-ઉપાસ્થિ

શ્રા સુનર વ઼ઉ તત્રકિ તત્ર સવ વસયિ઼ા ગેલે

શ્રાવૈત-જાઇત ધ્વનિ સગિળઉ તોમૈત

શ્રહાં કેહ સકૈ છથિ઼ કિ ભિંગ ઉગલિ ગેલૈ વૃરહ કે કાન મે

શ્રા ઈહો કિ વિટરીક સમાપ્ત ભ' ગેલૈ

મહિાઇત કાળક દમ કેં સકાૈત

શ્રહાં કહિ સિકૈ છથિ઼ દૂ શ્રા દૂ પાંચ

શ્રા શ્રો કછુ િળર કહતા

શ્રહાં કહહવે કરયિ઼ળક પૂવ મે વાગમતી
શ્રા શ્રો વૃહતા જે શ્રહાં સતે વાળૈત હોયવ

સાહસ ણવો કિ ભિળક રાખા ભેઉ કાશી કે
શ્રા શ્રો મુસકયિ઼તા ઐ શ્રાત્મવિશ્વાસક સાથ કિ શ્રહાં દૂઠ કએક વાળવ

મુદા વાંચવ તપ્પને તક
ભપ્પન તક કિ વૃરહ થાહતા ળર

શ્રા થાહૈત-થાહૈત
મુપ્પ-ભંગિમા કે પરહૈત-પરહૈત


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

વૂ૧હ્ય યદિ વૂદિ ગેળ શ્રહાંક ષ્પેઙ

ດ'શ્રો નૂક્ષિ કે શ્રહાંક ગામતિ દુનૂસ્ન ક૧ດા

સાશ્ચ ક૧ດા શ્રહાંક દશિાસૂયક માનયતિ૧

શ્રા ષ્પોષ્પયિાશ્ન કંડ સઁ કશ્ચ નકિાઉન

ક્૧મવદ્ય ક૧ດા શ્નહાિસક કછુિ પત્ના

२

સમૈ બાગ િ૧હઉ સત્ન
શ્રા સત્ન ક િબાગ િ૧હઉ કાઙક યક૧

યક૧ક શ્રવાળ સવ શ્રપના-શ્રપના દમ સઁ વૂહૈન ગેઉ

શ્રપના-શ્રપના વૂત્ના સઁ સવ યક૧ક કોષ્પ િમ િદૈન ગેઉ મોવઉ-નેઙ

મુદા નેઙ યક૧ક ઘ૧ષામાત્મક શક્ત િકેં કમ નઽ ક' સકઉ

યક૧ યાનૂ કાન વ૧હૈન ગેઉ

યાનૂ કાનક ળમીન ળેળાન િપ૧ પઞૈન ગેઉ નશિાન

શ્રઽ નશિાન કે ૧ામ ૧ામ ળેકા શ્રા
૧હીમ ૧હીમ ળેકા પ૧હઙકૈ

३

એષ્પન ດ' શ્નહો નઽ નત્તિમય બેઉ ક િવૂ૧હાક કાન દેષ્પાયઙ ળાએ

એષ્પન ດ' શ્નહો નત્તિમય નઽ બેઉ ક િડાકડ૧ક દેષ્પેળ સઁ કછૂિ શ્રૈદા બ' સકૈ છૈક

એષ્પન ດ' શ્નહો નઽ નત્તિમય નઽ બેઉ ક િવૂ૧હા કે કાન સઁ કી શ્રૈદા

શ્રા શ્રોઽ કાન સઁ ઘ૧-પ૧વાિ૧ કે કી શ્રૈદા

શ્રા કહી વૂ૧હા વેશી સુન' ઙાગઙષ્પિ ດ'
શ્રા કહી વૂ૧હાક કાનક પાવ૧ વેશી નેળ બ' ગેઉ ດ'

શ્રા એમહ૧ સવહક કનયિાં કે ળો૧ સઁ વળવાક શ્રાદન બ' ગેઙ છઉ

એમહ૧ સવહક કનયિાં વાન-વાન પ૧ માઞૈ ડહક્કા



एम्हर नइ रहै कुनो बेकर कुनो आड़ि

त' अर मशीन सँ ओहिनार कनिर आंगनक समीकरण

से बूझहाक कानक मशीन के आगत

बेटा-बेटी या कि पोता-नातिन

आ एहने सन बहुत रास प्रश्न रहै

ओकर उत्तर सबके पासे मे रहै

ऐ रचनापर अपन मंतव्य <u>ggajendra@videha.com</u> पर पठाउ।



<u>पृथ्वी मण्डल-</u>

<u>अपन अलौकिक दुनियाँ</u>

सब देखैत छै अपन नड़रयि दुनियाँकेँ

सबकेँ अपने नड़रयि दुनियाँ लागतो छै

अपना सन



કની-કની વુદ્દિ પિડ઼ૈ છૈ

ળેતે ઊક તેતે નળ઼ૈન શ્રા તેતે નંગક દુનિયિઁ

સનક ઊઊ શ્રહૉ નીક નહિ બિડ સકૈ છી

શ્રા ને સવહક ઊઊ વેળાए

સળ્ળનતા સસ્તા છૈ

ઊક દૂટા મીઠ ગપ્પ વાળિ

શ્રુસઊ ઊ૨ए

મુદા

શ્રસળ્ળનતા શ્રોતવે મહ્ગા

ઊપ્પ નીક કાળ કેઊક વાદો

સ્નેહ, પ્નેમ કયિો નહિ પાવિ સિકૈए

શ્રોના તઁ

ઊક શ્રહૉક નીક કાળકૈં હૉપૈત શ્રછિ

શ્રાશ્રોન શ્રહૉક કમીકૈં ઉળાગન

કછુિ કમી તઁ સનમે હોરતે છૈ

મુદા

एતए તઁ મોટવિટ કમ

ડમિોટવિટ ળ્યાદા કएઊ ળાર છર!

ऐ નયनાપન શ્રપન મંતવ્ય ગગાળેનદ્ના@વિદેહા.યોમ પર પઠાઉ।

વાઊનાં કૃતે



विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

<u>भाषापाक</u>

१.आशीष अनचिन्हार- बाल गजल २.डॉ. शशिधर कुमर "विदेह", तथा श्रीमति सुप्रिया देवी कुमारी रूपरूप (बाल विज्ञान कथा)

१

आशीष अनचिन्हार

बाल गजल

बकरी आबै अररर
कुक्कुर भागै हररर

बगड़ा मैना बगुला
कौआ बाजै कररर

डमरू ढन उमरू ढुन
बौआ पाढ़ै भररर

नीचै अंगा पैन्टो
बौआ मूतै छररर

घिरनी नाचै घन घन
गुड्डी उड़ै सररर

सभ पाँतिमे २२- २२- २२ मात्राक्रम अछि
दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानल गेल अछि।

२

डॉ. शशिधर कुमर "विदेह", तथा

श्रीमति सुप्रिया देवी कुमारी

<u>रूपरूप</u>

(बाल बिज्ञान कथा)

एहि बाल बिज्ञान कथाक अधिकांश भाग १८ दिसम्बर २०१४ ई० (बृहस्पतिदिन आ पूसक अन्हरिया पक्षक एकादशी तिथि) कऽ जे भूकम्प आयल छल तकर प्रभाव भने लिखल गेल छल। तेँ एहि कथाक परिप्रेक्ष्य ओही संदर्भ मे ली से पाठकगणसँ निवेदन। ई भूकम्प भारतीय मानक समय केर अनुसार रातिमे ०८ बाजि कऽ ०२ मिनट आ १० सेकेण्ड पर आयल छल। एकर आकार रिक्टर० पर ५.५ जनाओल गेल अछि तथा एकर मूल केन्द्र नेपालक प्रसिद्ध नामचे बजार सँ २६ कि०मी० उत्तर पश्छिममे आ १० कि०मी० गहीर छल।

भोरुका समय छल। कुहेस लागल रहै। मुदा धिया - पुतासभ कहाँ मानए बला छल। भोरे भोरे सूति-उठि कऽ लुनू-खुनू करए लागल छल। जिनगीमे शायद पहिलहि बेर एकटा बिचित्र पर भयावह घटनासँ साक्षात्कार भेल छलै।

— गए प्रीति ! पता छौ, काल्हि रातिमे भूकम्प आएल रहै – प्रीतिकेँ अपना दिशि अबैत देखि सोनी बाजलि।

— हँ से तँ ठीके। काल्हि हमसभ पढ़ैत रही कि अचानके चौकीसभ जोरसँ हिलए लागै – सोनी उत्तर देलक।

— अरे ! बुझलही की, हमरा तँ भेल जे भूत आबि गेल अछि, आ हमर चौकीकेँ जोरसँ हिला रहल अछि।

बबलूक ई बात सुनितहि सभ धिया - पुता संगहि ओहि ठाम बैसल चेतन लोकनि सेहो भभा कऽ हँसि पड़लाह।

— तँ डेर की केलही ? सीरक सँ मुँह झाँपि हनुमान चलीसा पढ़ए लागलही की ? – रतन मुस्किआइत कटाक्ष करैत बाजल ।

— तोरा तँ हमेशा मजाके बुझाइत छौ – बबलू थोड़ेक खौंझायल मुद्रामे बाजल। सभहक सोझाँ ओकरा अप्पन मान-सम्मान पर बट्टा लगैत बुझि पड़लै।

हम दलाने पर सुतल रही पर निन्नमे नञि छलहुँ। सीरक तरेसँ धरहिनमे भऽ रहल सभ बात सुनैत रही। भूरी उठाए करे जोरसँ कहलियै – बबलू, तमसाए किए छेँ ? तोरे नहि, बहुतोकेँ से बुझाएल होएतन्हि। पुछहुन्ह गऽ लाल कक्काकेँ, डरेँ सुटकिया गेल छलाह कि नहि ?

लाल कक्का अपन नामक चर्च सुनि घूरे लगसँ चहकैत बजलाह – एँह, नञि पूछह हमरा तँ किछु बुझएबे नहि करए। लागल जे कुकुर चौकी तरमे पैसि खिड़बिड़बैत अछि। एतबा सुनि उपस्थित सभ धिया-पुता हँसए लागल।

— अच्छा कहू तँ ई भुकम्प किएक अबैत’छि – प्रीति हमरा दिशि तकैत पुछलक।

— एतबो नञि बूझल छौ, काछु केर पीठ पर ई धरती टिकल छै। ओकरा जखन भारी लगै छै तँ ओ हिलए लगैत अछि आ भूकम्प आबि जाइत अछि – बबलू तपाक सँ बाजल।

— કા ……છુ ………… માને કી ? – સોની હચિકચિાકો પુછલક।

— અને કાછુ માને કહૂઆ…………ટ૧ટ૭…………ટૅ૧ટ્વાકેળ – વવ્વન ૩ાના દેલક।

— દાદી ત઼ઽ કહૈત છલથિહ ળે સીતા માએ ધ૧તીમે સમાએ ગેલ છલીહ। હુનક મોન અઓનાકો છન્હિ ત઼ઽ ભૂકમ્પ અવૈત અછિ – ૧ાતન વાળલ।

— અને નઝિ। હ્મ૧ વાવા કહૈત છલાહ ળે સમુદ્૧ક ઊપ૧ છાહ્ી ળેકાઁ ઈ ધ૧તી અછિ। ળખન સમુદ્૧ક પાનિમે હલી૧ ઉઠૈછ ત઼ઽ ભૂકમ્પ અવૈછ – સોની વાળલિ।

આવ સવગોટે અપ્પન-અપ્પન મોનક વાત વાળિ ચુકલ છલ। પ૧, કક૧ો વાત સઁ કેઓ સન્તુષ્ટ નહિ છલ વા સભ અપનહિ વાતકેઁ સચ માનિ ૧હલ છલ। તેઁ સભ એકાએક ચુપ ભઽ હ્મ૧ા દિશિ તાકએ લાગલ। આઁખિમે પ્૧શ્નક ભાવ આ મોનમે સહી ઉત્ત૧ક ઉત્કણ્ઠા ને૧।

હ્મ કમ્મલ ઓઢને ઉઠિ કઽ વૈસિ ગેલહુઁ। મોનમે ક૧ે પશ્ચાતાપ સેહો છલ ળે વેકા૧ે ટોકા૧ા દેલિચે। ને ટોકા૧ા દૈતિચે આ ને ભો૧ે-ભો૧ે સ્ૈઁસતિહુઁ। આવ ત઼ઽ ભો૧ુકા નતિચક૧્મ નશ્ચિતિ વભિ ગેલ। સ્ૈ૧ હ્મિમત કઽ કઽ વળલહુઁ –

— દેખહ ! ળે-ળે કા૧ાણ તોં સભ કહલહ સે સભ કહવી છૈ। અપના હિન્દુ ધ૧્મ ગ્૧ાણ્થસભમે એહિ ત૧હક કછુ ખિસ્સા ભેટૈત છૈ। હઁ, ળે અન્તમે વાત – છાહ્ી વલા વાત – છૈ, તાહિમે કછુ ચથા૧્થક છવ઼િ ળુ૧ૂ છૈ।

— સે કોના ? – પ્૧ીતી ળિજ્ઞાસા ભ૧લ સ્વ૧મે પુછલક।

— છાહ્ી વલા વાત એખ્નુકા વૈજ્ઞાનિકસઁ કોના મિલએ છૈ – સે વાદમે કહવહ। હ્મ કહલિચે।

— ઠીક છૈ – પ્૧ીતી વાળલિ।

— ભૂકમ્પક કા૧ાણ વુહ્વાક લેલ આવશ્ચક છી ળે પહિને અપ્પન પૃથ્વીક આન્ત૧િક સં૧ચનાક વા૧ેમે કછુ ળાનકા૧ી લઽ લેલ ળાએ। પૃથ્વીક અન્દ૧ક સં૧ચના આ ઓક૧ ગતિવિધિક વા૧ેમે વુહ્ને વિના ઓક૧ સતહ વા પપડી પ૧ મહસૂસ હોમએ વલા ઘટના અર્થાત્ ભૂકમ્પક વિષચમે ળાનવ અસમ્ભવ – ઉપસ્થિત સભ ધચિપુતાકેઁ સમ્વોધિત ક૧ૈત હ્મ કહલિચે।

— તઽ વતાઉ ને – પ્૧ીતી વાળલિ।

— ઓના ત઼ઽ પૃથ્વી કે૧ આન્ત૧િક સં૧ચનાક વા૧ેમે વહુત ૧ાસ મત – મતાન્ત૧ છૈ, પ૧ ળે સભસઁ નઽવ મત છૈ તાહિ અનુસા૧ેં સમ્પુ૧્ણ પૃથ્વીકેઁ ૩ ભાગમે વાઁટલ ળા સકૈત અછિ। સભસઁ ઉપ૧ુકા ભાગ ભેલ **ભૂપ૧્પટી ચા પપડી (એઅ઼થહ છઅ઼ઉષથ્ છઅ઼ઉષથ)** । ઈ ભાગ હ્મ૧ા સભકેઁ દેખાઈ દૈત અછિ આ એહી ભાગ પ૧ સાતો મહાદ્વીપ વા મહાદેશ તથા પાઁચો મહાસાગ૧ સ્થિત અછિ। સાગ૧ક પેની ચાનિ કિ સાગ૧તલ પ૧ એક૧ મોટાઈ ૬ સઁ ૧૦ કિલોમીટ૧ ધ૧િ આ મહાદ્વીપચિ ભાગ મે ૨૫ સઁ ૫૦ કિલોમીટ૧ તક હોઇછ।

સભ ધચિપુતા ધેઆન લગા કઽ સુનિ ૧હલ છલ।

— समसँ अन्दर केर भागकेँ **भूकेन्द्र वा भूक्रोड (छश्रोढ़ए एश्रढ़थह'ष छश्रोढ़ए)** कहल जाइत अछि। ई पुनः २ भागमे विभाजित अछि–**अन्तः भूकेन्द्र (शममएढ़ छश्रोढ़ए)** आ **वाह्य भूकेन्द्र (श्रोउथएढ़ छश्रोढ़ए)**। सम्पुर्ण भूकेन्द्रक मोटाई पृथ्वीक केन्द्रबिन्दु सँ ३४०० किमि धरि मानल गेल अछि। ई लोहा, निकेल आ सलिकेट मिश्रित भारी धातुपिण्डसँ बनल अछि। एकर आयतन सम्पुर्ण पृथ्वीक आयतनक मात्र १६ प्रतिशत पर भार ३२ प्रतिशत अछि, अर्थात् भूकेन्द्रक घनत्व बहुत बेसी अछि। वाह्य भूकेन्द्रक संरचना द्रव स्वरूपक पर अन्तः भूकेन्द्रक संरचना ठोस स्वरूपक बुझि पड़ैत अछि।

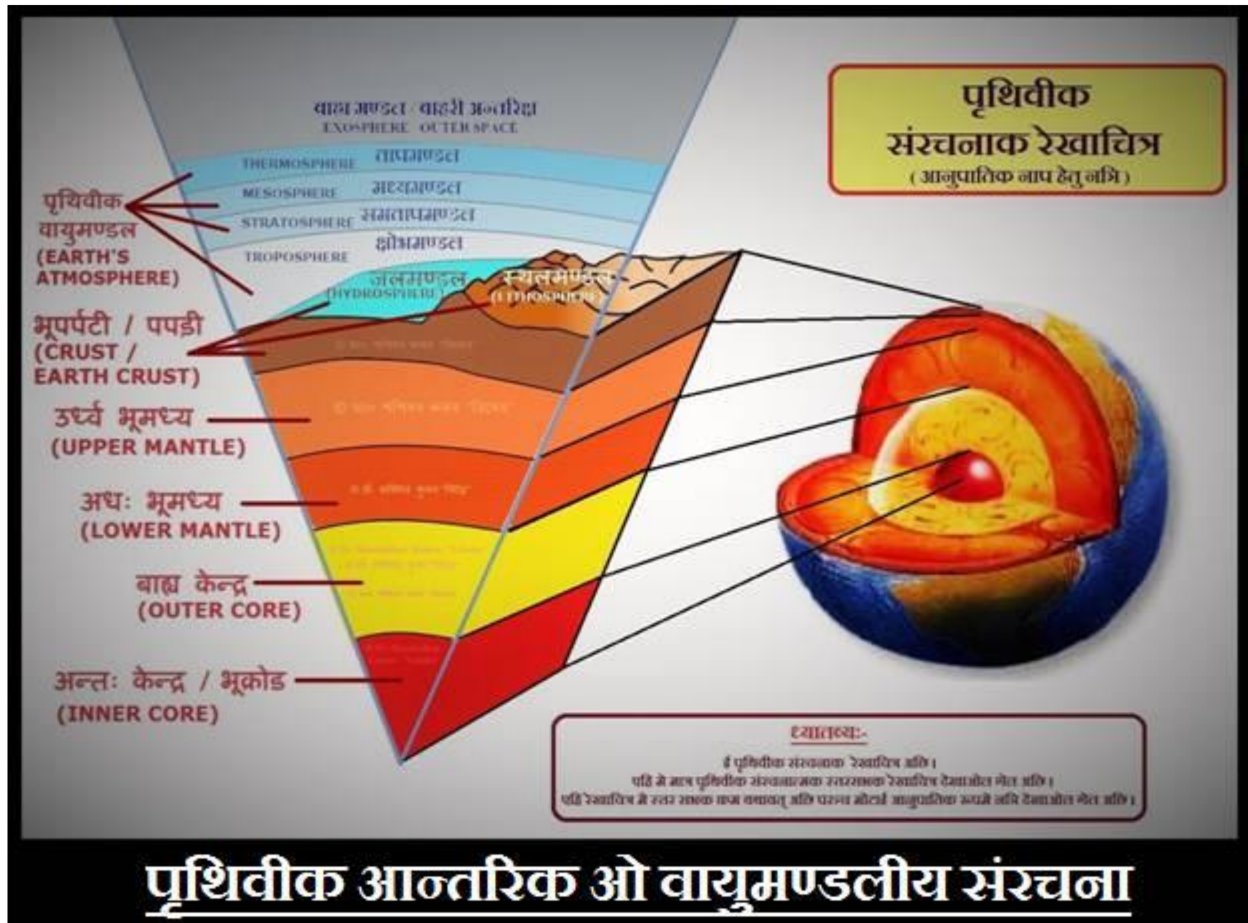
— आ पृथ्वीक बचल भागकेँ की कहैत छथि – बबरन पुछलक।

— भूपर्पटी आ भूकेन्द्रक बीच करीब ३००० किमि मोट भागकेँ **भूमध्य वा मैण्टल (मश्रमथढ़ए)** कहल जाइत छै। ई भाग पुनः उपविभाग मे विभाजित अछि। वाह्य भूकेन्द्र सँ सटल भाग **अधोभूमध्य या अधोमैण्टल (ढ़श्रोश्रोएढ़ मश्रममथढ़ए)** कहबैत अछि जखनकि भूपर्पटीसँ सटल भाग **ऊर्ध्व भूमध्य वा ऊर्ध्व मैण्टल (उश्रश्रएढ़ मश्रममथढ़ए)** कहबैत अछि। मैण्टलक एहि दुनु क्षेत्रक बीच एकटा पातर सन **संक्रमण क्षेत्र (थढ़श्रमषश्थश्रोम अढ़एश्र)** पाओल जाइत अछि। सम्पुर्ण मैण्टल क्षेत्रमे सीलीकेटक अधिकता पाओल जाइत अछि संगहि लोहा आ मैग्नेशियम सेहो रहैछ। ऊर्ध्व मैण्टलक संरचना अर्धपिघलित स्वरूपक रहैछ जखनकि अधोमैण्टलक संरचना द्रवस्वरूपक।

— यानिकि धरतीक त्रिज्या या अर्धव्यास (ढ़श्रयरउष् हश्रढ़ थश्रमएथएढ़) लगभग ६४०० किमिक भेल – रतन कहि जोड़ैत - बचिया हमरा दिशि देखि कऽ बाजल।



पृथिवीक आन्तरिक संरचना



— हँ एकदम सही। आ पृथ्वीक संरचना केर बारेमे सेहो किछु ध्यान देलहक आ कि नहि?

— अधोमैण्टल आ बाह्य भूकेन्द्र द्रव स्वरूपक अछि, ऊर्ध्वमैण्टल अनियमित संरचना पर अन्त: भूकेन्द्र ठोस अछि। भूपर्पटी सेहो ठोस अछि पर ओहि परक जलमण्डल द्रव अछि – गगन उजागर देलक।

— मतलब कि अन्दरसँ द्रव मैण्टल पर पपड़ी या भूपर्पटी ठोस स्वरूपमे जमल अछि - बजैत काल सोनीक मुखमण्डल पर खुशी छलकि रहल छैक। ओकरा भूकम्पक बारेमे अप्पन बाबाक बताओल बातसँ साम्य प्रतीत भऽ रहल छैक।

— हूँऽऽ, बहुत किछु तहिना – हम कहलियै।

— से तँऽ ठीक पर द्रव भूमध्यक नीचाँमे ठोस भूकेन्द्र कोना? --- बबन बीचेसँ किछु सोचैत बाजल।

— देखह! भूपर्पटी पृथ्वीक सभसँ बाहरी स्तर अछि तेँ अपेक्षाकृत सभसँ बेसी ठण्ढा अछि। जेना – जेना पृथ्वी केर भीतर जाइत छी तेना-तेना दाब आ तापमान बढ़ैत जाइत अछि। इएह कारण अछि जे भूमध्य आ बाहरी भूकेन्द्र द्रव स्वरूपमे अछि। भीतरी भूकेन्द्र सेहो द्रव होयबाक चाही छल पर आगाँ दाब एतेक बेसी बढ़ि जाइत अछि कि सर्वाधिक तापमान होयबाक बादो भीतरी भूकेन्द्र ठोस अछि।

— સે કોના વુહે છયિ – હમ૧ વા૧ ખ૧મો ૧ઞ િજેઉ છઉ ક િ૧૧૧ ૧૫ાકસઁ વાળ િ૩૬ઉ।

— સભટા શ્રાશ્ર પૂછ િઉવહ .... કાઉહ િઉશ્ર સેહો કછિુ ૧હ ડ દહ્ક ને – વવ્વ૧ ૧૧૧૧ક હાથ હિકૈ૧ વાળઉ।

— હઁ, ઈ સભ વા૧ સ્ઙે૧ કહયિો કહ્વડ, ૧ઞ િ૧ઁડ જૂકમ્પક પ્યસ્િસા શ્રાયે ૫૧ છુટ િળય૧હ। યણ ડ યના િવુિહ્ઉહ્ક કનિ ? .... શ્રા ક િ૧ઞ િ?

— હઁ વુહ િગેઉયિ; શ્રાગૂ કહૂ – સભ યયિાપુ૧ા યક્કહ િસંગે વાળઉ।

— દ્૧વ કે૧ ઊ૫૧ સ્થતિ કોનો યીળ સ્થત િ૧ઞ િ૧હ િસકૈ૧ શ્રછ િ। શ્રો ૧પિ્૧૧ દહાશ્ર ૧હૈ૧ શ્રછ િ– ળેના ક િકોનો કાડક ટુકડ઼ી, ...

— ૧ાશ્રો શ્રા ૫૧યિા ળહાળ – પ્૧ીતી હમ૧ ૩દાહ૧ાહ્મક સુયીકેં પુ૧ાહ્મ ક૧વાક પ્૧યાસ કશ્રઉક।

— ૧ઞ ि......... ૧ાશ્રો (૧ાહ યા ૧ાવ) કેં મનુક્ય ક૧ુશ્રાડ઼સિઁ યઉવૈ૧ શ્રછ િશ્રા ૫૧યિા ળહાળમે ઈ કાળ શ્રોક૧ ઈસ્ળ૧ કૈ૧ શ્રછ િ। ઈ દુનુ દહાશ્ર ૧ઞ િશ્રછ િશ્રપતિુ હૈઉ૧ શ્રછ િ। **હેઉવ (ષશ્રૌશ્રમમશ્રાઘ)** સયેષ્ટ ક્૧યિા શ્રછ િ, ળ્ખ૧ ક િ**દહાશ્ર્વ (ઢડ઼શ્રોશ્રથશ્રાઘ)** ૧ષ્િયેષ્ટ ક્૧યિા।......... ૫ા૧ િ૫૧ કાડક ટુકડ઼ી વા કાગળક ૧ાશ્રો દહાશ્ર શ્રછ િ, ૧ઞ િક િહેઉ૧ શ્રછ િ। ૧હ િ૧ા ૫ૃથ્વીક સભ મહાદ્વીપ દહાશ્ર ૧હૈ૧ શ્રછ િ।

હમ૧ ઈ કથ૧ સુ૧ િસભ યયિાપુ૧ા શ્રવાક ભ ડ વસ્િમયસઁ હમ૧ા દશિ િ૧ાકશ્ર ઉગઉ। વવ્વ૧ક યેહ૧ા ૫૧ યૌશ્ર૧સિા મુસ્કી (યકટા કુટ િઉ મન્દ હાસ) સેહો છઉ – ળેનાક િહમ૧ વા૧ ૫૧ શ્રોક૧ા વશ્િવાસ ૧ઞ િહો વા શ્રો હમ૧ા મૂ૧્ખ વૂહ િ૧હઉ હો। મામઉિકેં ૧ાડૈ૧ હમ વળઉહુ – કી વશ્િવાસ ૧ઞ િહોશ્ર છ ડ ને ???

— યયિાપુ૧ા પુ૧ઃ કછિુ ૧ઞ િવાળઉ।

— ળ્ખ૧ ૫હ િઉ વે૧ યહ િ૧૧હ્ક વા૧ કહઉ ગેઉ ૧ઁ ડ ઉકસભકેં યહ િ૧ા વશ્િવાસ ૧ઞ િજેઉ। વા૧ ૫૧ કોનો યયા૧ ૧ઞ િદિઉ ગેઉ। ૫૧સ્ય**શ્રઉશ્ર્રેડ વેગ૧ે૧ (શ્રડઢઢ્શ્રય શ્રૌશ્રઘાશ્રશ્રપ઼)** ૧ામક ળ્૧મ૧ ળઉવાયુવળ્િઞાનવે૧૧ા ળ્ખ૧ પૂ૧ા સાક્ષ્યક સંગ ઈ ૫૧ાકઉિ૫૧ા છ૫વશ્રોઉન્હ િ૧ઁ ડ વૈળ્ઞા૧કિઉકનકિ યયા૧ શ્રાક૧્ષતિ જેઉન્હ િ। સન્ ૧૯૧૨ ઈ૦ મે ઈ ળ્૧મ૧ ભાષામે મૂઉ ભૂ૫સઁ છ૫ઉ છઉ ળક૧ વાદ ૧૯૨૪ ઈ૦ મે યક૧ શ્રંગ્રેળી શ્રનુવાદ છ૫ઉ શ્રા ૧ક૧ા વાદસઁ યખ્૧ ય૧ા ઈ પૂ૧ા વશ્િવમે ય૧્યાક વષિય વ૧ઉ ૧હઉ શ્રા વ૧ઉ શ્રછ િ। યક૧ા **"વેગ૧ે૧ક મહાદ્વીપીય પ્૧વાહ સદ્િયા૧્૧" (શ્રૌશ્રઘાશ્રશ્રપ઼'ષ છશ્રોશ્રાથશ્રાશ્રણાશ્રથશ્રડ઼ યઢ઼શ્રઢથ યહશ્રશ્રોઢ઼)** કહઉ ળાશ્ર૧ શ્રછ િ।

— ૫૧ સે કોના સમ્ભવ છૈ – પ્૧ીતી કછિુ સકુયાશ્ર૧ શવ્દેં વાળઉ િ।

— યક૧ સમ૧્થ૧મે વહુ૧ ૧ાસ સાક્ષ્ય વેગ૧ે૧ શ્ર૫૧ે દેને ૧હ્થ િશ્રા વહુ૧ ૧ાસ શ્રા૧ પ્૧મા૧હ્મસભ વાદક ભૂવૈળ્ઞાનકિ શ્રા ળીવવૈળ્ઞાનકિઉકન િદિઉન્હ િળક૧ વસ્િ૧ૃ૧ ય૧્યા શ્રા૧ દનિ સ્ઙે૧ કહયિો ક૧વ।

— ઠીક છૈ। સભ યયિાપુ૧ા યક સ્વશ્રેં વાળઉ।

— २५६ महाद्वीपीय प्रवाह मुख्यरूपसँ भूकम्प आ ज्वालामुखी विस्फोट हेतु प्रकारक प्राकृतिक घटनाक लेल उत्तरदायी मानल जाइत अछि।

— भूकम्पक लेल सेहो !!!!! ...... प्रीती कहैत विस्मय आ जिज्ञासाक स्वरमे बाजलि।

— हँ भूकम्पक लेल सेहो – हम आश्वस्त करैत हामी भरलहुँ। वास्तवमे पृथ्वीक ऊपरका भाग या पपड़ी या भूपर्पटी कएक टा छोट-पैघ अलग-अलग टुकड़ीसभक मिलिवासँ बनल अछि। एहि टुकड़ीसभकेँ **विवर्तन छज्जी या छज्जी या टेक्टोनिक प्लेट ([illegible])** कहल जाइत अछि। सतत प्रवाहमान होयबाक कारणेँ ई छज्जी सभ भिन्न-भिन्न दिशामे अलग-अलग वेगसँ गतिशील अछि। एहि गतिशीलताक कारण कहियो छज्जी एक-दोसराक नजदीक अबैत अछि तँ कहियो परस्पर दूर भागि रहल अछि। जे छज्जीसभ परस्पर नजदीक आबि रहल अछि तकरासभक किनारी या कोरी एक-दोसरासँ टकराइत रहैत अछि आ एक-दोसरा पर जोरगर दबाव आरोपित करैत अछि।



— अरे बाप रे ! – ववन कहैत अकचकाइत बाजल।

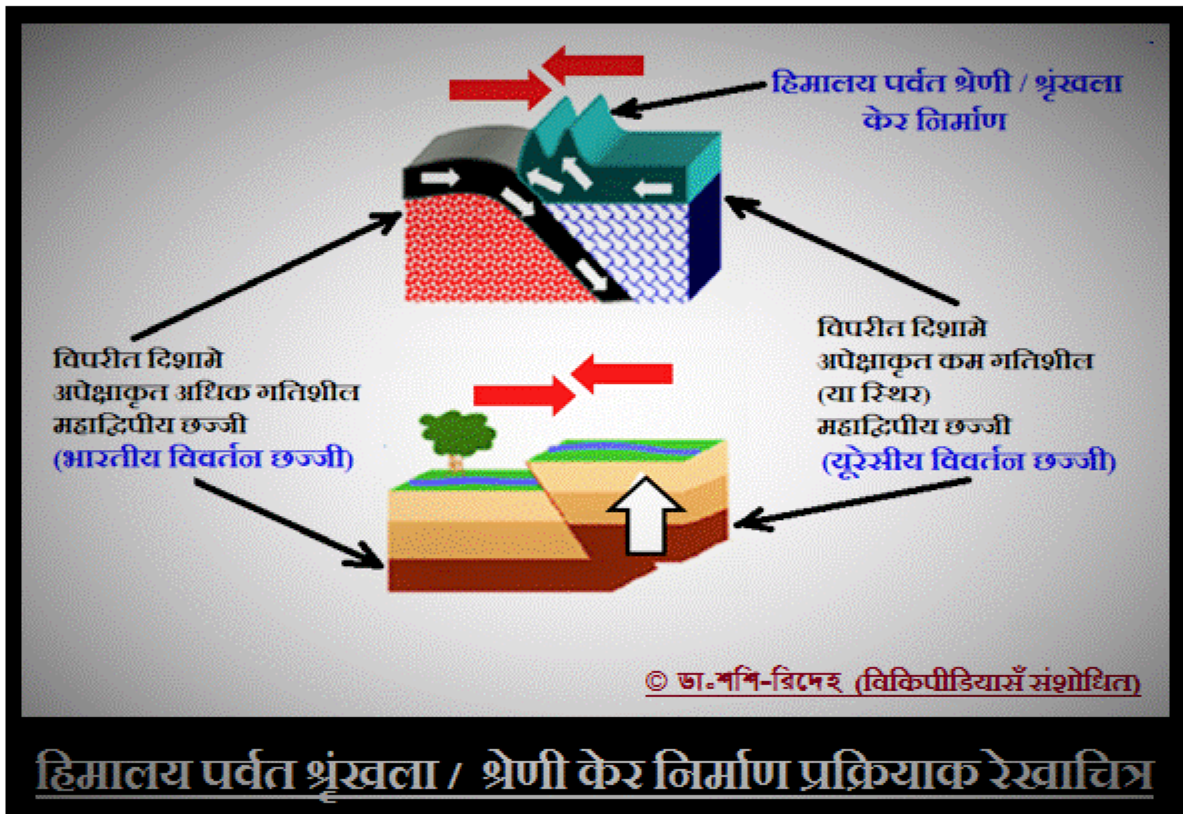
— बबनक बात सुनि सभ हँसए लागल। बुझाइत अछि बबनक दिमाग दुखाए लागै – रतन चुटकी लैत बाजल।

— नहि, से बात नहि।

— તઁઽ શ્ેન કો ? – હ્મ પુછઉયૈ।

— હ્મ સોચૈત નહિ જે એતેક પૈઘ પૈઘ છજ્જી સભક આપસી ટકનાહટિ કેહેન હોઇત હેતૈ – વવ્વન ઉગાના દેઉક।

— સહિ વાત। ઈ ટકનાહટિ એતેક શક્તિશાિળ હોઇત અછિ જે ઓહિ ઠામક જમીનક પુનઃ સ્વરૂપહિ વદલિ જાઇત અછિ। એહને ટકનાહટિ કેર કારણ હિમાલય પહાડ઼ક નિર્માણ ભેલ અછિ। વાસ્તવમે એહિ તરહક ટકનાહટિ કેર પ્રક્રિયા – જકરા કિ ભૂવૈજ્ઞાનિક લોકનિ **ભૂ વૈજ્ઞાનિક પ્રક્રિયા (ઞઙઅથઠ થએછથઅોમઽછ અછથરવરથરએષ)** કહૈત છથિ – ભૂકમ્પક પ્રમુખ કારણ અછિ। એહિ કારણસઁ આયલ ભૂકમ્પકેઁ **વૈજ્ઞાનિક ભૂકમ્પ (થએછથઅોમઽછ એઅઢ઼થહઽઉઅપ્પએષ)** કહલ જાઇત અછિ। એહિ પ્રકારક ભૂકમ્પક મૂલ ધરતીક ભીતર ધરાતલસઁ પ્રાયઃ ૫ સઁ ૨૦કિમિ૦ નીચાઁ રહૈત અછિ; આ એકરા દ્વારા પ્રભાવિત ક્ષેત્ર વહુત વિસ્તૃત રહૈત અછિ। કોનહુ દૂ-ટા મહાદ્વીપીય છજ્જી જાહિ ઠામ એક-દોસરાસઁ સટૈત અછિ, ધરતી પર ઓ એક-ટા રેખાક રૂપમે વુઝના જાઇત અછિ। ઈ રેખા સરલ રેખા નઇ ભઽ કઽ પ્રાયઃ કતેકો સ્થાન પર વક્ર યા વલિત (ટેઢ઼-મેઢ઼) હોઇત અછિ। એકરા **ભ્રંશ રેખારેખા (ઢઅઉઙથ ઙઽમ્મએ)** કહલ જાઇત અછિ।



हिमालय पर्वत श्रृंखला / श्रेणी केर निर्माण प्रक्रियाक रेखाचित्र

यूरेशियन विवर्तन छज्जी

तिब्बत (चीन)

भारतीय विवर्तन छज्जी

आजुक भारत

भारत (१ करोड़ वर्ष पहिने)

श्रीलंका

भारत (३ करोड़ वर्ष पहिने)

भारतीय विवर्तन छज्जी

भूमध्य रेखा / विषुवत रेखा / ० डिग्री अक्षांश रेखा

भारतीय विवर्तन छज्जी

भारत (५.५ करोड़ वर्ष पहिने)

भारत (७.१ करोड़ वर्ष पहिने)

भारतीय विवर्तन छज्जी

श्रीलंका

भारतीय वि० छ० आ यूरेशीय वि० छ० केर टकराहटिक फलस्वरूप हिमालय पर्वत श्रेणी केर निर्माण संगहि एहि क्षेत्रमे आबए बला विवर्तनिक भूकम्पसभक क्रियाविधि

साभार सौजन्यः- विकिपीडिया (पब्लिक डोमेन)

— हमरासभकेँ स्कूलमे पढ़ाओल गेल छलथिन्ह जे भूकम्प ज्वालामुखी विस्फोटक कारणेँ अबैत अछि – सोनी हमर बातसँ असमञ्जसक स्वरमे बाजलि।

— अपन मिथिला क्षेत्रमे तँ दूर-दूर धरि कोनहु ज्वालामुखी पहाड़ नहि अछि तथापि केना भूकम्प कखनो अबैत अछि ??? ....हम जनितहुँ पुछलियै। सच कहिअहुना बुच्चा! .... केना हमही बुच्ची जेकाँ कहलियै – वास्तवमे मिथिला सहित सम्पूर्ण हिमालय आ हिमालयसँ सटल प्रदेशमे एहि प्रकारक मात्र कहि ज्वालामुखीय विस्फोटक कारण भूकम्प नहि अबैत अछि। एहि क्षेत्रमे विवर्तनिकी भूकम्प अबैत अछि। आ अपना एहिठाँ भूकम्प भारतीय विवर्तन प्लेट आ यूरेशीय विवर्तन प्लेटक परस्पर टकराहटिक परिणाम थिक।

— ओह! – सोनी कहि पश्चातापक स्वरमे बाजलि – मोनमे ऊहापोहक स्थिति छैक जे हमर बात मानए कि पहिलुक।

— ज्वालामुखी विस्फोटक कारणेँ सेहो भूकम्प अबैत अछि जकरा **ज्वालामुखीजन्य वा ज्वालामुखीय भूकम्प (Volcanic Earthquake)** कहल जाइत अछि। एहि तरहक भूकम्प जपान, फिलिपिन्स, मलेशिया, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, चिली आर पेरू आदि देशसभमे बेसी अबैत अछि। वस्तुतः प्रशान्त महासागरक चारूकातक क्षेत्र सघन ज्वालामुखीय गतिविधिक क्षेत्र अछि आ तेँ एहि क्षेत्रकेँ ""**अग्नि वलय** वा "**आगिक औंठी (Ring of Fire)** सेहो कहल जाइत अछि।

अग्नि वलय / आगिक औंठी (RING OF FIRE)

— अरे बाप रे! बब्बन केर कहि अचंभित स्वरेँ बाजल।

— हँ। पर एतबहि नहि ई क्षेत्र विभिन्न महादेशीय प्लेट सभक मिलन-स्थल होयबाक कारणेँ तीव्रतम भूकम्पीय गतिविधिक क्षेत्र सेहो अछि आ तेँ तीव्र सुनामीक क्षेत्र सेहो।

— ई सुनामी की होइत छै - पत्नी सहज भावेँ पुछलक।

— अहाँ टी०वी० पर समाचारमे नञि सुनने रही की ? - समुद्री तूफान होइत छै। बब्बन टोकलक।

— पर सभ टा २६ क्षेत्रमे कहिक - रतन जिज्ञासा कएलक।

— हूँऽऽऽ। ठीक प्रश्न छह - हम पैघ साँस छोड़ैत कहलखिन। एखन तक भेल शोधकार्य ई दर्शाबैत अछि कि धरातल पर ज्वालामुखीय गतिविधि बहुत हद तक महादेशीय प्लेटसभक मिलान केर जगह होइत अछि - हँ, ई बात अलग कि ओ एहि तरहक सब मिलानस्थल पर नञि होइत अछि। समुद्रक पेनी पर वा ओकर आस पास होमएबला भूकम्पक कारण समुद्रक ऊपरका सतह पर पैघ-पैघ आ ऊँच-ऊँच लहरि केर उत्पत्ति होइत अछि। एहि तरंगसभक कारण समुद्रक सतह पर भयंकर तूफान आबि जाइत अछि, जकरा **'सुनामी' (tsunami)** कहल जाइत अछि। **'सुनामी'** जपानी भाषाक शब्द अछि जकर अर्थ भेल **'समुद्री तूफान'**। सन् १८८३ ई०मे समुद्रतल पर क्राकाटोआ ज्वालामुखीक गतिविधिक कारण आयल भूकम्पक परिणामस्वरूप उठल सुनामीमे ओहि क्षेत्रक द्वीपसभ पर लगभग ३६, ००० लोक मारल गेल छलाह।

— ओह ! ई तँ बड्ड विनाशकारी छल। - सोनी किछु दुःखाएल स्वरेँ बाजलि।

— हँ से तँऽ अवश्ये। एकर अतिरिक्त भूकम्पक आन बहुत रास कारण अछि किछु प्राकृतिक आ किछु मनुक्खक द्वारा सृजित।

— मनुक्खक द्वारा सृजित - माने ??? - पत्नीक प्रश्नवाचक स्वर कानमे पड़ल।

— मनुक्खक द्वारा सृजित यानि कि मनुक्ख द्वारा बनाओल अर्थात् कृत्रिम कारण सभ; जेना कि - परमाणु बमक विस्फोट, खदान (खाद्यान्न नञि) केर कारण भेल धँसना वा धँसाव आदि। पर प्राकृतिक कारणसँ आबएबला भूकम्पक कारणसभमे सभसँ बेसी उपर कहल गेल कारणसभसँ आबैत अछि आ ओकर विनाशक क्षमता सेहो आन कारणसभसँ आबएबला भूकम्पसभसँ प्रायः बेशी रहैत अछि।

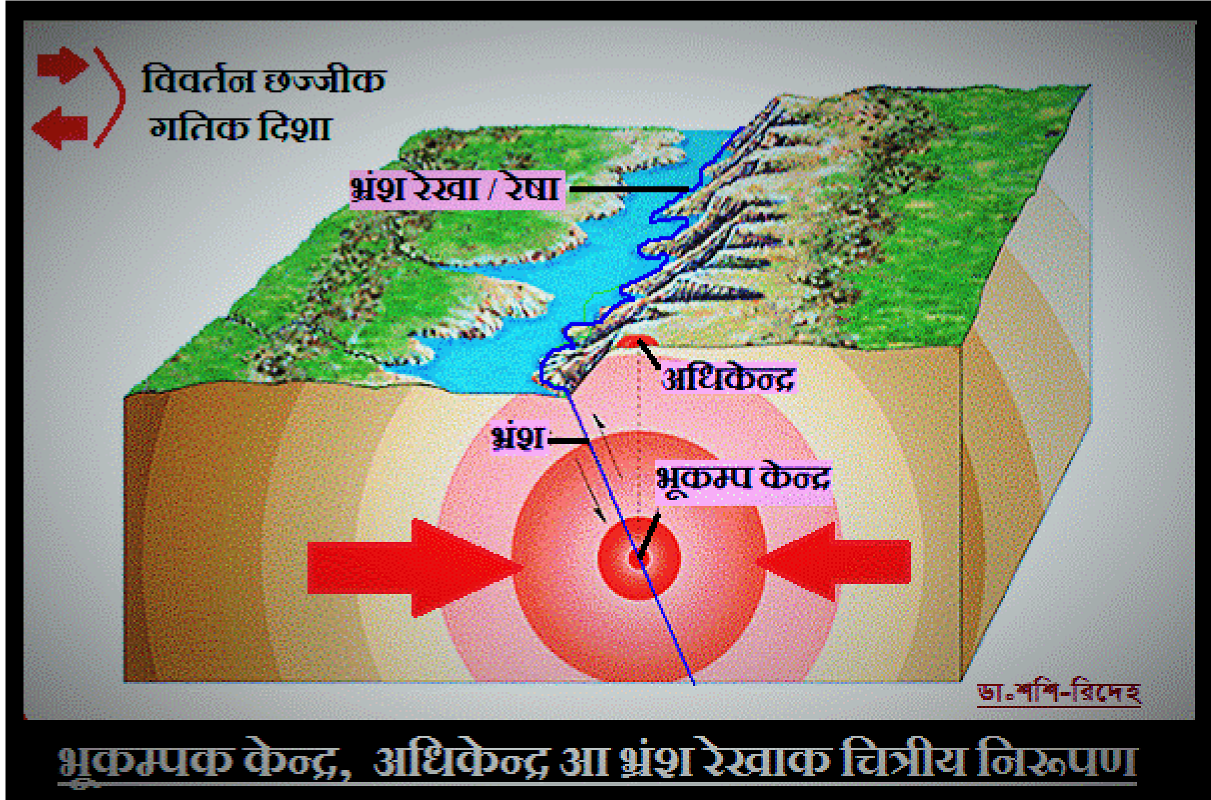
— अच्छा, ई भूकम्पक केन्द्र की होइत अछि? - ई सोझ प्रश्न रतनक दिशिसँ छल।

— भूगर्भमे ओ स्थान वा केन्द्र जाहि ठाँ घटनासभमे होमएबला विशेष परिवर्तनक क्रियासभसँ भूकम्पीय हलचलक प्रारम्भ होइछ ओकरा**भूकम्प मूल या भूकम्प केन्द्र (Focus Centre)** कहल जाइछ। एहि केन्द्र सँ लम्बवत, धरातलक (धरतीक उपरका सतह पर) जाहि बिन्दु पर सभसँ पहिने भूकम्पक धक्काक अनुभव होइछ ओहि स्थानकेँ भूकम्पक **अधिकेन्द्र (Epicentre)** कहल जाइछ। जनसामान्यक भाषामे वा बहुधा समाचार पत्र, आकाशवाणी आ दूरदर्शन आदि मिडियासभमे अधिकेन्द्रहिकेँ भूकम्पक केन्द्र वा मूल कहि देल जाइत अछि आ से ......

— आ से तँऽ भ्रम उत्पन्न करएबला भेल कि ने - हमर बातकेँ बीचहिमे लोकैत रतन बाजल।

— हँ आ ताहि द्वारे आइ-काल्हि **भूकम्पविज्ञानी (Seismologists)** द्वारा **भूकम्प मूल या भूकम्प केन्द्र (Focus Centre)** हेतु एकटा नव शब्द **अधोकेन्द्र (Hypocentre)** केर प्रयोग भऽ रहल अछि। अधोकेन्द्रसँ अधिकेन्द्र धरिक लम्बवत दूरीकेँ (सभसँ कम दूरीकेँ) **भूकम्प मूलक या भूकम्प केन्द्रक**

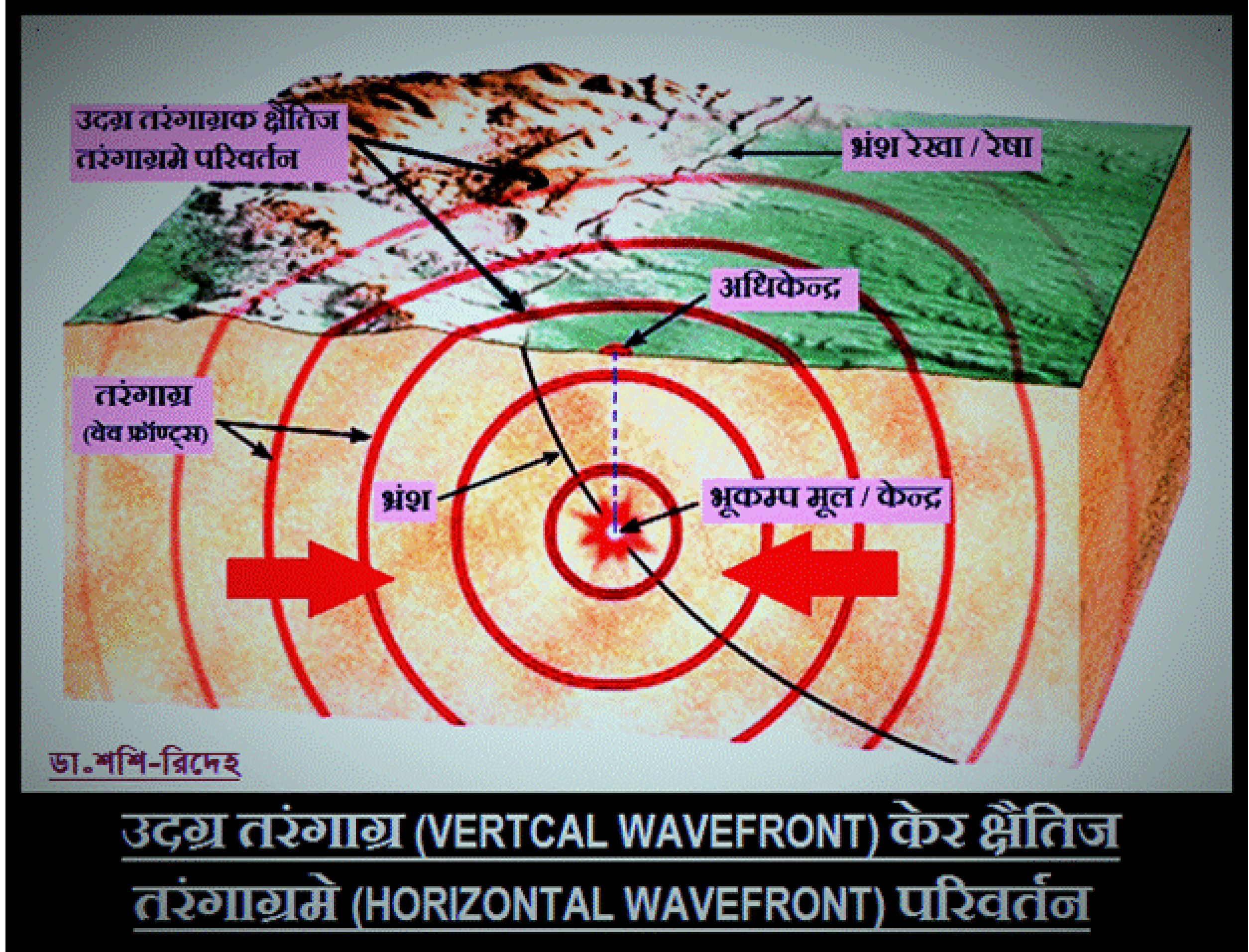
गहराइ **(Focal depth or depth of Focus centre hypocentre)** कहल जाइत अछि। "अधि-" माने ऊपर अर्थात् धरतीक सतह पर आ "अधो-" माने नीचाँ माने कि पाताल वा धरतीक सतहसँ नीचाँ।



— कोनहु भूकम्पक मूल बेसी सँ बेसी कतेक गँहीर भऽ सकैत अछि - जिज्ञासा नतन करने छल।

— वस्तुतः भूकम्पक केन्द्र (अधोकेन्द्र) ओहि ठामक धरतीक सतहसँ कतेक गँहीर अछि, ताहि आधार पर भूकम्प केर ३ प्रकार कएल गेल अछि। जाहि भूकम्पक केन्द्र धरातलसँ ७० किमि० धरि गहराइ पर रहैत अछि ओ **उथर भूकम्प (Shallow Earthquakes)** कहल जाइछ। एहि तरहक भूकम्पमे सबसँ बेसी क्षति अधिकेन्द्रसँ किछु किलोमीटरक परीधिमे होइत अछि। एहि प्रकारक भूकम्प विवर्तनिकि या आन बहुतो कारणसँ होइत अछि। धरातलसँ ७० सँ ३०० किमि० धरि गहराइ पर जाहि भूकम्पक केन्द्र वा मूल रहैत अछि से **मँझोला भूकम्प (Earthquakes of Medium Depth)** कहबैत अछि। एहेन भूकम्प प्रायः विवर्तनिकि भूकम्प होइछ। विवर्तनिकि भूकम्पमे भूकम्पक अधिकेन्द्रसँ बेसी दूरक क्षेत्रसभक कमजोर शैल/चट्टानबला जगहमे अधिक नोकसान होइत अछि। अधिकेन्द्रसँ३०० सँ ७०० किमि० गँहीर केन्द्र या मूल बला भूकम्प **गँहीर/पातालीय भूकम्प (Plutonic Earthquakes)** कहबैत अछि। एहि तरहक भूकम्पक उत्पत्तिक कारण एखन धरि अज्ञात अछि।

— यौ ! टी०भी०सभमे जे भूकम्पक केन्द्रक - माने कि अधिकेन्द्रक - चारू कात गोल-गोल वृत्त जेकाँ देखबै छै, से कथिक ? - ई प्रतीक प्रश्न छल।



— भूकम्प भूमिसँ जे ऊर्जा मुक्त होइत अछि (निकसैत् निकलैत अछि) से **भूकम्पीय तरंग (षध्श्षमश्ठ श्रीश्वव्ष)** केर रूपमे हर सम्भावित दिशामे पसरैत अछि। ओकर भूकम्प-केन्द्रक चारू कात चलैत भीतर गोलाकार आ सतह पर वृत्ताकार घेरा (घेरवा) केर रूपमे देखाओल जाइत अछि। एहि तरहक वृत्त या गोल **तरंगाग्रक (श्रीश्वव्ष्ठ्श्रोशथ)** गमनक दिशामे काल्पनिक रूपेँ बनाओल जाइत अछि। मानल कऽ ई वृत्त या गोल सब आँखिसँ वा कोनहु यन्त्रसँ नहि देखाइ दैत अछि, बुझबामे वा आँकलनमे सुविधाक लेल बनाओल जाइत अछि। ई घेरासब भूकम्पसँ होमएबला हानि केर अनुमान लगएबामे सहायक होइत अछि। भूकम्पसँ सबसँ बेसी नोकसान अधिकेन्द्रसँ (वृत्तक केन्द्रसँ) हटि कऽ बनए बला भीतरुका वृत्तसबक क्षेत्रसबमे होइत अछि। पृथ्वीक सतहसँ नीचाँ ई **त्रि-आयामी त्रिविमीय(थह्ढ्ह्ह्ह यश्मणाषश्रोशश्रड्)** होइत अछि, तेँ **गोलाकार (षश्ठ्ह्ष्ढ्श्ठश्रड्)** बुझना जाइत अछि आ ओहि गोलाक केन्द्र भूकम्पक केन्द्र (अधोकेन्द्र) पर स्थित रहैत अछि। बाहरल यानी पृथ्वीक सतह पर ई भूकम्पीय तरंगसब अधिकेन्द्रसँ निकलैत पसरैत होइत अछि। बाहरल चौरस होइत अछि अर्थात् ओकर मात्र लम्बाई आ चौड़ाई होइत अछि मोटाई या गहराई या ऊँचाई नहि, तेँ ओ **द्वि-आयामी/द्विविमीय (थश्रो यश्मणाषश्रोशश्रड्)** संरचना थिक। बाहरल पर गमन करैत काल भूकम्पीय तरंग **द्वि-आयामी/द्विविमीय (थश्रो यश्मणाषश्रोशश्रड्)** बुझि पड़ैत अछि आ तेँ **वृत्ताकार (छ्श्ढ्छ्ठड्श्रढ्)** होइत अछि। एहि वृत्तसबक केन्द्र भूकम्पक अधिकेन्द्र पर होइत अछि। सामान्य भाषामे एहन वृत्तसबक केन्द्रकेँ भूकम्पक केन्द्र कहि दैल जाइत अछि जे कि वास्तवमे भूकम्पक अधिकेन्द्र रहैत अछि।

— हूँऽऽऽ, ίऽ ই વાί છૈ - ન્ίન ગઁહીન સાઁસ છોડૈί વાળθ।

— શ્રયૃછા ই ক্ষৃহ ળે ભૂક્મ્પક શ્રય્યયન કોન શાસ્ત્નક શ્રન્ίન્ગાί હોરπ શ્રછિ......

— ભૂગોθમે - હમન વાίકૈં વયિઁહમિ θકૈί વવ્વન વાળθ।

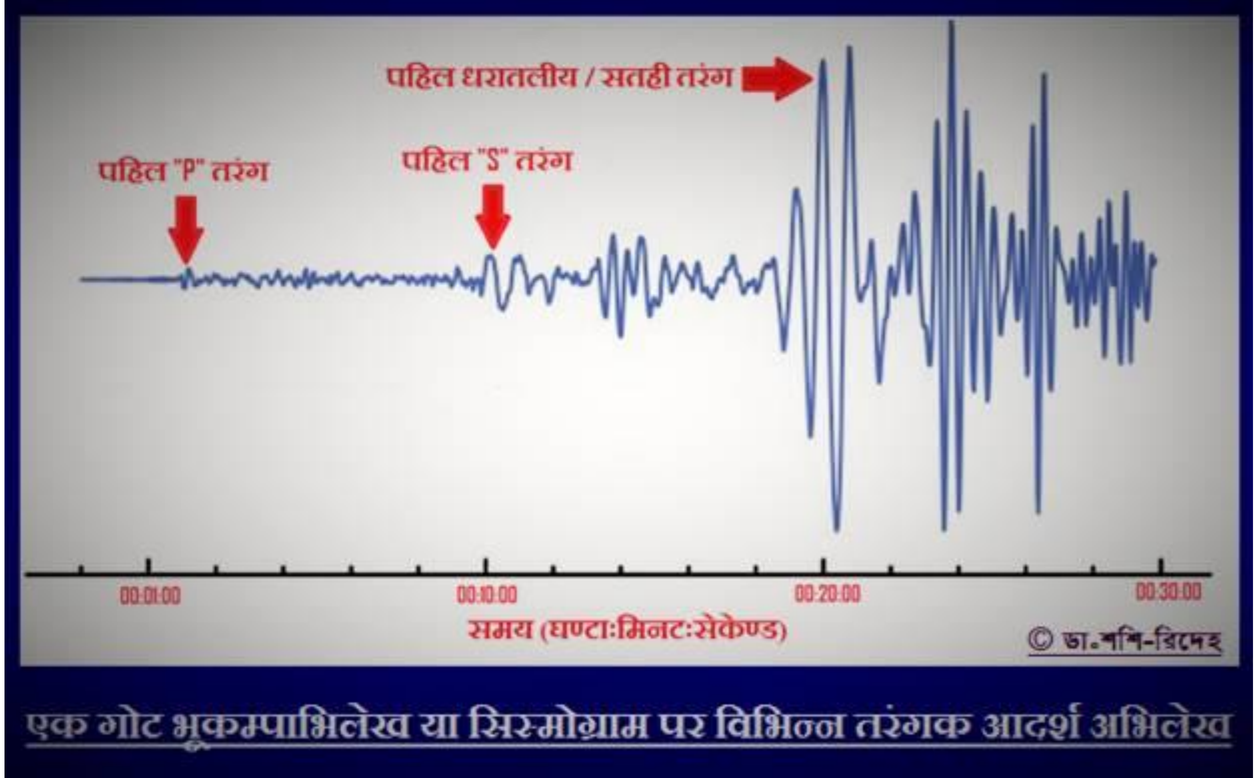
— શ્રાંશકિ નૂપસઁ સહી છહ। ભૂકમ્પક શ્રય્યયન **"ભૂકમ્પ વળિ્જ્ઞાન"** કેન શ્રન્ίન્ગાί કરθ ળારπ શ્રછિ ળિકના શ્રંગ્રેળીમે **સિસ્મોલૉળી સાસ્મોલૉળી (ষ্মश्रमश्रोड्श्रोधै)** કહૈί છયિ। હઁ, કોનહુ ભૂકમ્પક કાનામ યનίીક ઉપ્નુક્ત સનહ શ્રન્યાί યનίθક ભૌગોલિક સંનયનાદિ પિન ળે કછુ પનિમ્નિમ ઘટનિ હોરπ શ્રછિ ίકન શ્રય્યયન ભૂગોળક એકટા શાખાક શ્રન્ίન્ગાί કરθ ળારπ શ્રછિ ળિકના **ભૌίિક ભૂગોθ(ষ্টহৈষ্মছশ্রড ঘশ্রোঘঢ়শ্রষ্টহৈ)** કહθ ળારπ શ્રછિ। ભૂકમ્પ વળિ્જ્ઞાનક ક્ષેત્ન **ભૂગોθ (ঘশ্রোঘঢ়শ্রষ্টহৈ), ભૂગાનૃભ વળિ્જ્ઞાન (ঘশ্রোড়শ্রোধৈ), ભૂ-ભૌίિકી (ঘশ্রোষ্টহৈষ্মছষ)** શ્રાદિ વળિભિન્ન શાસ્ત્નસભસઁ સેહો સમ્વદ્ધ શ્રછિ। .... શ્ર ભૂકમ્પક ગίિવિધિકેં નપવાક હેતુ કોન યામ્ત્નક પ્નયોગ હોરπ શ્રછિ? - હમ શ્રપનહિ ઉપ્નુક્ત પ્નશ્નક ઉίાના દૈί-દૈί એકટા શ્રાશ્રોન પ્નશ્ન ળુમા કઽ યયિપુίા દશિ સ્કિ દેθયિ।

— ભૂકમ્પમાપી - નન્ίન ίપાકસઁ ળવાવ દેθક, ળેનાકિ શ્રોકના પહનિહસિં હમન એહિ પ્નશ્નક પ્નίિક્ષા નહર।

— સંગહિ સંગ એકટા શ્રાશ્રોન ળાઁίθ સ્વન સુનાર પડθ - ભૂકમ્પθખ્પી। ই સ્વન સોનીક છθ, શાયદ શ્રો પુનામ્નૂપૈં શ્રાશ્વસ્ί નહિ છθ શ્રપના ઉίનસઁ।

— દેખહ હિન્દીમે ળકના **"ભૂકમ્પમાપી યામ્ત્ન"** કહૈί છયિ સે મૈથિલીમે **"ભૂકમ્પનાપી યામ્ત્ન"** ભેθ કાનામ "માપવ વા માપ" શવ્દ મૈથિલીમે પ્નયોગ નહિ હોરπ શ્રછિ। હન ίનહક નાપીક θθ મૈથિલીમે "નાપવ વા નાપ વા નાપી" શવ્દ પ્નયુક્ί હોરπ શ્રછિ - યાહે શ્રો શ્રાયίન હો, θમ્વાই હો શ્રથવા શ્રાન કોનહુ યીળ। ίૈં શ્રંગ્રેળીક **"મેળનમેમ્નટ" (মশ্রষঊঢ়মণমমথ)** કેન θθ મૈથિલીમે **"નાપ યા નાપી"** શવ્દક પ્નયોગે ઉયίિ। ίહિના શ્રંગ્રેળીક **"સ્કેθ" (ষছশ্রড়ণ)** શવ્દક θθ મૈથિલીમે **"નાપની યા નપ્પા"** ગ્નાહ્ય થકિ ળખનકિ "માપની" શ્રગ્નાહ્ય।**ભૂકમ્પનાપી** યામ્ત્નકેં શ્રંગ્રેળીમે **સિસ્મોમીટન યા સાસ્મોમીટન (ষ্মষমশ্রোমণথণঢ়)** કહθ ળારπ શ્રછિ। એહિના, **"ભૂકમ્પθખ્પી"** નામક યામ્ત્નકેં શ્રંગ્રેળીમે **સિસ્મોગ્નાફ યા સાસ્મોગ્નાફ (ষ্মষমশ্রোঘঢ়শ্রষ্টহ)** કહθ ળારછ। ભૂકમ્પθખ્પી યામ્ત્ન ભૂકમ્પીય ગίિવિધિસઁ ઉίપન્ન વળિભિન્ન ίનહક ίનંગસભકેં એકટા વશિષ્ટિ પ્નકાનક **શ્રભિθખ** પત્ન **(ঘঢ়শ্রষ্টহ ষ্টশ্রষ্টণঢ়)** પન શ્રભિθખίિ વા **શ્રંકίિ (ঢ়ণছশ্রোঢ়ধ)** કનૈί શ્રછિ। ભૂકમ્પθખ્પી દ્વાના ળે કછુ શ્રભિθખ પ્નાપ્ί હોરπ શ્રછિ ίકના મૈથિલીમે **"ભૂકમ્પાભિθખ"** શ્રો શ્રંગ્રેળીમે **"સિસ્મોગ્નામ યા સાસ્મોગ્નામ"(ষ্মষমশ্রোঘঢ়শ্রম)** કહθ ળારπ શ્રછિ શ્ર એકનહિ વૈળ્ઞાનકિ શ્રય્યયનસઁ ભૂકમ્પીય ગίિવિધિક વશ્લિθષણ કરθ ળારπ શ્રછિ। યદ્યપિ ભૂકમ્પમાપી શ્ર ભૂકમ્પθખ્પીમે કછુ સુક્ષ્મ શ્રન્ίન શ્રછિ ίથાપિ દુહુ શવ્દ પ્નયાયી નૂપમે વ્યવહૃί હોરπ શ્રછિ। **ભૂકમ્પθખ્પી** વા **સિસ્મોગ્નાફ (ষ্মষমশ্রোঘঢ়শ্রষ্টহ)** પ્નાયઃ પુનના યામ્ત્નસભક θθ પ્નયુક્ί હોરπ શ્રછિ ળખનકિ નવકા યામ્ત્નસભક θθ પ્નાયઃ **ભૂકમ્પનાપી યાસિસ્મોમીટન (ষ্মষমশ্রোমণথণঢ়)** શવ્દ પ્નયુક્ί હોરπ શ્રછિ। ભૂકમ્પ શ્રય્યયન કેન્દ્નસભ પન એહિ ίનહક યામ્ત્ન સાθમે ίીન સર પૈસઠિ દિનિ શ્ર ચૌવીસો ઘામ્નટા સίί ક્નયાશીલ નહૈί શ્રછિ। એહિ ίનહક એકટા શ્રાશ્રોન યામ્ત્ન શ્રછિ - **ભૂકમ્પદર્શી યા સિસ્મોસ્કોપ(ষ্মষমশ্রোষছশ্রোষ্টণ)** । ই યામ્ત્ન યનίીક કમ્પનક શ્રભિθખન સίί નૂપમે θગાίાન નહિ કનૈί શ્રછિ પિન ই સૂચના દૈί શ્રછિ કિ ભૂકમ્પ ભેθ છθ શ્ર ભૂકમ્પક શ્રકાન કેન વાનેમે એકટા શ્રપનિષ્કૃί

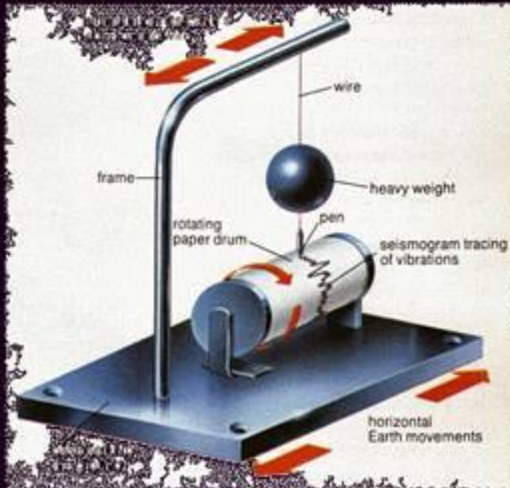
(मोटा-मोटी) जानकारी दैत अछि। भूकम्पीय तरंगक वा धरातीक कम्पनक अभिलेखन ओ नापी करबाहेतु भूकम्प-विज्ञानक ई उपशाखा **भूकम्पमापी या सिस्मोमेट्री (षध्ऌषमश्चोमध्थढे)** कहबैछ तथा एहि तरहक समस्त यन्त्रसभकेँ **भूकम्पमापिकि यन्त्र या सिस्मोमेट्रिक इन्स्ट्रुमेन्ट्स (षध्ऌषमश्चोमध्थढ़ध्छ धाषथढ़उमणाथष)** कहल जाइत अछि।

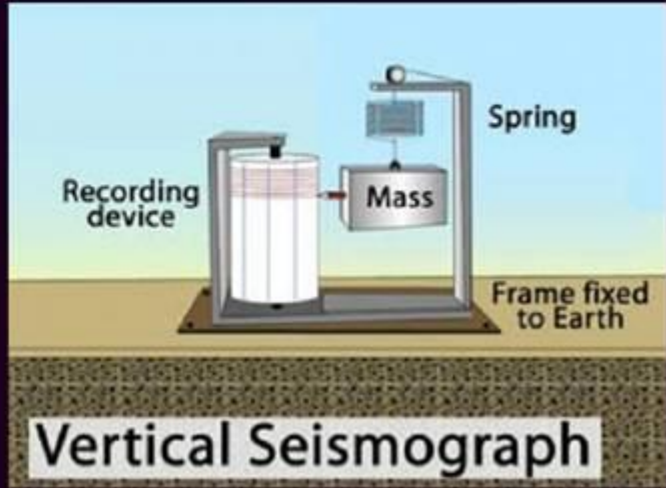


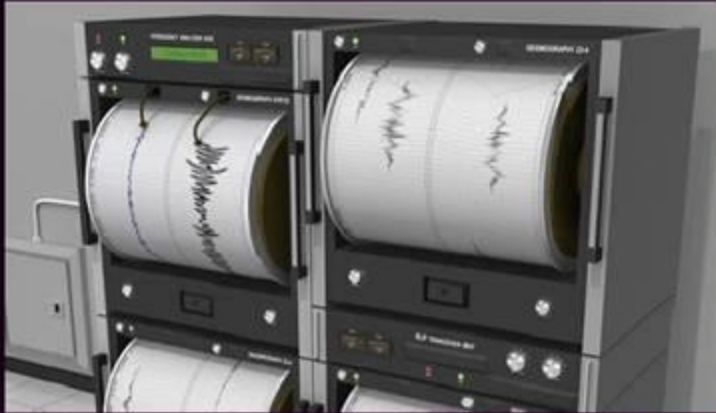
— कोनहु भूकम्पाभिलेख भूकम्पक बारेमे की सभ बतबैत अछि? - तकरा जानबाक इच्छा आओर बढ़ि गेल रहैक।

— भूकम्पाभिलेखक वैज्ञानिक अध्ययनसँ पता चलैत अछि जे भूकम्पीय तरंगसभ मुख्यरूपसँ दू तरहक होइत अछि - पहिल कायिक तरंग आ दोसर सतही या धरातलीय तरंग। **कायिक तरंग (बओधै श्चैअवएष)** भूकम्पक अधोकेन्द्रसँ चारू दिशामे पसरैत अछि, पृथ्वीक भीतर सेहो। ई सेहो दू प्रकारक होइत अछि - पहिल **"प्राथमिक या पी-तरंग" (श्चढ़ऌमअढ़े श्च - श्चैअवएष)** आ दोसर **द्वितीयक या एस-तरंग(षध्छश्चोाायअढ़े ष - श्चैअवएष)**। **सतही या धरातलीय तरंग (षउढ़ढ़अध्ऌ श्चैअवएष)** भूकम्पक अधिकेन्द्रसँ निकलैत प्रतीत होइत अछि आ मात्र धरातल पर गमन करैछ, धरातीक भीतर नहि। ईहो पुनः मुख्यतः दू तरहक अछि - पहिल **लव तरंग (ङश्चोवए श्चैअवएष)** आ दोसर **रेले तरंग (ढ़ैङएघ्ह श्चैअवएष)**। धरातीक कोनहु स्थान पर सभसँ पहिने प्राथमिक तरंग पहुँचैत अछि, तकरा बाद द्वितीयक आ तकर बादहि आन धरातलीय तरंगसभ। सतही तरंगसभक उत्पत्ति वस्तुतः कायिक तरंगसभसँ होइत अछि। रेले तरंग जलीयपा**रिस्थितिकि तन्त्र (अङउअथध्छ एछश्चोषैषथएमष)** आ लव तरंग भवनादि स्थापत्यक ढाँचाकेँ विशेष रूपसँ नोकसान पहुँचबैत अछि।



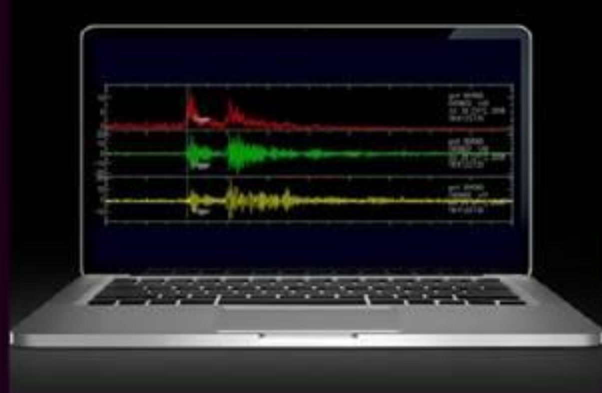












विभिन्न प्रकारक पुरान आ नऽव भूकम्पमितिक यण्त्र

— अपना मिथिलामे एहेन कोनहु केन्द्र अछि की ? - बच्चाक प्रश्नवाचक स्वर छल।

— अछि तँ अवश्ये पर सुनबामे आयल अछि जे पछिला दसो बरखसँ ओकर गतिविधि मन्द पड़ल अछि। पछबारी चम्पारण जिलाक **"वाल्मीकिनगर"** नामक स्थान पर भारतीय मौसम विज्ञान विभागक ई **भूकम्प वेधशाला (सेइस्मओलओगइचअल ओबसएरवअतओरय)** अवस्थित अछि। एकर स्थापना सन १९६० ई०मे भेल छल आ २००५ ई०मे एकर भूकम्पलेखी यन्त्र खराब भऽ गेल से अद्यावधि ठीक नहि भेल अछि।



भूकम्प वेधशाला" वाल्मीकि नगर पच्छिम चम्पारण

— ओह! ई तँ बड़ दुःखक गप्प अछि - रतन निराशा भरल भावे बाजल।

— वाल्मीकिनगरमे - महर्षि वाल्मीकिक आश्रम छलन्हि ने - प्रीती पुछलक।

— हँ, ओतहि रहन्हि। ओना कानपुर लग एकटा स्थान अछि - उन्नाव। ओहि ठामक लोक सेहो एहि तरहक बाताक दावा करैत अछि। पर सीता कौशल राज्यसँ निर्वासनक बाद वाल्मीकि आश्रममे रहि आ कुशकेँ जन्म देने रहथि। आ चूँकि उन्नाव ओहि समय कौशल राज्यक अन्तर्गतहि अबैत छल जखनकि वाल्मीकिनगर कौशलसँ बाहर मिथिलाक भाग छल, तेँ एहि बातकेँ बल भेटैछ जे वाल्मीकिनगरमे हुनक आश्रम छल। उल्लेख्य ईहो अछि जे शत्रुघ्नजी लवणासुरक बध हेतु अयोध्यासँ मथुरा जाइत काल लव आ कुश केर नामकरण करौलन्हि। ई बात वाल्मीकिनगरक विपक्षमे जाइत अछि। पर ईहो बात विदित होअए जे शत्रुघ्नजी लवणासुरक बध करबाक हेतु अयोध्यासँ मथुरा सोझ रस्तासँ नहि गेल रहथि। सर्वथा विपरीत मार्गक अनुसरण कएने रहथि जाहिसँ लवणासुरकेँ कनेकबहु शंका नहि हो। हुनक रस्ता वीरपुर जंगल आ पहाड़सँ भऽ कऽ जाइत छल जे कि वाल्मीकिनगर केर पक्षमे जाइत अछि नहि कि उन्नाव केर। वाल्मीकिनगर रेलवे स्टेशनसँ (जे

કિ ભાગમે અછિ ક્ષીવ ૬ - ૭ કિમિ ઉત્તર ભરિ **વાઉમકિી આશ્રમ** (૯૫ન નેપાળક ચતિવન નાષ્ટ્રીય ઉદ્યાનમે પડૈછ) અછિ જે કિ દેખવા યોગ્ય સ્થાન અછિ। હમ પ્રતીતિ વાતકેં સ્વીકારવૈત કહલયિ।

— કોનહુ ભૂકમ્પ કતેક શક્તિશાળી છલ સે કોના બુઝૈત છયિ ? - સોની પુછલક।

— કોનહુ ભૂકમ્પક પરિમાણ અથવા ઓકર આકાર વતવૈત અછિ કિ ભૂકમ્પ કતેક શક્તિશાળી છલ। કોનહુ ભૂકમ્પક વાસ્તવિક શક્તિ વા ઓહિ ભૂકમ્પસઁ ઉત્પન્ન કુલ વાસ્તવિક ઊર્જા જાહિ યુક્તિસઁ નાપલ જાઇત અછિ તકરા ભૂકમ્પક **આકાર યા પરિમાણ નાપની(મઞઘામ્હ્યઉયૃ ષછ્અડ્ય)** કહલ જાઇત અછિ। ભૂકમ્પક પરિમાણ વા આકારક નિર્ધારણક હેતુ વહુત રાસ નાપની યા સ્કેલ વનાઓલ ગેલ અછિ, પર જે સર્વાધિક પ્રશસ્ત વા પ્રચલિત નાપની અછિ સે અછિ "**રિક્ટર નાપની**" યા "**રિક્ટર સ્કેલ (ઢ્રછ્હ્થ્યૃઢ ષછ્અડ્ય ઢ્રછ્હ્થ્યૃઢ મઞઘામ્હ્યઉયૃ ષછ્અડ્ય)**। અમેરિકી વૈજ્ઞાનિક ચાર્લ્સ રિક્ટર અપન સહયોગી ગુટેનવર્ગક સહાયતાસઁ સન્ ૧૯૩૪ ઈ૦મે એકરા વિકસિત કયલન્હિ। એહિ નાપની યા સ્કેલ પર ૦૧ સઁ ૧૨ ધરિ અંક હોઇત અછિ જે કિ ભૂકમ્પક આકારકેં વતવૈત અછિ।

— કતેક આકારક ભૂકમ્પ ખતરનાક હોઇત અછિ? - વવ્વનક સીધા પ્રશ્ન છલ।

— ૦૦ સઁ ૦૨ પરિમાણક ભૂકમ્પકેં માત્ર ભૂકમ્પલેખી દ્વારા બૂઝલ જા સકૈત અછિ, મનુષ્ય ઓકર કમ્પનક અનુભવ નહિ કિ પાવૈછ। ૦૨સઁ ૦૩ પરિમાણવલા ભૂકમ્પસઁ જમીનમે વહુત હલ્લુક કમ્પન હોઇત અછિ જે માત્ર કિછુ અતિસંવેદનશીલ લોકસભ દ્વારા અનુભવ કયલ જા સકૈત અછિ, જખન કિ વેશી તર લોક ઓકર અનુભૂતિસઁ વઞ્ચિતહિ રહૈત છથિ। ૦૩ સઁ ૦૪ ધરિ આકારવલા ભૂકમ્પસઁ કિછુ-કિછુ તહિના બુઝાઇત અછિ જેના કોનો ટ્રકકેં સોઝાઁસઁ ગેલા પર કમ્પન હોઇત અછિ। ૦૪ સઁ ૦૫ આકારક ભૂકમ્પક કમ્પનસઁ ખિડ઼કીક શીશા ચનકિ સકૈત અછિ યા દેવાલ પર ટાઁગલ ફોટોફ્રેમ આદિ ખસિ સકૈત અછિ। ૦૫ સઁ ૦૬ પરિમાણવલા ભૂકમ્પસઁ ઘરમે રાખલ ચૌકી - પલંગ - કુર્સી આદિ આન સમાનસભ હિલિ લગૈછ, ૦૬ સઁ ૦૭ આકારવલા ભૂકમ્પ ઘરક નીંવકેં દરકા સકૈત અછિ તથા વિશેષ કઽ વહુમંજિલા ભવનસભક ઉપરકા ઘરસભકેં વેશી નોકશાન કરૈછ। ૦૭ સઁ ૦૮ તક આકારવલા ભૂકમ્પ <u>વિનાશકારી</u> હોઇછ તથા એહિસઁ ભવન વા આન સ્થાપત્યસભ ઢહિ સકૈત અછિ આઓર જમીનક ભીતર પાઇપસભ ફાટિ સકૈત અછિ। ૦૮ સઁ ૦૯ પરિમાણવલા ભૂકમ્પ <u>અતિવિનાશકારી</u> હોઇત અછિ આ પૈઘ પૈઘ દૃઢ સ્થાપત્યસભકેં સેહો વેસ નોકશાન પહુઁચા સકૈછ, સંગહિ સામાન્યરૂપસઁ વનલ પ્રાયઃ સભ ભવનાદિકેં સામાન્યસઁ લઽ કઽ ગમ્ભીર ક્ષતિ પહુઁચાવૈત અછિ। રિક્ટર નાપની પર ૦૯ સઁ વેશી આકારક ભૂકમ્પ વસ્તુતઃ <u>પ્રલયંકારી</u> વા <u>અતિપ્રલયંકારીએ</u> (-અહિ) બુઝૂ; ભૂકમ્પક અધિકેન્દ્ર આ ઓકર આસ-પાસક પ્રાયઃ સમગ્ર વિનાશ ભઽ જાઇત અછિ। સામાન્ય ભાષામે રિક્ટર નાપની પર માત્ર એક અંકક કમી-વેશી ભેલાસઁ ભૂકમ્પક વિનાશકારી ક્ષમતામે ક્રમશઃ દસગુણાક હ્રાસ યા વૃદ્ધિ ભઽ જાઇત અછિ।

— પર ભૂકમ્પસઁ ક્ષતિ સભ ઠામ એક સન કિએક ને હોઇત અછિ? - સોનીક એહિ જિજ્ઞાસાક હમરા પહિનહિસઁ અપેક્ષા રહય।

— કોનહુ સ્થાન પર ભૂકમ્પ દ્વારા ભેલ વિનાશ ભૂકમ્પક આકારક અતિરિક્ત આન વહુત રાસ વાતસભ પર નિર્ભર કરૈછ, જેના કિ - ભૂકમ્પક અધિકેન્દ્રસઁ ઓહિ સ્થાનક દૂરી, ઓહિ સ્થાનક ધરાતલક આન્તરિક સતહક માટિ આ શૈલખણ્ડક સંરચના, સ્થાપત્ય આ નિર્માણક મજગૂતી, જનસંખ્યા ઘનત્વ આદિ। એહિ પ્રકારેં એકહિ પરિમાણ વા આકારવલા ભૂકમ્પક તીવ્રતા આ તકર કારણ હોમયવલા વિનાશકારી પ્રભાવ ભિન્ન-ભિન્ન સ્થાન પર અલગ-અલગ હોઇત અછિ, જકરા નપવાક હેતુ એકટા આન પ્રકારક નાપનીક પ્રયોગ હોઇત અછિ। એહિ નાપનીકેં **ભૂકમ્પક તીવ્રતા નાપની યા**

सिस्मिक इन्टेन्सिटी स्केल (Seismic Intensity Scale) कहल जाइत अछि। विभिन्न देशमे अलग-अलग तीव्रता मापनीक प्रयोग होइत अछि पर मान कमोवेश एकरंगाहे अछि आ प्रायः **रोमन अंक पद्धतिमे(I, II, III, IV......)** देखल जाइत अछि। वैसीतर तीव्रता-मापनीमे एक सँ बारह (I - XII) धरि श्रेणी होइत अछि। भारतमे भूकम्पक तीव्रता मपबाक लेल पहिने **मेद्वेदेव-स्पोनह्युअर-कार्निक मापनी (<u>Medvedev–Sponheuer–Karnik scale</u>; MSK-64)** प्रयुक्त होइत छल पर आइ-काल्हि **यूरोपीय वृहत्भूकम्पीय तीव्रता मापनी (European Macroseismic Scale EMS-98)** केर प्रयोग बढ़ि रहल अछि। सं० रा० अमेरिकामे **संशोधित मर्केली मापनी (Modified Mercalli Scale)** केर प्रयोग कएल जाइत अछि।

— अपना क्षेत्रमे १८३४ ई०मे सेहो एकटा बड़का भूकम्प आयल रहए ने ? - प्रीती जानए चाहलक।

— आ १८८८ ई०मे सेहो - प्रीतीक बात पूरा होइते रहै कि विद्वन बाजि उठल।

— हँ, १८८८क भूकम्प <u>विनाशकारी</u> छल जखनि कि १८३४क भूकम्प <u>अतिविनाशकारी</u>। २१ अगस्त १८८८ कऽ जे भूकम्प आयल छल तकर आकार रिक्टर मापनी पर ६.८ बताओल गेल छल (किछु वैज्ञानिक द्वारा ७.२) जखनि कि भूकम्पक केन्द्र नेपालक उदयपुर शहर लग धरातलसँ ६२ कि०मि० गँहीर छल। १५ जनवरी १८३४ केर भूकम्पक आकार रि०मा० पर ८.१ (किछु वैज्ञानिक द्वारा ८.४) कहल संगहि भूकम्पक केन्द्र नेपालक **सगरमाथा या माउण्ट एवेरेस्ट (Mount Everest)** पर्वत शिखरसँ ९५ कि०मी० दक्षिणमे धरतीक सतहसँ ३३कि०मी० गँहीर छल। एकर अतिरिक्त १८ सितम्बर २०११ कऽ सेहो एकटा भूकम्प आयल छल जकर आकार रि०मा० पर ६.८ छल आ केन्द्र भारतक सिक्किम राज्यमे कञ्चनजङ्गा रिजर्व क्षेत्रमे छल जे धरातलसँ १९.७ कि०मी० गँहीर अवस्थित छल। काल्हि (१८ दिसम्बर २०१४ई० कऽ) जे भूकम्प आयल छल तकर आकार रि०मा० पर ५.८ जनाओल गेल अछि तथा एकर मूल नेपालक प्रसिद्ध नामचे बजार सँ २६कि०मी० उत्तर पश्चिममे १० कि०मी० गँहीर छल। एहि भूकम्पसभक अधिकतम तीव्रता (विनाशक क्षमता) क्रमशः नओ, एगारह, सात ओ पाँच (IX, XI, VII आ V) छल।

— अरे, बाप रे ! .... एगारह तीव्रता रहै .... रतन अचम्भित स्वरेँ बाजल।

— हँ। ई एतेक विनाशकारी छल कि सम्पूर्ण मिथिलाकेँ तहस-नहस कऽ देलक। संगहि मिथिलाक चारू कातक परिक्षेत्रमे सेहो भारी तबाही कएलक। तिरहुत - भागलपुरक बीच रेलपुल टुटलासँ सीधा सम्पर्क टूटि गेल जे अद्यावधि बहाल नहि भऽ सकल अछि। दरभंगा-सहरसा रेल लाइन पूर्णतः टूटि गेल जे दोबारा आइ धरि नहि बनि सकल। राजनगरक नौलक्खा महल सहित भूपेन्द्र बसवासँ पहिनहि उजड़ि गेल। नेपालक धरहरा स्तम्भ केर सभसँ उपरुका तीन टा तल्ला टूटि गेल जकरा बादमे फेरसँ बनाओल गेल। पश्चिम चम्पारणमे बगहा-छितौनीक बीच रेल पुल टुटलासँ करीब ६० वर्ष धरि रेल सम्पर्क बाधित रहल। कोशी (कोसी) नदीक रस्तामे स्थायी परिवर्तन भऽ गेल - ओ पूबसँ आओर पश्चिम दिशि घुसकि गेल। मिथिलामे प्रायः एहेन कोनहु मकान नहि छल जे क्षतिग्रस्त नहि भेल होअए आ एहि क्षेत्रक प्रायः सब कच्चा मकान ढहि गेल। जान मालक अपार क्षति भेल। एहि भूकम्पक धक्का (झटका) एतेक जोड़गर छल जे उत्तरमे तिब्बतक ल्हासासँ दक्षिणमे बम्बई धरि आ पूबमे बर्मासँ (आब म्यांमार) लऽ कऽ पश्चिममे अमृतसर तक ओकर नीक जेकाँ अनुभव कएल गेल।


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

— વાવા ĝ૬ કહૈત નહથતિહ ળે ક૬ઉસમમે ઋપને-ઋાપ પાની પ્પિસએ ઊાગઊ છઊ - વવ્વન ટીકા કએઊક।

— એહિ મૂકમ્પક એકટા વશિષતા છઊ કિ વહુત વસ્તિૃત મૂભાગમે યનતીક મીતનસઁ **પાની ઋા વાઉક વમકઉઊ (ષઋામય & ઋૌઋથએઢ વણામથષ)** ઋૂટઊ છઊ। યનતીમે વહુતો ઠામ પૈઘ-પૈઘ **દડાની (ઢરષષઉઢએષ)** ઋાટિ ગેઊ નહએ। ઋોહિ સિમયક નિમિઊ મેઉવે સ્ટેશન **મૂ-દ્નાવામ્ મૂ-દ્નવીમવનક (ષઋોરડ ડરઽઉએઢઋછથરઋોામ)** કાનામ કનીવ ૩ મીટન (૧૦ ઋીટ) નીચાઁ ળમીનમે ધઁસિ ગેઊ ઋા તકના ઊપન વાઉ મની ગેઊ। વહુત નાસ ઈનાન ઋા પોપ્પનકિ પેનીમે વાઉ ળમા મ૬ ગેઊ, વાઉક કાનામ વહુત નાસ ઉપળાઉ પ્પેત વન્વાદ મ૬ ગેઊ। વહુતો યાપાક૬ઉસમ વાઉક કાનામ પ્પડાવ મ૬ ગેઊ ળપ્પનિ કિ ઋાન વહુતો ઈનાન ઋા યાપાક૬ઊ ળે પહનિસઁ સુપ્પાએઊ છઊ - પાનિસઁ મનિ ગેઊ। ઋયકિન્દ્નસઁ કનીવદ૫૦ સઁ ૭૦૦ કિમી૦ ધનકિ પનીધીમે મવનાદિ સ્થિાપત્યસમ ઢહ્વાક મેક્ૉન્ડ ઉપઉવ્ય ઋછિ। સનકાની ઋાઁકઉનક ઋનુસાન મેપાઉમે કુઊ ૧૦૮૦૦ સઁ ૧૨૦૦૦ ઊક ઋા વહિનમે ૭૨૫૩ ઊક માનઊ ગેઊહ, પન ઋાન સૂત્નસમક ઋનુસાન ઈ સંપ્પ્યા એહિસઁ વહુત વેશી છઊ। કોનહુ મૂકમ્પક પહિ શક્તિશાઊ કમ્પન વા **મુપ્પ્ય સંક્ષોમ (મઋરામ ષહઋોછપ્પ)** કેન વાદ્દુ કછુ દિનિમહિનિસાઊ મનિ તક મૂકમ્પક છોટ-મોટ હ્ટકા ઋાવૈત નહૈત ઋછિ, ળકના **પનાકમ્પન** યા **પશ્ચ સંક્ષોમ (ઋઢથએઢ ષહઋોછપ્પષ)** કહઊ ળાઈત ઋછિ। મેક્ૉન્ડ વતવૈત ઋછિ કિ ઉનૈસ સએ ચૌતીસક એહિ મૂકમ્પક નઋો મહીના વાદ તક (૧૯૩૪ ઈ૦ક ઋક્ટૂવન મહીના તક) મનુક્પ્યકેં ઋનુમવ કનવા ચોગ્ય પનાકમ્પન ઋવતિહિ નહઊ।............... ઋા મવિષ્યિમે ઈહોસઁ પૈઘ વિનાશકાની મૂકમ્પ ઋાવિ સિકૈત ઋછિ - હમ કહઊયૈ।

હમન ઈ વાત સુનિ સિમ ઋચાનક શાન્ત મ૬ ગેઊ। સમ ધપિાપુતા ચુપચાપ હમન વાતકેં ધ્યાનસઁ સુનિ નહઊ છઊ। પુનામ શાન્તિ છઊ। ળઁ એકટા સુઈયો ળમીન પન પ્પસૈત તઁ ઋોકન ઋવાળ સુનઊ ળા સકૈત છઊ - શુચિપિાત સ્તવ્યતા।

— કહિયા ? - સોનીક મન્દ સ્વન શાન્ત વાતાવનામક વીચ વહનાયઊ।

— સે કેઋો નમિ કહિ સિકૈત ઋછિ - મ૬ સકૈએ એપ્પને, ઋાઈએ, યાનિ દિનિ વાદ, યાનિ મહીનાક વાદ, યાનિ સાિઊ વાદ, યાનિ દશકક વાદ, યા સેન .... વાસ્તવમે એોક વૈળ્ઞાનિકિ પ્નગતિ વાદો મૂકમ્પક સમયક મવિષ્યવાની કનવ એપ્પન ધનિ સિમ્મવ નમિ મેઊ ઋછિ।

— ઋપના મથિઊમે એોક મૂકમ્પ કિએક ઋવૈત ઋછિ? - નત્તન હમનાસઁ ઉતાનાક ઋપેક્ષા નપ્પૈત વાળઊ।

— એકન કાનામ ઋછિ કિ મિાનતીય વિન્નિતન છળ્ળી ઋા યૂનેશીય વિન્નિતન છળ્ળીક ટકનાઋો કેન મ્નંશ મેપ્પા મથિઊક ક્ષેત્નસઁ ળૈત ઋછિ ળાહિ કાનામ ઈ મૂકમ્પ સમ્માવ્ય ક્ષેત્ન સં૦ ૫ કેન ઋન્તન્ગત ઋાવૈત ઋછિ।

— ઈ મૂકમ્પ સમ્માવ્ય ક્ષેત્ન સં૦ ૫ કી ઋછિ? - પ્નીતીક સોહ્ પ્નશ્ન છઊ।

— भारतक कोन क्षेत्रमे भूकम्प अएबाक कतेक सम्भावना अछि ताहि आधार पर समस्त भारतकेँ पाँच गोट क्षेत्रमे बाँटल गेल छल जकरा **"भूकम्प क्षेत्र"** या **"भूकम्प सम्भाव्य क्षेत्र"** कहल जाइत अछि आ एकसँ लऽ कऽ पाँच धरिक संख्यासँ निर्देशित कएल जाइत अछि। भू०सं०क्षे०सं०-१ केँ भूकम्पक संभावनासँ रहित क्षेत्र मानल गेल, भू०सं०क्षे०सं०-२ केँ अत्यल्प (न्यूनतम) सम्भावनाबला क्षेत्र आ भू०सं०क्षे०सं०-५ केँ सभसँ बेशी (महत्तम) सम्भावनाबला क्षेत्र मानल गेल। बादमे बुझना गेल जे भारतीय प्रायद्वीप पर कोनहु क्षेत्रविशेषकेँ भूकम्परहित क्षेत्र मानब गलत अछि। वस्तुतः जखन भारतीय विवर्तन छड़ी आगाँ घुसकैत अछि तँ छड़ीक माँझ कतहु भ्रंश केर निर्माण भऽ सकैत अछि आ से बादमे भूकम्पक स्वतन्त्र कारण बनि सकैत अछि। एहि प्रकारक भूकम्पकेँ **अन्तः-छड़ी अन्तर्छड़ी भूकम्प** कहल जाइत अछि। सन २००१ ई०मे गुजरातमे आयल भूकम्प एहने भूकम्पक उदाहरण छल। तेँ भू०सं०क्षे०सं०-१ केँ समाप्त कऽ देल गेल आ सम्पूर्ण भारतकेँ भू०सं०क्षे०सं०-२, ३, ४ आ ५ मे बाँटि देल गेल जे आइ धरि मान्य अछि। अपन मिथिलाक केन्द्रीय भाग भू०सं०क्षे०सं०-५ मे आबैत अछि जखनि कि परिधीय मिथिला भू०सं०क्षे०सं०-४ मे आबैत अछि।

— तखन तँ मिथिलासँ पलायने उचित - बबन बाजल।

— नहि, हमरा जनैत कथमपि नहि। पलायन कएनिहार व्यक्ति कतहु सुरक्षित नहि होइत अछि। हमरालोकनिकेँ एहि ठाम रहि विकासक रास्ता तकबाक चाही। जँ पलायने रास्ता रहैत तँ जपानक लोकसभ कहिया ने पलायन कऽ गेल रहैत आ जपान विरान भऽ गेल रहैत। ओहुना हर जगह पर भूकम्प नहि तँ कोनहु आनहि प्राकृतिक आपदासभ अवश्य रहैत अछि, सृष्टिमे जीवन-यापन कतहु आसान नहि अछि। देशक राजधानी दिल्ली सेहो भू०सं०क्षे०सं०-४मे आबैत अछि।

— एहिठामे की करबाक चाही - प्रीतीक प्रश्न कानमे पड़ल पर ई प्रश्न सभ धियापुताक मोनमे घुमि रहल छलै।

— एहिठामे धैर्य आ विवेकसँ काज लेबाक चाही। समकालीन वैज्ञानिक ज्ञानक यथासम्भव उपयोग करबाक चाही।

— ओहिमे तँ बेशी खर्च लागत हेतैक ? - सोनी पुछलक।

— जरूरी नहि छै कि हमेशा खर्च बेशीए लागए। १९३४ ई०क भूकम्पमे राजनगरक **नौलक्खा महल**, दरभंगामे **छत्र निवास महल (पैलेस)** आदिकेँ ध्वस्त भेलाक बाद दरभंगामे **नरगौना महल (पैलेस)** केर निर्माण भेल जे तत्कालीन वैज्ञानिक ज्ञानक आधार पर बनाओल गेल। आ एहि समस्त क्षेत्रक पहिल भूकम्परोधी भवन छल। ई महल बाहरसँ बहुत साधारण लागैत अछि, कोनहु तरहक अनावश्यक अलंकरणसँ रहित अछि पर ओहि समयक भूकम्परोधी स्थापत्य अभियान्त्रिकि ज्ञानक पूर्ण प्रयोग कएल गेल अछि। तेँ ओ मजगूत देल गेल अछि, भवनक देवालक उपर देवाल अछि, देवालक या खम्भाकेँ नीचाँसँ उपर धरि एक सीधमे राखल गेल अछि, कतहु कोनहु बाह्यधरनि बाहुधरनि (Cantilever) नहि देल गेल अछि, कोनो तरहक तोरण् थाप् मेहराब (Arch) नहि देल गेल अछि। एकर निर्माणमे ईंटाक प्रयोग नहि कएल गेल अछि अपितु सम्पूर्ण महल केर देवाल आ खाम्ह मात्र कंक्रीटसँ बनल अछि।



मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

મૈથિલી સાહિત્ય આન્દોલન

(ચ) ૨૦૦૪-૧૫ સત્વાર્ચાધિકાર ઉપ્પકાચીન આ ભાડ ઉપ્પકક નામ નૈ અછિ તાડ સંપાદકાચીન। વૃદિહ- પ્રથમ મૈથિલી પાક્ષિક ઈ-પત્રિકા ISSN ૨૨૨૯- ૫૪૭X VIDEHA સમ્પાદક: ગજેન્દ્ર ઠાકુર। સહ-સમ્પાદક: ઉમેશ મંડલ। સહાયક સમ્પાદક: રામ વિલાસ સાહુ, નન્દ વિલાસ રાય, સન્દીપ કુમાર સાફી આ મુન્નાજી (મનોજ કુમાર કર્ણ)। કલા-સમ્પાદન: જ્યોતિ ઝા ચૌધરી। સમ્પાદક- નાટક-રંગમંચ-ચલચિત્ર- બેચન ઠાકુર। સમ્પાદક- સૂચના-સમ્પર્ક-સમાદ- પૂનમ મંડલ। સમ્પાદક- અનુવાદ વિભાગ- વિનીત ઉત્પલ।

રચનાકાર અપન મૌલિક આ અપ્રકાશિત રચના (જકર મૌલિકતાક સંપૂર્ણ ઉત્તરદાયિત્વ લેખક ગણક મધ્ય છન્હિ) ggajendra@videha.com કેં મેલ અટૈચમેણ્ટક રૂપમેં .doc, .docx, .rtf વા .txt ફોર્મેટમે પઠા સકૈ છથિ। રચનાક સંગ રચનાકાર અપન સંક્ષિપ્ત પરિચય આ અપન સ્કૈન કએલ ગેલ ફોટો પઠેતા, સે આશા કરૈ છી। રચનાક અંતમે ટાઇપ રહય, જે ઈ રચના મૌલિક અછિ, આ પહિલ પ્રકાશનક હેતુ વિદેહ (પાક્ષિક) ઈ પત્રિકાકેં દેલ જા રહલ અછિ। મેલ પ્રાપ્ત હેબાક બાદ યથાસંભવ શીઘ્ર (સાત દિનક ભીતર) એકર પ્રકાશનક અંકક સૂચના દેલ જાયત। એહિ ઈ પત્રિકાકેં શ્રીમતિ લક્ષ્મી ઠાકુર દ્વારા માસક ૦૧ આ ૧૫ તિથિકેં ઈ પ્રકાશિત કએલ જાઇત અછિ।

(ચ) ૨૦૦૪-૧૫ સત્વાર્ચાધિકાર સુરક્ષિત। વિદેહમે પ્રકાશિત સભટા રચના આ આર્કાઇવક સત્વાર્ચાધિકાર રચનાકાર આ સંગ્રહકર્ત્તાક લગમે છન્હિ। રચનાક અનુવાદ આ પુન: પ્રકાશન કિંવા આર્કાઇવક ઉપયોગક અધિકાર કિનબાક હેતુ ggajendra@videha.com પર સંપર્ક કરૂ। એહિ સાઇટકેં પ્રીતિ ઝા ઠાકુર, મધૂલિકા ચૌધરી આ રશ્મિ પ્રિયા દ્વારા ડિઝાઇન કએલ ગેલ। ૫ જુલાઇ ૨૦૦૪ કેં **http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html** "ભાલસરિક ગાછ"- મૈથિલી જાલવૃત્તસઁ પ્રારમ્ભ ઇંટરનેટપર મૈથિલીક પ્રથમ ઉપસ્થિતિક યાત્રા વિદેહ- પ્રથમ મૈથિલી પાક્ષિક ઈ પત્રિકા ધરિ પહુઁચલ અછિ, જે **http://www.videha.co.in/** પર ઈ પ્રકાશિત હોઇત અછિ। આબ "ભાલસરિક ગાછ" જાલવૃત્ત 'વિદેહ' ઈ-પત્રિકાક પ્રવક્તાક સંગ મૈથિલી ભાષાક જાલવૃત્તક એગ્રીગેટરક રૂપમે પ્રયુક્ત ભઙ રહલ અછિ। વિદેહ ઈ-પત્રિકા **ISSN 2229-547X VIDEHA**

સિદ્ધિરસ્તુ